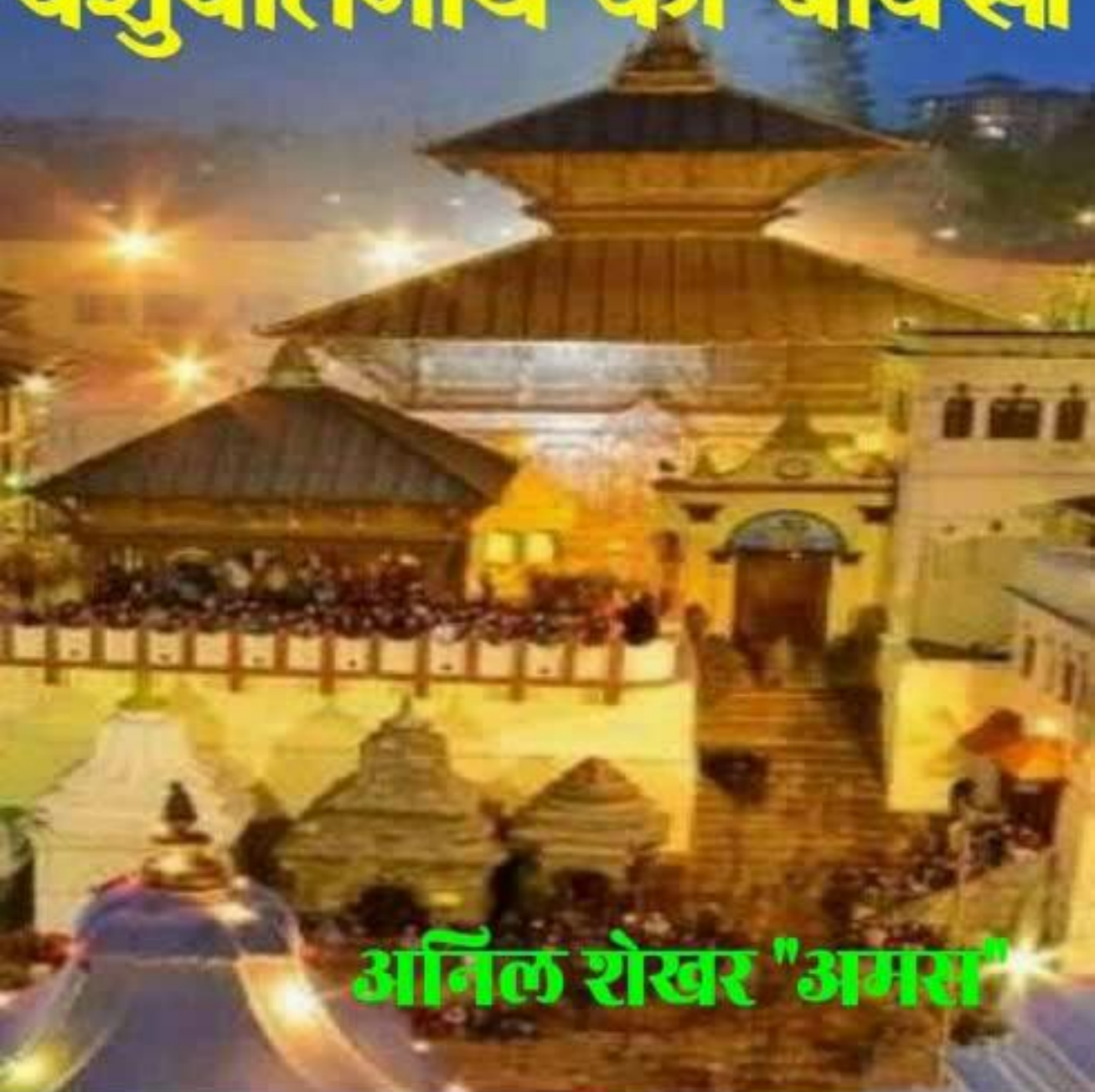


अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी



अनिल शेखर "अमरा"

पूर्वपीठिका

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी

मेरी इस कथा का नायक , मैं , यानि

“अघोराणंद”, एक गृहस्थ है । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नामक शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोराणंद नाम

दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी जा सकती ! और कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है । बहुत सारी बातें ऐसी हैं.... जो बेहद रोमांचक हैं ! जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा । ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से ! भगवती महानील सरस्वती की कृपा से ! शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है ,
इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण
करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और
वास्तविकता में बहुत फर्क होता है

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है
इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में
ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है
।

अंत में

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक
रचना है

उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

भूमिका

भगवान शिव मेरे आराध्य हैं , और उनके विषय में लिखना मेरा सबसे प्रिय विषय । इसलिए एक बार फिर इस काल्पनिक कथा में आपको लिए चलता हूं नेपाल में स्थित जगद्गुरु भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग भगवान पशुपतिनाथ के प्रांगण की ओर

जैसा कि मैं अपने हर कथा के प्रारंभ में स्पष्ट कर देता हूं कि मेरे द्वारा लिखी हुई कथा पूर्णतः काल्पनिक है इसे वास्तविक समझ कर किसी असाध्य क्रिया या प्रयोग में ना लगे । कथानक में दिए गए मंत्र विभिन्न प्रकार के ग्रंथों से लिए गए हैं । इसलिए हो सकता है कि वह आपके द्वारा पढ़े गए ग्रंथ में दिए गए मंत्रों से अलग हो । ऐसी स्थिति में उसे आप लेखक की कल्पना मानकर अनदेखा कर दें और कथानक का आनंद लें

भारत में ही नहीं कई देशों में पूजा और अनुष्ठान के दौरान नरबलि की प्रथा मौजूद रही है । इसका स्वरूप अलग अलग रहा है । लेकिन यह किसी न किसी रूप में मौजूद रही है । ऐसा विभिन्न ऐतिहासिक विवरणों और चित्रण से पता चलता है ।

मेरे द्वारा रची गई अघोराणंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी एक काल्पनिक कथा है, जो किसी भी वास्तविक घटना या स्थान को आधारित करके नहीं लिखी गई है। इसमें दिए गए सारे विवरण काल्पनिक है।

यह कथा किसी भी प्रकार से नरबलि या इसी प्रकार के किसी भी हिंसक कृत्य का समर्थन नहीं करती है।

इसलिए आपसे निवेदन है कि इसे केवल एक काल्पनिक रोमांचक कथा के रूप में पढ़ें और इसका आनंद लें।

इस कथा में दर्शाई गई किसी भी क्रिया को वास्तविक मान कर उसके अनुसार किसी भी गतिविधि को संपन्न ना करें और ना ही किसी भी गैरकानूनी कृत्य को अंजाम दें क्योंकि यह आपके लिए बेहद घातक हो सकता है।

सस्नेह

अनिल शेखर “अमस”

अघोराणंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी

उस दिन अमावस्या थी ।

अमावस्या की रात

साधनाओं के लिए एक सिद्ध पर्व माना जाता है ।

मैं अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करता था कि
अघोर दीक्षा ले लेने के बाद अमावस्या को किसी न
किसी प्रकार से कोई न कोई मंत्र का जाप अवश्य करू
।

इसके साथ साथ शिवनाथ नदी के तट पर रहने वाले
मेरे गुरु भाई डोम बाबा से मिलना भी उस दिन के प्रमुख
कार्यों से एक हुआ करता था । शमशान के निर्धारित
अलिखित नियमों के अनुसार सूर्यास्त के बाद आमतौर
पर दाह संस्कार नहीं होता है । इसलिए लगभग 7 बजे
तक डोम बाबा अपने दाह संस्कार वाले कार्यक्रम से
निपट जाते थे और फ्री हो जाते थे । मैं उसी समय उनसे
मिलने के लिए जाया करता था ।

उस रात मैं लगभग 7:15 बजे श्मशान घाट पहुंचा ।
शिवनाथ नदी के ऊपर एक एनीकेट बना हुआ है ।
जिसके ऊपर से नदी के उस पार के गांव के लोग आना-
जाना किया करते थे । अब तो लगभग 15 फीट चौड़ा
कंक्रीट का पुल बन गया है जहां से बड़ी गाड़ियां भी
आना-जाना कर सकती है । उस समय एनीकेट की
दीवाल ही पुल के जैसे काम करती थी । लोग पैदल
और साइकल के साथ साथ मोटरसाइकिल से भी उसके
ऊपर से कलाबाजी दिखाते हुए आना-जाना करते थे ।

श्मशान घाट के किनारे एक बुजुर्ग महिला अपनी दुकान
लगाया करती थी । जो लगभग 70 वर्ष की होगी ।
जिन स्थानों पर दुकान का अभाव होता है वहां पर जो
दुकान लगती है, उस दुकान में कई प्रकार की चीजें
उपलब्ध होती हैं । कहने को वह दुकान एक पान ठेले
जैसी थी, लेकिन उसके साथ में चाय की दुकान, समोसे
की दुकान और जरूरत पड़ने पर भोजन की व्यवस्था
भी उपलब्ध थी । बीड़ी सिगरेट आलू चिप्स आदि तो
स्वाभाविक रूप से उपलब्ध थे ।

मेरा बार बार आना जाना होता रहता था । इसलिए वह अम्मा भी मुझे पहचानने लगी थी । उस दिन उसी दुकान पर लगभग 30-35 वर्ष की एक ग्रामीण महिला बैठी हुई थी । जिसने सुर्ख लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी । उसके साथ एक झोला भी था । जो काफी विचित्र सा था । ऐसा लगता था जैसे किसी चीज के चमड़े से बना हुआ हो ।

इससे पहले मैंने उसे कभी नहीं देखा था ...

उसकी उपस्थिति मुझे थोड़ी सी रहस्यमय लगी....

फिर मैंने सोचा संभवतः अम्मा की कोई रिश्तेदार होगी ...

बाबा उसी दुकान पर बैठे हुए थे । बाबा की आंखें मुझे देख कर एक अलग ही प्रसन्नता से भर उठी । उनकी दुकान से मैंने सिगरेट का पैकेट लिया और बाबा की तरफ आगे बढ़ाया । उन्होंने तीन सिगरेट निकाल ली ।

आमतौर पर ऐसा तब हुआ करता था जब उनके ऊपर भैरव बाबा की सवारी होती थी ।

सुनने में भले ही यह बात भी विचित्र लगे ! लेकिन कई देवता इस प्रकार से अपने भक्तों के शरीर के माध्यम से भोजन या कोई और चीज ग्रहण करते हैं !

इसे मैंने साक्षात् देखा है

मेरे एक मित्र वीरेंद्र गुप्ता जी है...

वह हनुमान जी के अनन्य भक्त हैं ।

बेहद ही सज्जन !

सहज !

सरल और सौम्य स्वभाव के स्वामी हैं ।

उनकी पत्नी भी बेहद सरल और धर्म परायण महिला

है । दोनों के बीच में बेहद अच्छा तालमेल भी है ।

दोनों शुद्ध सात्विक शाकाहारी जीव हैं । गुप्ता जी का

भोजन बेहद नियंत्रित होता है । तीन या चार रोटी थोड़ा

सा चावल उनके लिए पर्याप्त होता है । उन्हें इस प्रकार

का भोजन करते हुए मैंने कई बार देखा है ।

एक बार हम दोनों साथ में बैठकर भोजन कर रहे थे और

मैंने देखा कि चार रोटी के बाद फिर उन्होंने रोटी की मांग

की....

सामान्यतः जो आदमी चार रोटी खाता है वह अगर अतिरिक्त रोटी की मांग करे तो कोई भी पत्नी एक या ज्यादा ज्यादा दो रोटी देगी

लेकिन....

मैंने देखा गुप्ता जी की पत्नी ने चार रोटियां बना कर उन्हें प्रस्तुत कर दी ...

गुप्ता जी चार के बाद वह चार रोटी भी खा गए

उनके चार रोटी खाते तक उनकी पत्नी ने चार और रोटियां बना कर रखी थी !

इस प्रकार से उन्होंने लगभग चार बार और रोटियां ली होंगी.....

यानी कुल जमा 20 रोटियां वह खाकर उठे

यह मेरी समझ में नहीं आया

लेकिन जिस प्रकार से भाभी चार चार रोटियां लाकर रख रही थी.....

उससे मुझे लगा कि उनको इस बारे में जानकारी होगी । मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उनके ऊपर हनुमान जी की सवारी आती है ...

तो वह इसी प्रकार 15-20 रोटियां खा जाते हैं ...
सुनकर मैं आश्चर्यचकित था !
लेकिन प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है ?
उन्हे 20 रोटि खाते हुए तो मैंने स्वयं देखा था...
अस्तु ...

डोम बाबा के साथ भी कुछ-कुछ वैसा ही था ।
जब उनके ऊपर भैरवनाथ की सवारी आती थी तो
उनकी आंखें उस समय सुर्ख लाल हो जाया करती ।
इतने दिनों से साथ रहने के कारण मैं थोड़ा बहुत समझने
लगा था ।
उन्होंने एक माचिस उठाया !
सिगरेट मे आग लगाई और एक कश मे उसे समाप्त कर
दिया और तेजी से आगे की ओर चल पड़े । मैं उनके
पीछे पीछे भागा ।

आज वह शमशान की ओर जाने की बजाय नदी के
किनारे बनी हुई पगडंडी पर आगे की तरफ जाने लगे ।
यह थोड़ा असामान्य था ...

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे आम तौर पर अंतिम संस्कार की श्मशान में दो प्रकार की क्रिया होती है ।

अंतिम संस्कार का एक स्वरूप वह है जिसमें लकड़ियों पर रखकर शव का दाह संस्कार किया जाता है । दूसरी क्रिया में शव को भूमि में दफना दिया जाता है ।

भूमि में शव को दफनाने के लिए अलग-अलग प्रकार के नियमों का पालन किया जाता है । जो जाति या समाज के अनुसार अलग-अलग होते हैं । उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ में साहू समाज सबसे ज्यादा प्रभावशाली समाज है । इसी समाज में दो प्रकार के अनुयाई या पंथ होते हैं । पहला होता है शाक्त जिसमें देवी देवताओं की उपासना की जाती है या शक्ति उपासना की जाती है । दूसरा कबीर पंथ होता है जिसमें कबीर दास जी के द्वारा सिखाये गए ज्ञान के मार्ग को महत्ता दी जाती है । शाक्त पंथ के लोग शव का दाह संस्कार करते हैं । कबीर पंथ के लोग शव को दफनाते हैं । लगभग हर समाज में इस प्रकार की अलग-अलग व्यवस्था अंतिम संस्कार की होती है और उसके अनुसार जलाने या दफनाने की विधि अपनाई जाती है ।

हर श्मशान में जहां जलाने की व्यवस्था होती है, वहां पर थोड़ा हटकर शव को दफनाने के लिए भी जगह बनी होती है ।

हाँ ! अगर नदी तट पर श्मशान बना हो तो एक क्रिया और शामिल हो जाती है, जल प्रवाह । कुछ जगहों पर शव को नदी में प्रवाह देने की भी प्रथा है । उस में मृत शरीर को पूजन आदि के बाद नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है । अस्तु...

मेरे शहर दुर्ग मे शिवनाथ नदी के तट के मुक्ति धाम मे जलाने वाली जगह से थोड़ा सा आगे बढ़ने पर शवों को दफनाने की जगह भी मौजूद है ।

डोम बाबा उसी तरफ तेजी से बढ़ रहे थे ।

मैं भी उनके पीछे-पीछे बढ़ा ।

लगभग आधा किलोमीटर चलने के बाद डोम बाबा रुके

मैं भी तब तक दौड़ता भागता उनके पास तक पहुंच चुका था ।

डोम बाबा ने कहा - बेटा ! आज तुझे एक विशेष साधना करनी है । उसके बाद इस साधना का अगला चरण तुझे पशुपतिनाथ के धाम में संपन्न करना है ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

मैं जानता था कि बाबा जो बोल रहे हैं वह भले ही अस्वाभाविक लगे लेकिन वह घटित होने वाला रहता है ।

ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मेरे दिमाग में उस समय तक नेपाल या पशुपतिनाथ जाने जैसा कोई विचार नहीं आया था ।

दुर्ग से नेपाल काफी दूर है ।

समझ लीजिए कम से कम हजार डेढ़ हजार किलोमीटर की यात्रा ऐसी किसी यात्रा के बारे में मैंने सोचा नहीं था ।

लेकिन !

मानव के सोचने की एक सीमा है....

घटनाओं के घटित होने की एक अलग ही सीमा है....

तो कुछ दिन बाद मुझे नेपाल जाना पड़ा उसका वर्णन आगे करूंगा ।

बाबा जी ने मुझे श्मशान भैरवी की साधना करने के लिए कहा । यह एक वाममार्गी साधना है । जिसमें श्मशान की अधिष्ठात्री भगवती महाकाली की प्रमुख शक्ति श्मशान भैरवी की साधना संपन्न की जाती है । जैसे कि आप लोगों को पता है कि इससे पहले मैं श्मशान भैरव की साधना संपन्न कर चुका था लेकिन उस दौरान श्मशान भैरवी की साधना संपन्न नहीं हुई थी ... तंत्र साधना में कई साधनाएं युगल रूप में संपन्न होती है ।

अर्थात् जिस देवता से संबंधित साधना हो उसकी भैरवी या शक्ति की साधना भी संपन्न की जाती है ।

यदि किसी देवी की साधना हो तो उससे संबंधित भैरव की साधना भी संपन्न करने से ही वह साधना पूर्ण होती है ।

श्मशान भैरव की साधना हो चुकी थी । तो यह अपरिहार्य था कि मुझे श्मशान भैरवी की साधना संपन्न करनी ही थी ! तभी साधना को पूर्ण माना जाता ।

श्मशान भैरव साधना के बाद कालांतर में विभिन्न प्रकार के साधनाओं के मार्ग से गुजरता हुआ मैं आगे बढ़ता रहा

मैंने सोचा ! संभव है.....

अभी उसके लिए समय आया होगा

शमशान को भैरव और भैरवियों का आवास माना जाता है । बावन प्रकार के भैरव माने गए हैं । इनमें से सामान्यतः अधिकांश भैरव की साधना लुप्त और गोपनीय है । जो गुरु गम्य है । शमशान की साधना में शमशान भैरव और श्मशान भैरवी का सहयोग मिलने से साधनात्मक रूप से बड़ी तेजी से साधक आगे बढ़ता है ।

साधनाओं का मार्ग बड़ा विचित्र है । एक साधक के अनुभव और उसकी साधना पद्धति अलग-अलग किस्म की हो सकती है । इसलिए एक साधक के अनुभव के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि हमेशा हर साधक को वैसे ही अनुभव होंगे हर साधक के अनुभव अलग अलग प्रकार के हो सकते हैं ।

डोम बाबा ने मुझे पूरी विधियां समझाई ।

उसके बाद श्मशान के एक एकांत हिस्से में वह मुझे ले गए ।

वहां पर एक दीपक जल रहा था....

गोबर से पोता हुआ चौबारा भी था ।

ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी ने उसे ताजा ताजा पोतकर तैयार किया हो । बाबा के चमत्कारों को देखने के बाद अब इस प्रकार की घटनाओं को देखने से ज्यादा आश्चर्य नहीं होता था ।

वह चौका तकरीबन 4 फुट बाय 4 फुट का रहा होगा । उसके अंदर विचित्र प्रकार की आकृति वाला एक यंत्र बना हुआ था । यह आकृति तिब्बती तांत्रिक पेंटिंग में बनी हुई आकृतियों जैसी लगती थी । जिसमें त्रिकोण आकार वाली आकृतियां थी, जैसे कि हर यंत्र में होती है, लेकिन उसके साथ साथ गहरे नीले और काले रंग की रंगोली से अलग-अलग आकृतियों के सर्प भी बने हुए थे

उन सर्पों के मुंह खुले हुए थे

उसमें से उनकी जीभ बाहर की तरफ लपलपाती हुई प्रतीत होती थी

एक चौमुखा दीपक एक कोने में लगा हुआ था

वह विचित्र यंत्र उस चौकी के बिलकुल बीच में बना हुआ था

उन्होंने मुझे उस यंत्र के बीच में बैठने के लिए कहा ।
मुझे विधि और मंत्र बताने के बाद उन्होंने अपने डंडे से उस चौकी के चारों तरफ घेरा बनाया ।
अपने डंडे को उस गोल घेरे के बाहर जमीन पर गाड़ दिया । उसका लगभग 6 इंच जमीन में धंस गया होगा

इन कथाओं के माध्यम से आप भी समझ गए होंगे कि किसी भी साधना को करने से पहले अपने चारों तरफ एक सुरक्षा घेरा बनाया जाता है । जो कि विभिन्न प्रकार की बाधाओं और नकारात्मक शक्तियों से साधक की सुरक्षा करता है ।

इसके लिए जिस मंत्र का प्रयोग किया जाता है उस मंत्र के प्रतिदिन जाप से घर में भी किसी भी प्रकार की तांत्रिक बाधा या प्रयोगों से सुरक्षा होती रहती है । इसके लिए जिस मंत्र का प्रयोग किया था वह निम्नलिखित था...

अघोर रक्षा मंत्र

ॐ नमः शिवाय । महादेवाय । नीलकंठाय । आदि
रुद्राय । अघोरमंत्राय । अघोर रुद्राय । अघोर भद्राय ।
सर्वभयहराय । मम । सर्वकार्यफल प्रदाय । हन हनाय
। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ । टं टं टं टं टं । घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं ।
हर हराय । सर्व अघोररूपाय । त्र्यम्बकाय । विरूपाक्षाय
। ॐ हौं हः हीं हः । ग्रं ग्रं ग्रं । हां हीं हूं हैं हौं हः । क्षां
क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः । ॐ नमः शिवाय । अघोर प्रलय
प्रचंड रुद्राय । अपरिमित वीर विक्रमाय । अघोर रुद्र
मंत्राय । सर्वग्रह उच्चाटनाय । सर्वजन वशीकरणाय ।
सर्वतोमुख । मां रक्ष रक्ष । शीघ्रं हूं फट् स्वाहा ।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः । ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः ।
स्वर्गमृत्यु पाताल त्रिभुवन संच्चरित देव ग्रहाणां । दानव
ग्रहाणां । ब्रह्मराक्षस ग्रहाणां । सर्व वात ग्रहाणां । सर्व
वेताल ग्रहाणां । शाकिनी ग्रहाणां । डाकिनी ग्रहाणां ।
सर्व भूत ग्रहाणां । कामिनी ग्रहाणां । सर्व पिंड ग्रहाणां
। सर्व दोष ग्रहाणां । सर्व अपस्मार ग्रहाणां । हन हन
हन । भक्षय भक्षय भक्षय । विरूपाक्षाय । दह दह दह ।
हूं फट् स्वाहा ॥

मैं डोम बाबा के द्वारा बनाए गए उस सुरक्षा घेरे के अंदर बैठकर जाप करने लगा । उस वक्त रात के लगभग 8 बजे का समय रहा होगा । जब मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया । मेरे माला में 108 मनके थे और मुझे बाबा के द्वारा मिले हुए मंत्र की 108 माला जपनी थी

लगभग 10:30 बजे के आसपास मेरा मंत्र जाप पूर्ण हो गया

शमशान में रात के 10:30 बजे सन्नाटा छाया रहता है

सिर्फ नदी के पानी के बहने की आवाज आती है
बाकी हर जगह शांति छाई रहती है ...

जाप पूर्ण होने के बाद मैं अपने आसन पर बैठा था । साधना का एक सूत्र यह भी है कि मंत्र जाप करने के बाद तुरंत अपने आसन से नहीं उठना चाहिए । मंत्र जाप से जो शक्तियां आपने जागृत की है । वह आप के आसन के इर्द-गिर्द एक आभामंडल के जैसे बन जाती है आमतौर पर साधक मंत्र जाप को ड्यूटी की तरह करते हैं । जैसे ही जितने माला का भी संकल्प लिया हो वह पूर्ण होता है तुरंत वहां से भाग खड़े होते हैं ।

अगर आप मंत्र जाप के बाद आसन पर कुछ देर बैठे रहे ...

तो वह सारी शक्तियां आपके शरीर में समाहित हो जाती है ...

मैं थोड़ी देर तक उसी आसन पर आंख बंद करके बैठा रहा.....

तभी !

किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा !

मैंने हड़बड़ा कर आंखें खोली

देखा

सामने डोम बाबा खड़े हैं ...

उनके साथ में खड़ी थी

वही रहस्यमय महिला !

जो चाय की दुकान पर मिली थी.....

बाबा ने उस महिला से मेरा परिचय कराया । उस महिला का नाम था माधुरी । जैसा कि मैंने आपको बताया था वह लगभग 30-35 वर्ष की महिला थी...

बाबा ने बताया की वह शिवनाथ नदी के तट पर मछली मारने वाले ढीमर जाति के मुरारी की लड़की थी । जो बाबा से बचपन से विभिन्न प्रकार की तंत्र साधनाएं सीख रही थी । और आज बेहद उच्च स्तर की तंत्र साधिका थी ।

उन्होंने कहा - शमशान भैरवी साधना तुम्हें इन्हीं के मार्गदर्शन में संपन्न करनी है।

मैंने आगे बढ़ कर उनके चरण स्पर्श किए ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में साधनात्मक ज्ञान की अधिकता वाले व्यक्ति को सम्माननीय माना जाता है । इसमें उसकी जाति, आयु, उसके लिंग अर्थात स्त्री या पुरुष होने को महत्त्व नहीं दिया जाता ।

सनातन धर्म अपने आप में एक विराट इतिहास समेटे हुए हैं । हिंदू धर्म के रूप में जिसे हम आज देख रहे हैं वह उस सनातन धर्म का एक छोटा हिस्सा भर है ।

सनातन धर्म में किसी भी जाति या संप्रदाय के व्यक्ति को किसी भी प्रकार की साधना पद्धति का अनुसरण

करने और अपने ज्ञान को बढ़ाने का पूरा अवसर प्राप्त था ।

जाति भेद तथा जन्म से श्रेष्ठता जैसे विकार बाद में आए । जिसकी वजह से सनातन धर्म में बहुत ज्यादा विकृति और साथ ही न्यूनता भी आई । संभवतः यही कारण रहा होगा कि हम कई वर्षों तक पराधीन या गुलाम के जैसे जीवन व्यतीत करते रहे ...

यदि आप हिंदू धर्म के दो प्रमुख ग्रंथों को देखें तो उसमें से पहला ग्रंथ है रामायण !

जिसमें भगवान राम की कथा का उल्लेख है ! उन्हें त्रेता युग का भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है ।
उन्हीं के समकालीन है महर्षि वाल्मीकि

महर्षि वाल्मीकि पहले जंगल में डाकू थे । लोगों से माल भत्ता लूटना और डकैती करना यह उनका पेशा था । संभवतः उन्हें आज के हिसाब से आदिवासी कहा जा सकता है ।

उनके संबंध में कथा है कि एक बार उन्होंने देवर्षि नारद को भी लूट पाट के लिए इसी प्रकार से बंदी बना लिया

था । बाद में उनकी विद्वत्ता और ज्ञान से प्रभावित होकर भगवद भक्ति की ओर उनका रुझान बढ़ा । उन्होंने उनको गुरु रूप में स्वीकार किया और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग पूछा.....

दिव्यकृत की बात यह थी की वे पढ़े-लिखे नहीं थे । तो ... जब उनको देवर्षि ने राम-राम जपने के लिए कहा तो वह मरा मरा जपने लगे ! ऐसा कहा जाता है ... इसे आप दूसरे शब्दों में समझें तो उन्हें पूर्ण शुद्ध मंत्र जाप का या विधि-विधान का ज्ञान नहीं था ... उसके बावजूद !

देवर्षि नारद जो स्वयं ब्रह्मा पुत्र थे

उन्होंने उसे मंत्र प्रदान किया

वह अपनी समझ के अनुसार मंत्र जाप करते रहे और उनकी भावना और साधना दोनों के मिलन से अंततः वे महर्षि वाल्मीकि बन गए ।

अब आप इस कथा के मर्म को समझें कि एक ऐसा व्यक्ति जो जंगल में रहता था । सभी प्रकार के ज्ञान से विहीन था । वह त्रेता युग में अपनी भावना और साधना के बल पर महर्षि अर्थात् गुरु का पद प्राप्त करता है

इतनी उच्चता पर पहुंच जाता है कि स्वयं भगवान राम की पत्नी वनवासी होने पर उनके आश्रम में आश्रय लेती है

वहीं पर उनके बालकों लव और कुश का जन्म भी होता है ।

यह इस बात का प्रमाण है कि सनातन धर्म ! जन्म के आधार पर नहीं बल्कि कर्म साधना और भावना के आधार पर हर व्यक्ति को गुरुत्व प्राप्त करने या समाज में पूर्ण सम्मान प्राप्त करने का अधिकारी मानता था

इस बात को बल मिलने के लिए अगर आप दूसरे धर्म ग्रंथ महाभारत को देखें

तो.....

उसके रचयिता महर्षि वेदव्यास भी एक मछुआरिन के पुत्र थे । उन्हें भी यह अधिकार दिया गया था कि वह प्रातः स्मरणीय विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश को महाभारत की पूरी कथा बोलकर लिखवाने में समर्थ हुए ।

यह दो उदाहरण सनातन धर्म की भव्यता और उसमें व्यक्ति को आगे बढ़ने की संभावनाएं प्रदान करने की और अवसर उपलब्ध कराने की नीति का प्रमाण है ।

कालांतर में संभवतः अपने बच्चों को आसान अवसर उपलब्ध कराने की तीक्ष्ण आकांक्षा और लालच के चलते समाज में जाति का बंधन सुदृढ़ होता गया होगा और जन्म के आधार पर जाति का विभाजन प्रारंभ हो गया होगा.....

कहा गया है कि....

जन्मना शुद्रो जायते नरः ।

संस्काराद द्विज उच्यते ।।

अर्थात् हर मनुष्य जन्म से शूद्र या निम्न होता है क्योंकि उसमें ज्ञान नहीं होता और वह पशु वत होता है । जब उसको संस्कार या गुरु की प्राप्ति होती है और उससे ज्ञान युक्त संस्कार प्राप्त होता है तब वह दूसरा जन्म लिया हुआ या द्विज माना जाता है ।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मेरे सामने खड़ा हुआ था

मछुआरे के घर में पैदा हुई एक लड़की ,,,,,,
अभूतपूर्व साधनात्मक ज्ञान के साथ ! मेरे सामने खड़ी
थी

जो शमशान की अधिष्ठात्री देवी शमशान भैरवी की
साधना मुझसे संपन्न करवाने वाली थी ।

जैसा कि आप लोग मेरी पिछली कहानियों के द्वारा यह
जानते हैं कि शमशान साधनाये बिना वस्त्र के की जाती
है

संभवतः इस का कारण यह भी हो सकता है कि जैसा
प्रकृति ने हमें उत्पन्न किया है ठीक उसी अवस्था में
आकर ही हम प्रकृति के साथ एकाकार हो सकते हैं

तो हम दोनों दिगंबर अवस्था में थे ...

शमशान का सुनसान किनारा था

लगभग आधी रात का समय

इसलिए वहां दूर-दूर तक कोई भी आदमी या औरत के
आने की संभावना नहीं थी ।

मैं उनकी तरफ देख रहा था कि वह आगे क्या करने के लिए कहेंगे । लेकिन उनकी नजर नदी के दूर के छोर की तरफ थी ।

डोम बाबा हम दोनों को वहां छोड़ कर जा चुके थे ।

मैंने उनकी नजरों का पीछा किया तथा नदी की ओर देखने लगा । लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर कुछ टिमटिमाती हुई चीज दिखाई दे रही थी ऐसा लग रहा था जैसे कोई छोटी सी टॉर्च को जला बुझा रहा हो

वह पानी से मुश्किल से 4 इंच ऊपर रहा होगा ... यह बड़ी अजीब सी बात थी ! मेरा दिमाग चलने लगा

पानी के अंदर रात के समय कोई टॉर्च लेकर तो नहीं चलेगा ।

पानी से 4 इंच ऊपर उस प्रकार रोशनी दिखने के लिए उसे पकड़ने वाले आदमी का पानी के अंदर होना ही संभव था ।

जो लगभग नामुमकिन सी बात थी ।

मैंने गौर से देखा तो माधुरी की आंखें उसी चमकती हुई चीज पर टिकी हुई थी । वह चीज धीरे-धीरे हमारी तरफ बहती हुई आ रही थी ।

तभी

माधुरी के कंठ से कठोर आवाज निकली - इतना समय क्यों लगा रहे हो
जल्दी लेकर आओ

मैंने हड़बड़ाकर उनकी ओर देखा और पूछा - क्या लाऊं ?

लेकिन उनकी आंखें मेरी तरफ नहीं थी

वह तो दूर उस चमकती हुई चीज पर टिकी हुई थी ।
मैं मौन हो गया !

मुझे समझ आ गया कि वह मुझसे नहीं कह रही थी ...
बल्कि उस टिमटिमाती हुई चीज से कह रही थी
अर्थात् वह कोई अदृश्य शक्ति थी !

जो उनके आदेशों का पालन कर रही थी...

पानी मे कोई चीज उस टिमटिमाती हुई रोशनी के साथ आ रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे कोई लकड़ी का टुकड़ा या वैसे ही कोई चीज हो

उस रोशनी ने उस चीज को नदी के किनारे तक पहुंचा दिया । तब तक माधुरी वहां पर पहुंच चुकी थी

जो चीज किनारे आकर लगी थी ।
उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया

वह थी

लगभग 20-22 वर्ष की आयु वाली एक नवयुवती की मृत देह

जो हमारे सामने पड़ी थी

अर्थात शव साधना होनी थी ...

वह टिमटिमाती हुई रोशनी दरअसल माधुरी जी के द्वारा सिद्ध किए गए प्रेत की थी जो उस शव को किनारे तक खींच कर ले आया था ।

अगले दिन के समाचार पत्रों से पता चला था कि वह एक कोचिंग सेंटर में काम करने वाली युवती थी ।

जिसका प्रेम प्रसंग कोचिंग सेंटर के मैनेजर के साथ तीन वर्ष से चल रहा था । महीने भर पहले मैनेजर की शादी दूसरी जगह तय हो गई थी । तब से मैनेजर उससे बचा बचा घूम रहा था । इससे परेशान होकर युवती ने अपनी स्कूटी पुल पर खड़ी करके शिवनाथ नदी में छलांग लगा दी थी । अंधेरा और रात का समय होने की वजह से किसी को इस बारे में पता नहीं चला था । सुबह युवती के लापता होने और स्कूटी के पुल पर मिलने के चलते यह संभावना व्यक्त की गई थी ।

खैर.....

प्रेत के द्वारा लाई गई मृत देह नदी के किनारे पर लग गई थी । मेरे देखते-देखते वह प्रेत उस मृत देह को खींचकर हमारे पास ले आया ।

वह बेहद सुंदर नवयुवती थी ...

हल्के साँवले रंग की उस युवती का पूरा शरीर साँचे में ढला हुआ था । उन्नत वक्ष स्थल और स्थूल नितंब की

स्वामिनी उस युवती को देख ऐसा लगता था ... जैसे वह सो रही हो

युवती की देह को उस यंत्र के ऊपर उत्तान अवस्था में लिटा दिया ।

शव की दाहिनी तरफ मैं और बाएं तरफ माधुरी जी बैठे ।

तब तक लगभग रात के 11:15 बज चुके थे !

अर्ध रात्रि करीब थी ।

रात्रि साधना में अर्ध रात्रि अर्थात रात के 11:30 बजे से 12:30 बजे तक का समय सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है उसे ही वास्तविक अर्थ रात्रि माना जाता है ।

तंत्र साधक साधनाओं में समय का विशेष ध्यान रखते हैं और विशिष्ट समय पर ही विशिष्ट साधनाएं की जाती हैं ।

अर्ध रात्रि का समय था और वह भी अमावस्या की रात्रि

शव को चौबारे पर बने हुए यंत्र के ऊपर लिटाते ही श्मशान में अजीब सा सन्नाटा छा गया

वातावरण भारी सा होने लगा.....

दूर एनिकेट के पास सो रहे कुत्ते अचानक जाग गए
वे सारे एक सुर में रोने लगे !
सन्नाटे में उनके रोने की आवाज
रीढ़ की हड्डियों में सनसनी पैदा करने लगी

अगर आप कभी किसी कारण से देर रात को घर लौट
रहे हो और रास्ते में कुत्तों का झुंड अपने सुर में रोता हुआ
मिल जाए तो आपकी रूह तक कांप जाएगी
सुनसान अंधेरी रात में कुत्तों की रोने की आवाज बेहद
भयानक और डरावनी लगती है । ऐसा लगता है जैसे
कुछ अनिष्ट घटने जा रहा हो

लगभग 5-10 मिनट तक वह इसी प्रकार एक सुर में रोते
रहे ।

चमगादड़ का एक झुंड न जाने कहां से आकर उस
चौबारे के ऊपर चक्कर लगाने लगा
चमगादड़ काफी नीचे उड़ रहे थे
इतने नीचे ! कि कई बार वे लगभग मुंह के सामने तक
आ जाते थे ।
कई बार ऐसा लगता जैसे टकराकर निकल जा रहे हैं ।

उनका गोल गोल घूमना भी कुछ समय तक चलता रहा ...

उसके बाद वह न जाने कहां चले गए

कुत्तों का रोना भी बंद हो गया

फिर वही शांति और वातावरण का भारीपन मौजूद रहा.....

माधुरी जी ने मुझे शमशान भैरवी का मंत्र बताया और एक साथ मंत्र जाप करने की बात कही ।

वह मंत्र छोटा था इसलिए याद हो गया ।

शव के एक तरफ वह बैठी और दूसरी तरफ मैं ...

हमने मंत्र जाप चालू किया

हम दोनों एक साथ एक ही सुर में मंत्र जाप कर रहे थे ...

धीरे-धीरे मंत्र जाप की ध्वनि बढ़ने लगी...

लगभग 15 मिनट के मंत्र जाप के बाद मृत शरीर में हलचल होने लगी ।

माधुरी के पास रखा वह चमड़े का झोला उनके साथ था । झोले से उन्होंने मदिरा निकालकर रखी हुई थी । उनके पास में एक कपाल पात्र भी था ।

कपाल पात्र का मतलब होता है कि किसी मृत मनुष्य की खोपड़ी से बना हुआ पात्र । जिसमें अघोरी तथा कापालिक मदिरा तथा अन्य भोजन सामग्री ग्रहण करते हैं । यह पात्र किसी भी मनुष्य की खोपड़ी से नहीं बनता है । इसके लिए कुछ विशेष संकेतों के आधार पर खोपड़ी का चयन होता है और उसके बाद कपाल सिद्धि की जाती है तभी वह कपाल पात्र बनता है ।

माधुरी ने कपाल पत्र में मदिरा डाली और उस मुर्दे के मुख में समर्पित कर दी

मृत देह शांत हो गई !

फिर हमारा मंत्र जाप प्रारंभ हो गया ।

लगभग आधे घंटे का समय बीता होगा जब वह युवती अंगड़ाई लेकर उठ बैठी ।

उसकी आंखें सुर्ख लाल रंग की हो गई थी....

ऐसा लग रहा था जैसे उस से खून टपक रहा हो ...

वह अपने स्थान पर हिलने लगी

अपने सर को इधर उधर हिलाने लगी !

उसके सिर के लंबे लंबे बाल दाएं बाएं झूलने लगे ...

भयानक दृश्य था

सुनसान अंधेरी रात

हर तरफ काली अंधियारी चादर बिखरी हुई थी

वह युवती ! जो थोड़ी देर पहले एक लाश थी ।

वह अब बैठकर झूम रही थी ।

दाएं बाएं हिल रही थी

अपनी लटों को इधर-उधर फेंक रही थी.....

अर्थात्.....

शमशान भैरवी का आगमन हो चुका था

वह उस युवति की मृत देह में प्रविष्ट हो चुकी थी.....

अपने कपाल पात्र में माधुरी ने फिर से भोग द्रव्य प्रस्तुत किया ...

एक घूंट में युवती ने उसे ग्रहण कर लिया.....

इसके बाद माधुरी उस चौबारे से बाहर निकलकर
दक्षिण दिशा में खड़ी हो गई ।

तीन बार चौबारे की प्रदक्षिणा करके

वह न जाने कहाँ चली गयी

जाने के पहले बोल गयी - जो भी होगा उसे होने
देना

मेरी समझ मे इसका मतलब नहीं आया ।

लेकिन उसके चले जाने से आगे क्या करना है ? यह
संशय मन मे उठने लगा

फिर उनकी बातों को ध्यान कर तटस्थ होकर बैठ
गया

अचानक वह युवती उठकर नृत्य करने लगी

मैं उनके द्वारा दिए गए मंत्र को फिर से जपने लगा

उधर उस का उन्मत्त नृत्य जारी था । वह कूद कूद कर
अपने पैरों को जमीन पर पटक पटक कर नृत्य करती जा
रही थी । साथ साथ मेरे चारों तरफ घूम भी रही थी ।

कुछ क्षणों के बाद वह युवती खड़ी हो गई और मुझे
बालों से पकड़कर उठाया और उस चौबारे के बीच में
बैठा दिया

उस समय मेरा वजन तकरीबन 70 किलो रहा होगा
वह युवती दुबली पतली थी । अंदाजन 50 या 55
किलो की रही होगी । उसने मुझे किसी गुड़िया की
तरह बालों से पकड़ कर उठाया और उस चौबारे में बैठा
दिया...

बिठा दिया कहने की बजाय पटक दिया कहना शायद
ज्यादा उपयुक्त होगा.....

उसके बाद वह मेरे चारों तरफ घूम घूम कर नाचने लगी
।

उसका नृत्य उन्माद से भरा हुआ था

संभवतः पी हुई मदिरा का नशा भी उसका एक कारण
रहा होगा....

बाद में माधुरी ने मुझे बताया कि शमशान भैरवी का
नृत्य इसी प्रकार का होता है ।

इस समय तक अर्धरात्रि का समय हो चुका था ।

अचानक !

उसने एक जोरदार लात मारी

मैं पीठ के बल उस यंत्र पर गिर गया.....

मैंने उठने की कोशिश की !

तो उसने दोबारा से लात मारी !

और वापस मुझे उसी यंत्र पर लिटा दिया ...

मैं समझ गया कि वह शायद मुझे उस यंत्र पर लेटाना चाहती है । इसलिए फिर मैंने उठने की कोशिश नहीं की और यंत्र पर उसी प्रकार लेटा रहा ।

अब स्थिति यह थी कि उसकी जगह पर मैं यंत्र के ऊपर उत्तान लेटा हुआ था

वह नृत्य करती हुई मेरे चारों ओर घूम रही थी ...

मैं उसे आश्चर्य

जिज्ञासा.....

भय..... और अघटित के घटित होने की संभावना के साथ देखता हुआ मंत्र जाप करता लेटा हुआ था...

इन शमशान साधनाओं में शमशान जागरण नाम की एक क्रिया भी होती है । जिसमें शमशान में स्थित सारी शक्तियाँ जागृत हो करके दिखने लग जाती हैं

शमशान जागृत होने लगा था ...

सबसे पहले मुझे भयानक ध्वनिया सुनाई पड़ने लगी

ऐसा लगा जैसे कोई जोर जोर से चिल्ला रहा हो !
कोई भयानक अट्टहास कर रहा हो !
कोई बेहद दर्द से चीख चीख कर रो रहा हो !

इस प्रकार की भयानक ध्वनिया मेरे चारों तरफ सुनाई देने लगी ।

प्रत्यक्ष रूप से कोई दिखाई नहीं दे रहा था
लेकिन आवाजें आ रही थीं ।

कुत्ते भी समूहिक रूप से अपना संगीत बीच बीच में बजाते रहे ।

उन आवाजों के बीच भयभीत !

उत्साहित !!

जिज्ञासु !!!

इन सारे भावों के सम्मिलित मिश्रण के साथ ...

उस रहस्यमय यंत्र वाले चौबारे में लेटा हुआ मंत्र जाप करता रहा ।

पाँच मिनट बीतते बीतते भयानक आकृति वाली कई स्त्रियाँ मेरे चारों ओर दिखने लगी

उनमें से कुछ स्त्रियों की लंबाई 10 से 12 फुट की थी !

कुछ की लंबाई 2 से 4 फुट की थी !

तो कुछ की लंबाई 6 इंच से 1 फुट तक की थी ।

उनकी लंबाई में जितनी विचित्रता थी,

उससे भयानक उनका स्वरूप था !

कुछ की दो आंखें थी !

कुछ की एक आंख थी !

कुछ की कई आंखें थी ।

शरीर भी उनका बड़ा विचित्र था ।

एक भयानक स्त्री के वक्षस्थल उसके कमर तक झूल रहे थे ।

एक के दांत उसके कंधों तक लंबे थे ।

एक के बाल उसकी एडियो तक पहुंच रहे थे ।

तो एक पूरी तरह से गंजी थी ।

किसी का मुंह गधे की तरह था तो किसी का सांप की तरह !

उस युवती की तरह ही वह आकृतियां मेरे चारों तरफ नृत्य करती हुई घूमती रही ।

कुछ आकृतियां तो आगे बढ़कर

मेरे मुंह के पास,
मेरी आंख के पास, तक आ जाती थी ।
आंखें बंद होने पर भी उनकी सांसों की हवा को मैं
महसूस कर सकता था ।

भयानक दुर्गंध फैल गई थी ...
ठीक वैसे ही जैसे मांस और बालों के जलने से फैलती
है ...

यह भयानक नृत्य लगभग 10-15 मिनट तक चला
होगा.....

वातावरण धीरे-धीरे शांत होने लगा.....
वह भयानक आकृतियां भी धीरे-धीरे लुप्त हो गई ।
केवल वह युवती मेरे चारों ओर उसी प्रकार नृत्य करती
हुई घूम रही थी.....

कुछ समय बाद

वह मेरी बगल में आकर बैठ गई

उसने मेरे वक्षस्थल पर मुक्कों की बरसात कर दी.....

हर चोट पर ऐसा लगता ... जैसे उसके मुक्के छाती
फाड़ कर बाहर निकल जाएंगे ।

इसी प्रकार कभी वह बाल खींचती ।
कभी गाल पर थप्पड़ मारती ।
कभी छाती पर मुक्के मारती.....

मुझे माधुरी जी के शब्द याद थे ----
जो भी होगा उसे होने देना

और मैं उन सब को सहन करता हुआ.....
जितना हो सकता था

उतना मंत्र जाप करता लेटा हुआ था ...

वहां से उठकर भागने की प्रबल इच्छा हो रही थी

लेकिन

साधना के बीच में निकलकर भागने का मतलब

निश्चित मृत्यु !

या फिर पूर्ण रूप से पागल हो जाना ही होता है

यह दोनों ही स्थितियां मृत्यु तुल्य कष्ट दायक थी ।

इसी प्रकार कभी वह बाल खींचती ।
कभी गाल पर थप्पड़ मारती ।
कभी छाती पर मुक्के मारती.....

मुझे माधुरी जी के शब्द याद थे ----
जो भी होगा उसे होने देना

और मैं उन सब को सहन करता हुआ.....
जितना हो सकता था

उतना मंत्र जाप करता लेटा हुआ था ...

वहां से उठकर भागने की प्रबल इच्छा हो रही थी

लेकिन

साधना के बीच में निकलकर भागने का मतलब

निश्चित मृत्यु !

या फिर पूर्ण रूप से पागल हो जाना ही होता है

यह दोनों ही स्थितियां मृत्यु तुल्य कष्ट दायक थी ।

उसे मुट्ठी में ले लिया और मुझे जैसे एक बिजली का झटका सा लगा

पूरा शरीर आवेश और उत्तेजना से कांपने लगा.....

मैं प्रचंड काम-वेदना से पीड़ित होने लगा.....

मेरी नस नस में उत्तेजना का संचार होने लगा

काम-वेग मेरी नस नाड़ियों को मथने लगा

काम का आवेग मेरे स्नायुओं में दौड़ पड़ा

मेरा अंग पूर्ण रूप से उन्मत्त हो गया ...

मैं काम-संतप्त होकर उस रहस्यमय यंत्र के मध्य में स्थित था....

वह उछलकर मुझ पर आरुढ़ हो गई.....

मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा अंग किसी संडासी में फस गया हो ...

बेहद दर्दनाक अनुभव था....

उसने मेरा मर्दन आरम्भ किया !

लगभग 5 मिनट तक अत्यंत तीव्र गति से यह प्रक्रिया चलती रही

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरे अंग में पत्थर की खरोंच लग रही हो

इतना कठोर आघात था ।

कुछ समय बाद मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा

जैसे.....

संभवतः वहां से रक्त प्रवाह प्रारंभ हो गया था

मुझे यह ज्ञात था कि यदि उत्तेजना हटी तो क्रिया-भंग होनी निश्चित थी !

वैसी स्थिति में साधना अपूर्ण रह जाती.....

जोकि असफल होने की स्थिति थी

मेरी पिछली रचना “तारापीठ की छाया” में आप लोगों ने पढ़ा होगा कि किस प्रकार से अघोरांनंद की जंघा पर मदन कामेश्वर गुटिका को स्थापित किया गया था ...

मेरी जांघ पर बाबा प्रचंड आनंद ने जो मदन कामेश्वर गुटिका प्रदान की थी ! वह स्थापित थी, जो साक्षात् कामदेव का स्वरूप थी

इस प्रकार की साधना में श्मशान भैरवी का आगमन हो जाए और स्तंभन समाप्त हो जाए । चाहे उसका कोई भी कारण हो । या साधक स्वलित हो जाए तो साधना को खंडित माना जाता है । उसके गंभीर दुष्परिणाम साधक को झेलने पड़ते हैं । इसलिए इस प्रकार की साधनाएं योग्य साधकों के मार्गदर्शन में ही करनी चाहिए ।

अपनी क्षमता और सिद्धियों के ऊपर पूरा विश्वास होने पर ही ऐसी साधनाएं की जानी चाहिए अन्यथा गंभीर दुष्परिणाम साधक को झेलने पड़ सकते हैं ।

जिसमें अकाल मृत्यु से लेकर मानसिक विक्षिप्त होने सबकुछ संभव होता है

इस प्रकार की साधनाओं में दैवीय स्पर्श होना बेहद अनिवार्य होता है । इसके अभाव में इस प्रकार की साधनाएं नहीं की जा सकती हैं । अस्तु.....

मैंने अपनी जंघा के उस भाग को, जहां पर बाबा जी ने मदन कामेश्वर गुटिका को स्थापित किया था, उसे स्पर्श किया और संबंधित मंत्र का जाप करके स्थिर उत्तेजना को सुनिश्चित किया...

लगभग 5 मिनट के बाद वह बुरी तरह से हाफने लगी
और उसकी गति थोड़ी कम हुई...

उसने अब अपने पाँव भूमि से उठाकर मेरे वक्ष-स्थल पर
रख दिए !

अब वह पूरी तरह से मेरे ऊपर आरुढ़ थी ...
और भूमि से उसका संपर्क नहीं था ...

उसने अपने बाएँ हाथ का अंगूठा मेरी नाभि में रखा !
दायें हाथ का अंगूठा हृदय स्थल पर रख दिया और ज़ोर
से दबाया

ऐसा लगा जैसे अंगूठा मेरे शरीर के अंदर धसता चला
जा रहा हो

उसके साथ ही अचानक मुझे अपना शरीर हलका होता
हुआ महसूस हुआ
साथ ही उसके शरीर का भार भी महसूस नहीं हो रहा
था

ऐसा लग रहा था जैसे वह 50 किलो की ना होकर एक
रुई से बनी हुई गुड़िया जैसी हो
केवल इतना ही वजन महसूस हो रहा था ।

धीरे-धीरे मेरा शरीर भूमि से ऊपर उठने लगा...

वह लगभग डेढ़ से दो फीट ऊपर उठ गया होगा और उसी स्थिति में स्थिर हो गया.....

अब उसी मुद्रा में हम दोनों हवा में लटके हुए थे.....

उसकी प्रचंड गति धीमी होती हुई मध्यम हो चुकी थी लेकिन अभी भी सामान्य से अधिक ही थी ।

पहले की तुलना में

मुझे उसके मध्यम वेग से उतनी पीड़ा नहीं हो रही थी

मैं अपने मंत्रोच्चारण में तल्लीन था

लगभग दो तीन मिनट यह स्थिति रही होगी !

उसके बाद उसने अपने पाँव मेरे वक्ष से उठाए और एक जोरदार आघात किया ।

मेरा शरीर उसे लेकर धम्म से जमीन पर आ गिरा ।

गिरते ही उसने भूमि पर पैरों का जोरदार आघात किया

ऐसा लगा जैसे भूमि में हलचल सी हुई हो !

उसने जोर का हुंकारा भरा

"हूं....हूं....हूं....हूं....हूं.....हूं"

उसकी भयंकर ध्वनि से श्मशान थरथरा उठा.....

उसने विपरीत रति मुद्रा धारण की और मर्दन तीव्र किया

किसी झंझावात की तरह उसका वेग बढ़ता चला गया.....

उसके प्रहार किसी पत्थर की तरह से चोट कर रहे थे.....

उसके दोनों हाथ अब मेरी गर्दन पर आ गए

उसने मेरी गर्दन पकड़ ली ...

उत्तेजना और आवेग से उसने इतनी जोर से गर्दन पकड़ी हुई थी !

कि मेरा सांस लेना मुश्किल हो गया था.....

यह प्रक्रम भी लगभग 10 मिनट तक और चला होगा ।

जो गृहस्थ हैं वह इस बात को समझ गए होंगे कि अब तक मेरी हालत कैसी हो गई होगी ।

लगभग आधे घंटे का समय बीत चुका था इस संघर्ष में.....

इसके बाद उसकी गति धीमी होने लगी.....

ऐसा लगा जैसे थोड़ा विश्राम ले रही हो

दो-चार मिनट के विश्राम के बाद फिर से उसकी गति
अत्यंत उग्र और तीव्र होती चली गई

लगभग 10 मिनट के प्रचंड मर्दन के बाद वह निढाल
होकर मेरे वक्ष पर गिर गई

वह संतुष्ट हो चुकी थी.....

उसने मेरे सर पर हाथ फेरा

कुछ क्षणों के उपरांत वह उठ खड़ी हुई ...

उसके साथ साथ मैं भी उठ खड़ा हुआ

उसके मुंह से गंभीर आवाज निकली - मैं प्रसन्न हूं

बोल तू क्या चाहता है ?

मैंने हाथ जोड़कर कहा - हे देवी, आपकी कृपा दृष्टि
सदैव मुझ पर बनी रहे ...

मैं उनके चरणों में साष्टांग दंडवत हो गया

उन्होंने मुझे उठाया

मुझे अपने हृदय से लगाया.....

फिर उनकी गहन गंभीर वाणी गूँजी - मैंने तुझे स्वीकार किया साधक !

मेरा वरद हस्त तुझ पर बना रहेगा.....

उसके बाद मुझे सर से पाँव तक और पाँव से सिर तक उन्होंने स्पर्श किया ।

जहां जहां उनका हाथ लगता था ...

ऐसा लगता था जैसे जलते हुए अंगारे से स्पर्श हो गया हो ।

जब उन्होंने पूरे शरीर पर हाथ फेर लिया तो मुझे ठीक वैसा ही प्रतीत हो रहा था जैसे 104 डिग्री का बुखार हो गया हो ।

सारा शरीर आग से जलता हुआ प्रतीत होने लगा ।

आज भी अगर स्मशान भैरवी के मंत्र का 11 बार भी उच्चारण कर लूं तो पूरा शरीर उसी प्रकार गर्म होने लगता है

उसके बाद उन्होंने मुझ पर अपनी करुणा भरी दृष्टि डाली और जोर का हुंकार भर के अचानक आकाश में ऊपर उठ कर गायब हो गयी....

फिर ज़ोर के छपाक की आवाज आई

जैसे नदी मे कुछ गिरा हो ...

संभवतः वह देह पुनः नदी में विलीन हो गई ।

मैं अभिभूत सा कुछ देर उस ओर देखता रहा और फिर भरभरा कर चौबारे पर गिर गया ।

संभवतः बेहोश हो गया ।

उस समय तक रात्रि के शायद दो बज गए होंगे

लगभग 4 बजे के आसपास मुझे माधुरी ने उठाया.....

उन्होंने मुझे नदी में जल्दी से स्नान करके काली मंदिर में पहुंचने के लिए कहा

मैं स्नान करके जब काली मंदिर में पहुंचा तो वहां पर माधुरी और डोम बाबा दोनों उपस्थित थे ।

मैंने दोनों के चरण स्पर्श किए ...

दोनों ने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फिराया और उसके बाद डोम बाबा ने हम दोनों को अपने सामने जमीन पर बिठा

दिया और कुछ विशिष्ट अघोर मंत्रों का उच्चारण करने लगे ।

संभवतः वे किसी प्रकार का प्रयोग कर रहे थे

लगभग आधे घंटे तक उनका वह मंत्रोच्चार चलता रहा और हम आंख बंद करके बैठे रहे.....

उसके बाद वह सुपरिचित पंक्तियां सुनाई देने लगी जो कि उनके पूजन के अंत में मैं हमेशा सुना करता था जिसका सार यह होता था कि अब यह पूजन पूर्ण हुआ और गुरुदेव आपके चरणों में मैं इसे समर्पित कर रहा हूँ ...

हम दोनों ने आंखें खोली तब तक डोम बाबा का गहन गंभीर उद्धोष गूँजा

शिव शासनतः !

शिव शासनतः !!

शिव शासनतः !!!

अर्थात्

हे जगत गुरु !

हे देवों के देव !

महादेव !

पशुपति !

भगवान शिव !

मैं आपका शासन स्वीकार करने वाला आपका दास
हूँ

आप मुझ पर कृपा करें

मुझे अपना साहचर्य !

अपनी कृपा !

अपना वरदहस्त प्रदान करें

मैं अपने संपूर्ण अस्तित्व को आपके चरणों में समर्पित
करता हूँ.....

हम तीनों ने भगवती काली के दिव्य विग्रह के सामने
साष्टांग दंडवत प्रणाम किया ...

उसके बाद हम दोनों पुनः बाबा के चरणों में दंडवत मुद्रा
में लेट गए ।

बाबा के मुंह से आशीर्वाद निकला ---- शुभमस्तु !
कल्याणमस्तु !

उन्होंने अपने दोनों हाथ हवा में उठाए और जब नीचे किए तो दोनों हाथों में एक-एक लोहे का बना हुआ चिमटा था ।

उन्होंने हम दोनों को एक-एक चिमटा दिया और हमारे सिर पर स्नेह और आशीर्वाद से भरा हुआ अपना हाथ फेरा और मुड़ कर चले गए

वह एक अद्भुत चिमटा था

जिसके बारे में माधुरी ने मुझे बताया ।

वह चिमटा अघोर साधना और साधकों के लिए अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य माना जाता है ।

इसी चिमटे के द्वारा चिता से अग्नि पिंड निकालने से लेकर अपने लिए सुरक्षा चक्र बनाने तक समस्त प्रकार की क्रियाएं संपन्न की जाती है । कुल मिलाकर यह समझ लीजिए कि वह अघोर साधकों का पैराशूट है । जिससे किसी भी गंभीर परिस्थिति में सुरक्षित रूप से इमरजेंसी लैंडिंग की जा सकती है ...

माधुरी ने कहा - अब तुमसे पशुपति नाथ धाम में मुलाकात होगी ...

मुझे आश्चर्यचकित अवस्था में छोड़कर वह भी मंदिर से बाहर निकली और न जाने कहां चली गई ...

मैं काफी देर तक मंदिर में ही बैठा रहा ...

रात में हुई घटनाओं के बारे में सोचता हुआ

दिन का उजाला फैलने लगा था

लगभग 5:45 बजे का समय हो रहा था.....

एक बार पुनः भगवती काली को दंडवत प्रणाम किया

और वापस अपने घर की ओर लौट गया....

यह सोचता हुआ कि बाबा पशुपतिनाथ कब मुझे अपने पास बुलाएंगे

श्मशान भैरवी साधना संपन्न हो चुकी थी

माधुरी ने पशुपति नाथ धाम में मिलने की बात कही थी...

जैसा कि मैंने कहा था पशुपतिनाथ या नेपाल जाने के विषय में मैंने सोचा भी नहीं था ।

लगभग एक हफ्ते का समय बीता होगा जब मेरे एक मित्र जटाशंकर देशमुख मेरे घर पर पधारे । जटाशंकर जी बेहद ही धनी मानी परिवार के इकलौते वंशज हैं ।

बाप दादा ने अकूत दौलत कमा कर रखी हुई है । राइस मिल से लेकर धान की खेती मुर्गी का फार्म और न जाने कितने प्रकार के उनके व्यवसाय चलते रहते हैं । कुल मिलाकर कमाने धमाने की चिंता करने की कोई विशेष बात नहीं है और आसानी से धन का अजस्र प्रवाह घर की ओर आता रहता है

ये मित्र बड़े ही शिवभक्त प्राणी हैं ।
बहुत मजेदार किस्म के जीव ।

भारत मे जितने भी प्रसिद्ध शिव क्षेत्र हैं । उन सब की यात्रा वे संपन्न कर चुके हैं और कभी भी कोई भी अगर उनसे भगवान शिव के नाम पर चंदा मांग ले तो वह उसको ना नहीं करते

यही नहीं अगर किसी शिव धाम की यात्रा के लिए कोई समूह जा रहा हो और उनकी सहमति मांगे या उन्हें भी साथ लेने के लिए आग्रह करें तो ना सिर्फ वे साथ में जाते

बल्कि यात्रा के खर्च का भी एक बड़ा हिस्सा स्वयं वहन कर लेते थे

बिल्कुल भगवान शिव की ही तरह ...

फक्कड़ और औघड़दानी.....

इसके साथ-साथ उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी उनका सिद्धांत

जिसके अनुसार शिवभक्त होने का मतलब हर प्रकार के नशे को पूरी श्रद्धा के साथ शिव प्रसाद के रूप में स्वीकार करना ...

यह उनका सिद्धांत था ...

जिसका वे पूरी श्रद्धा के साथ पालन करते थे और शायद ही इस दुनिया में कोई ऐसा नशा हो जो उनसे छूटा हो

सिगरेट के धुएँ का आवरण उनके इर्द-गिर्द हमेशा बना रहता था

मुझसे मिलने के लिए वह बीच-बीच में आया करते । हमारी दोस्ती का जो मूल था वह था हमारा प्राथमिक स्कूल

कक्षा 1 से लेकर कक्षा 5 तक की पढ़ाई हम दोनों ने एक ही सरकारी प्राथमिक शाला में पूरी की थी

उस दौरान जो दोस्ती हमारी बनी वह इस उम्र तक कायम थी....

ना उसके पैसें से मैंने कभी मोह रखा ना उसने कभी मुझे पैसें का धौंस दिखाया

वह समस्त सुख सुविधाओं से युक्त अमीर बच्चा था और मैं एक सामान्य बच्चा लेकिन हमारी दोस्ती के बीच यह भेद कभी भी नहीं आया

ऐसी दोस्ती ताउम्र कायम रहती है और मेरी और जटाशंकर की दोस्ती भी कुछ कुछ वैसे ही थी

जटाशंकर एक नए विचार के साथ आया था..... भारत के शिव तीर्थों की यात्रा उसकी लगभग पूर्ण हो चुकी थी । अब उसके मन में विचार आया था कि क्यों ना नेपाल जाकर भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन किए जाएं ।

मेरी समझ में आ गया कि यह क्यों आया है और मेरी पशुपतिनाथ यात्रा कैसे होने वाली है

तो मैंने हामी भर दी

लगभग एक हफ्ते के बाद हम लोग ट्रेन में बैठ कर पशुपतिनाथ की ओर रवाना हो गए ।

ट्रेन से हम लोगों ने मुजफ्फरपुर तक की यात्रा संपन्न की उसके बाद बस में सीतामढ़ी तक जाना था....

मैं जिंदगी में पहली बार बिहार जा रहा था ...

हम लोग मुजफ्फरपुर पहुंचे और वहां से बस में बैठकर सीतामढ़ी की ओर रवाना हुए ।

बिहार में आज भी आप मुख्य सड़क के बाजू में घास फूस की बनी हुई झोपड़ियां देख सकते हैं । जो शायद भारत के किसी दूसरे राज्य में बहुत मुश्किल से दिखेंगी ...

बस भी बहुत शानदार थी । वह इस अवस्था में थी कि हार्न छोड़कर बस का हर हिस्सा अलग-अलग प्रकार का संगीत निकालता रहता था ...

बस खचाखच भरी हुई थी ।

साइकल और इसी प्रकार के बड़े-बड़े सामान बस की छतों पर डाल कर ले जाए जाते हैं ।

इसके लिए बस स्टैंड पर एक आदमी भी तैनात होता है ।

वह इतना एक्सपर्ट होता है कि एक हाथ से बस की सीढ़ी पकड़ कर लटका होता है और दूसरे हाथ से पूरी की पूरी साइकिल को उठाकर छत में डाल देता है ।

मैं आश्चर्य के साथ इन सब दृश्यों को देख रहा था...
वास्तव में हमारा देश अद्भुत है....

अगर आप अपने प्रदेश से निकलकर दूसरे प्रदेश की यात्रा करें तो अनेक नए-नए दृश्य और अनुभव आपको प्राप्त होंगे जो न सिर्फ आपका ज्ञान बढ़ाएंगे बल्कि आपको एक अलग ही प्रकार की आनंद की अनुभूति भी कराएंगे ।

यात्रा धीरे-धीरे आगे बढ़ती रही

हम लोग नेपाल के करीब पहुंचते रहे

हर देश की अपनी सीमा होती है और वहां पर उस देश के जवान तैनात रहते हैं । भारत और नेपाल के बीच में भी एक सीमा है । भारत से नेपाल जाने या नेपाल से भारत आने के लिए पासपोर्ट की जरूरत नहीं पड़ती ।

नेपाल बॉर्डर से आप नेपाल के अंदर घुसते हैं ...
मुझे यह जानकारी मिली थी कि नेपाल का बॉर्डर रात
के 9:00 बजे बंद हो जाता है ...

हम लोग लगभग 9 बजे के आसपास सीतामढ़ी के बस
स्टैंड पर पहुंचे ।

वहां पर लोगों ने बताया - कोशिश करके देख लो ।
दस पाँच मिनट आगे पीछे भी छोड़ देते हैं । वैसे तो 9
बजे बंद हो जाता है ।

जटाशंकर ने एक ऑटो वाले को पकड़ा और उसे बॉर्डर
तक पहुंचाने की बात की । जो वहां से कुछ दो ढाई
किलो मीटर रहा होगा । उसने ₹100 की मांग की ।
मजबूरी थी । तो हम लोग मान गए । उसने हमें बैठाया
और तेजी से बॉर्डर की ओर बढ़ चला ...

हम दोनों लगभग 9:15 बजे नेपाल बॉर्डर पहुंचे.....

बॉर्डर पर तैनात जवान भी सज्जन थे । उन्होंने हमसे
नेपाल आने का कारण पूछा जब हमने बताया कि
पशुपतिनाथ धाम की यात्रा करने के लिए आए हैं तो
फिर उन्होंने हमारा सामान चेक किया जिसमें कुछ खास

था नहीं और वे संतुष्ट हो गए उसके बाद हम बॉर्डर पार हो गए ।

ऑटो वाले ने बताया था कि बॉर्डर के पार में बस रहती है । जिसमें बैठकर आप आराम से जनकपुर जा सकते हो । जो कि वहां से लगभग 15 किलोमीटर दूर था । हमें वही जाना था ।

अब क्योंकि रात के लगभग 9:30 बजे का समय हो चुका था और आखरी बस संभवतः निकल गई थी। वहां पर कोई बस नहीं थी ।

एक पेड़ के नीचे एक ऑटो खड़ा हुआ था जिसमें कोई नहीं था

संभवतः वह भी सोने चला गया होगा , यह सोचकर हम लोग वही खड़े रहे ...

नेपाल के बॉर्डर के इस पार और उस पार दोनों तरफ रहने की और खाने की भी व्यवस्था है । हम लोगों की इच्छा थी कि हम सीधे जनकपुर जाकर रुके । लेकिन अगर कोई व्यवस्था नहीं होती तो फिर बॉर्डर पर ही रुकना पड़ता

तभी हम लोगों ने देखा कि ऑटो की तरफ एक व्यक्ति आ रहा है

वह आकर ताला वगैरा चेक करने लगा तो हमें समझ में आया कि यह जरूर इसका ड्राइवर होगा ।

पास में खड़े जवान ने भी कहा - उससे बात करके देख लो ।

हम लोग आगे बढ़े ... उससे बात की ।

रात होने का फायदा वह भी उठाना चाहता था

उसने रेट बताया ₹2000 ...

अब 15 किलोमीटर के लिए ₹2000 बहुत ज्यादा लग रहे थे क्योंकि ₹2000 में तो हम आराम से बॉर्डर के ही किसी लॉज में रात रुकने के बाद भी अगले दिन बस पकड़कर जनकपुर जा सकते थे

हम वापस जाने लगे तो बॉर्डर के जवान ने पूछा - क्या हुआ ?

मैंने कहा - यह ₹2000 मांग रहा है ।

जवानों ने नेपाली भाषा में ऑटो वाले को फटकार लगाई और आखिर में वह ₹800 में मान गया ...

हम लोगों ने जवानों का शुक्रिया अदा किया और ऑटो में चढ़ गए.....

नेपाल एक बेहद गरीब देश है । अभी भी वहां पर आपको गांव में अधिकांश घर झोपड़ियों जैसे ही दिखेंगे । कुछ घर जरूर अच्छे पक्के बन गए हैं । लेकिन बहुसंख्यक जनता की आर्थिक स्थिति कमजोर ही है ।

सड़क की हालत भी बेहद दर्दनाक थी । ऑटो कभी बाएं तरफ झुकता तो कभी दाहिनी तरफ । इसी तरह से डोलते डोलते रात के लगभग साढ़े दस बजते बजते हम लोग जनकपुर में पहुंच गए ।

नेपाली लोग बेहद सरल और सहज होते हैं । रास्ता तय करते-करते ऑटो वाले के साथ भी चर्चा होने लगी । ऑटो वाला लगभग 30-32 साल का युवक था । उसका नाम था रुजुल । उसे हम ने बताया कि हम पशुपति नाथ धाम की यात्रा के लिए आए हैं तो वह बड़ा खुश हुआ । रुजुल ने बताया कि वह जनकपुर का

ही रहने वाला है । हमने ठहरने के लिए किसी अच्छी जगह पर ले जाने की बात की ।

वह बोला - मेरा घर तो छोटा है अगर आप चाहो तो मैं अपनी मौसी के घर आपको ले चलता हूं । उनका घर बड़ा है । गरम पानी वगैरह की भी व्यवस्था है ।

यह बिल्कुल वैसे ही बात थी कि अंधा क्या चाहे ? दो आंखें.....

हम लोगों ने तुरंत हामी भर दी । रुजुल हमें अपनी मौसी के घर पर ले गया ।

रुजुल ने दरवाजे की घंटी बजाई और एक बेहद खूबसूरत महिला ने दरवाजा खोला जो मुश्किल से पच्चीस तीस साल की लग रही थी । नेपाली भाषा में रुजुल ने उसे सारी बात समझाई । उसके बाद उसने हमें अंदर ले जाकर कमरा दिखाया । कमरा बहुत ज्यादा सुंदर नहीं था । लेकिन साफ सुथरा था एक डबल बेड पड़ा हुआ था । बाजू में टेबल और कुर्सी लगी थी

बाथरूम अटैच था और उसमें बकायदा गीजर लगा हुआ था ।

हम लोगों ने पानी का नल खोल कर देखा पानी भी आ रहा था ।

यानी कुल मिलाकर संतोषजनक व्यवस्था थी

हम लोग सहमत हो गए

उसने किराए के रूप में ₹500 की मांग की और आखरी में मामला ₹300 में तय हो गया ।

हमने ₹500 एडवांस में दिए ।

रुजुल को हमने उसके पैसों के अलावा ₹50 की टिप दी और वह खुश हो कर चला गया । जाने से पहले जटाशंकर ने उसे कोने में ले जाकर कुछ बातचीत की और ₹500 का एक नोट भी पकड़ाया...

मैं समझ गया कि यह अपनी व्यवस्था कर रहा है ।

उसकी बात सुनकर जटाशंकर खुश होता हुआ मेरी तरफ आया ।

उधर रुजुल ने अपनी मौसी से कुछ कहा ।

इसके बाद वे दोनों बाहर चले गए । मैं कपड़े बदल कर बाथरूम में घुस गया । गरम पानी में नहाने का अवसर में छोड़ना नहीं चाहता था । शावर लगा हुआ था ।

मैं जी भरकर नहाया और उसके बाद जब बाहर निकला तो देखा जटाशंकर कुर्सी पर बैठा हुआ है । सामने में विस्की की बोतल , दो गिलास, सिगरेट का पैकेट और माचिस सब रखा हुआ था । उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी । थोड़ी देर बाद मौसी ने दो प्लेट में खाना भी प्रस्तुत कर दिया । इन सब कार्यक्रम से निपटने के बाद हम दोनों तान कर सो गए ।

अगले दिन सुबह हम लोग घूमने निकले ... भारत का ₹10 नेपाल में ₹16 के बराबर होता है । भारत का रुपया वहां सहजता से चल जाता है । हमारे दोस्तों ने हमें राय दी थी कि हम छोटे नोट भी साथ लेकर चलें । तो हमारे पास वह पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे । इसलिए किसी प्रकार की दिक्कत नहीं थी । बड़ी आसानी से सारे कार्य हो जा रहे थे...

जनकपुर का सबसे बड़ा आकर्षण है जानकी मंदिर । जानकी मंदिर जनकपुर के केंद्र में स्थित है । राजा जनक के नाम पर शहर का नाम जनकपुर रखा गया था । राजा जनक की पुत्री सीता जिन्हें जानकी भी कहते हैं, उनके नाम पर इस मंदिर का नामकरण हुआ था । यह नगरी मिथिला की राजधानी थी ।

जानकी मंदिर साल 1911 में बनकर तैयार हुआ था । करीब 4860 वर्ग फीट में फैले इस मंदिर का निर्माण टीकमगढ़ की महारानी कुमारी वृषभानु ने करवाया था । ऐसा कहा जाता है कि टीकमगढ़ की महारानी कुमारी वृषभानु एक बार जनकपुर गई थी ! वह निसंतान थी ! वहां पहुंचने के बाद उनके मन में सीता माता से मन्नत मांगने का विचार आया और उन्होंने पूजा के दौरान मन्नत मांगी थी कि अगर भविष्य में उन्हें कोई संतान होती है तो वो वहां मंदिर बनवाएंगी !

उन्हें शीघ्र ही संतान की प्राप्ति हुई । संतान की प्राप्ति के बाद वो वहां लौटीं और साल 1895 में मंदिर का निर्माण शुरू हुआ और 16 साल में मंदिर का निर्माण पूरा हुआ । इस मंदिर के निर्माण पर कुल नौ लाख रुपए

खर्च हुए थे, इसलिए इस मंदिर को नौलखा मंदिर भी कहते हैं ।

जानकी मंदिर में 12 महीने अखंड कीर्तन चलता रहता है । यहाँ 24 घंटे सीता-राम नाम का जाप लोग करते हैं । साल 1967 से लगातार यहां अखंड कीर्तन चल रहा है । जानकी मंदिर में तीर्थ यात्री न सिर्फ़ भारत से बल्कि विदेशों से भी आते हैं । मंदिर में मां सीता की मूर्ति अत्यंत प्राचीन है जो 1657 के आसपास की बताई जाती है.

जनकपुर माता सीता का मायका है यानी राजा जनक की नगरी ...

मंदिर में भिखारियों का होना एक सहज और स्वाभाविक सी घटना है । मंदिर के बाहर मुझे कई भिखारी दिखाई दिए ।

उन सारे भिखारियों की वेशभूषा देखकर मुझे कुछ विशेष आश्चर्य अनुभूति नहीं हुई लेकिन उसमें एक युवती मुझे बेहद अजीब लगी । उसके कपड़े मैले हो चले थे ।

लेकिन

किसी ब्रांडेड कंपनी के जींस और हल्के गुलाबी रंग की फुल स्लीव वाली ढीली टी शर्ट पहने हुए वह बड़ी अजीब सी लग रही थी ।

उसके गले में रुद्राक्ष की एक माला भी लटकी हुई थी । वह मंदिर के एक कोने में इस तरह से बैठी हुई थी कि मंदिर का एक एक हिस्सा उसकी नजरों में था । वह आंख बंद करके बैठी हुई थी । बीच-बीच में आंख खोलकर चारों तरफ देखती थी और फिर आंख बंद करके बैठ जाती थी ।

उसकी वेशभूषा मुझे बेहद रहस्यमय लगी साथ ही उसका आचरण भी बेहद अजीब था । काफी देर मैं उसे देखता रहा

फिर मेरी निगाहें मंदिर की ओर उठ गई । जानकी मंदिर की भव्यता अपने आप में अद्भुत है उसे देख कर बैठे रहने का आनंद भी अलग ही है....

जटाशंकर दर्शन कर चुके थे और वापस जाने के मूड में थे ।

मैं अभी कुछ देर और वहीं रुकना चाहता था ।

मैंने जटाशंकर को भेज दिया और खुद वहीं रुक गया ...

जटाशंकर के जाने के बाद मैं भी एक छांव वाले कोने में ध्यान लगा कर बैठ गया

कितना समय गुजरा मुझे पता नहीं चला ।

जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा ...

मंदिर के प्रांगण में लगभग 20 लोगों का एक ग्रुप खड़ा हुआ था । जिसमें तीन चार छोटे बच्चे भी थे । उसमें से दो-तीन बच्चे दौड़ दौड़ कर खेल रहे थे । वह युवती अब भी वहीं बैठी थी ।

अचानक वह युवती अपने आसन से उठी और एक तरफ आगे बढ़ गई वह एक अंधेरे कोने की तरफ जा रही थी

उसके पीछे पीछे जा रहा था उनमें से एक छोटा सा लगभग 4 या 5 साल का नन्हा बालक....

बच्चा किसी रोबोट की तरह उसके पीछे पीछे जा रहा था ।

ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसके सम्मोहन में हो ।

तभी.....

एक स्त्री की तेज आवाज गूंजी - लल्ला ! लल्ला !!
ओ लल्ला !!! कहां जा रहा है ? अरे पकड़ो ! पकड़ो !
देखो लल्ला कहां जा रहा है.....

तभी दो पुरुष उस बच्चे की तरफ दौड़े ...
युवती अंधेरे में गायब हो चुकी थी....

बच्चा भी उस अंधेरे कोने की तरफ बढ़ रहा था, लेकिन
वहां पहुंचने से पहले ही दोनों पुरुष वहां पहुंच गए और
एक ने उसे गोद में उठा लिया । वे उसे लेकर वापस
लौट आए ...

बच्चे की आंखों की पुतलियां बिल्कुल स्थिर थी ।
उसके चेहरे पर किसी प्रकार के भाव नहीं थे

ऐसा आमतौर पर तब होता है जब व्यक्ति किसी के
सम्मोहन में होता है । तब उसका अपने ऊपर कोई
नियंत्रण नहीं रहता

मेरे मन में विचार कोंधा - अवश्य उस युवती ने इस बच्चे
को सम्मोहित करके अपने पीछे आने के लिए विवश
किया होगा

यह विचार आते ही मेरी जिज्ञासा बढ़ गई । मैंने कपालिनी को याद किया । मेरे मानस पटल में उसके स्पष्ट होते ही उसे पता लगाने के लिए निर्देशित करके मैं वापस निकलने को तैयार होने लगा ।

मैंने देखा कि बच्चा अपने मां-बाप के पास सुरक्षित था । उन्होंने उसे पानी पिलाया और अब वह सामान्य दिख रहा था । अप्रत्याशित घटना से वे लोग भी घबरा गए थे और जल्दी-जल्दी मंदिर से बाहर निकल गए ...

मैं भी मंदिर से बाहर निकला

मंदिर के बाहर रुद्राक्ष बेचने वाला एक आदमी बैठा हुआ था । नेपाल अपने रुद्राक्ष के लिए विश्व प्रसिद्ध है । नेपाल में एक मुखी रुद्राक्ष भी पाए जाते हैं । जो कि बेहद दुर्लभ होते हैं । एक मुखी रुद्राक्ष बहुत ज्यादा कीमती होता है । इसका एक दुर्लभ पेड़ नेपाल में था । जिसमें केवल एक मुखी रुद्राक्ष ही लगते थे । जिस परिवार में वह वृक्ष था वहां वृक्ष के स्वामित्व को लेकर दो भाइयों में विवाद हुआ । अंततः विवाद इतना ज्यादा

बढ़ा कि एक भाई ने उस वृक्ष को ही काट दिया । उसके बाद से एक मुखी रुद्राक्ष और भी दुर्लभ हो गया है ।

पहले नेपाल मे जो सर्वश्रेष्ठ रुद्राक्ष हुआ करते थे,
विशेष रूप से एक मुखी रुद्राक्ष !

वह नेपाल के राजा को भेंट किए जाते थे ।

नेपाल का राजवंश तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में विशेष
रुचि रखने वाला राजवंश था । कई राजा तो बहुत ही
उच्च कोटि के तंत्र साधक भी रहे हैं ।

संभवतः नेपाल ही इकलौता ऐसा देश है जहां पर
जीवित कन्या की कुमारीदेवी के रूप में मान्यता भी है,
और उसकी पूजा भी की जाती है

कुल मिलाकर तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में नेपाल की
अपनी एक विशिष्टता है । ऐसा माना जाता है कि
नेपाल के राजघराने के पास आज भी कई हस्तलिखित
तंत्र ग्रंथ मौजूद हैं । अस्तु

बेचने वाले के पास ढेरों रुद्राक्ष मौजूद थे ।

अलग-अलग साइज के रुद्राक्ष !

एक मुखी से लेकर ग्यारह मुखी तक ।

वह मुझे रुद्राक्ष की खासियत बताने लगा ।

मुझे रुद्राक्ष की खास परख नहीं थी ।

इसलिए मैंने रुद्राक्ष वाले की बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और 5 मुखी रुद्राक्ष की माला देखने लगा ।

पाँच मुखी रुद्राक्ष सबसे ज्यादा पाया जाने वाला रुद्राक्ष है इसलिए उसमें बहुत ज्यादा गड़बड़ी की गुंजाइश नहीं रहती है ऐसा मेरा विचार था ।

रुद्राक्ष आप लोगों ने भी देखा होगा वह लगभग लाल काला या लगभग मैरून कलर का होता है । लेकिन उसके पास जो रुद्राक्ष के दाने थे वह बादामी कलर के थे । जो मुझे बहुत अच्छे लगे । मैंने ₹50 में उससे दो माला ले ली और आगे की तरफ बढ़ गया । तब तक कपालिनी के संकेत मिलने प्रारंभ हो गए थे । इसलिए मैं किसी एकांत स्थान की तलाश में था ।

मंदिर की बगल में एक मैदान था । जो उस समय लगभग सुनसान पड़ा हुआ था । मैं उसके बीच में जाकर बैठ गया

कपालिनी ने जो कहानी बताई

वह बेहद रहस्यमय और साथ ही दर्दनाक भी थी ...

उस युवती का नाम था तेजल.....

तेजल शाह.....

सूरत के हीरा व्यापारी हिमेश भाई जयंत भाई शाह की बेटी

हिमेश भाई करोड़ों की संपत्ति के मालिक थे । सूरत में उनके हीरो के दो शोरूम थे ।

इसके अलावा मुंबई तथा दिल्ली में एक-एक शोरूम था ।

दो साल पहले बिजनेस बढ़ाने के लिए वे दुबई में अपना पांचवा शोरूम खोलने की तैयारी में थे....

अचानक एक दिन उन्हें पता चला की उनका अपना सबसे विश्वसनीय दोस्त मिठालाल भोला लाल शाह गायब था । मिठालाल उनके साथ लगभग 11 वर्षों से जुड़ा हुआ था । वह उनका सबसे विश्वसनीय नौकर और मित्र दोनों था । वह उनके साथ तब से था जब हिमेश भाई ने हीरे का व्यापार चालू किया था ।

आर्थिक लेनदेन की जिम्मेदारी हिमेश भाई ने धीरे-धीरे मिठालाल को सौंप दी थी और मिठालाल पूरी

ईमानदारी के साथ अपने कार्य को अंजाम देता था ।
उसके काम को देखते हुए हिमेश भाई इतने ज्यादा
निश्चिंत हो गए कि वह मीठालाल के ऊपर आंख मूंद
कर विश्वास करने लगे थे

लगभग 10 दिनों तक मीठालाल का कोई पता नहीं
चला हिमेश भाई ने हर जगह ढूंढने की कोशिश
की

लेकिन.....

मीठालाल गधे के सींग की तरह गायब हो चुका था....
शुरु के दो-तीन दिन तो हिमेश भाई को लगा कि किसी
काम से मिठालाल कहीं गया होगा

आ जाएगा....

लेकिन जब हफ्ता भर गुजर गया तो यह पता चला कि
दाल में कुछ काला है

बाद मे पता चला मीठालाल उनके नाम पर मार्केट से ढेर
सारा पैसा उठा चुका है ।

उनके विश्वास का संभवतः मीठालाल ने फायदा उठाया
था ...

यह हिमेश भाई के लिए एक वज्रपात जैसा था । इतना सब करने के बाद मीठालाल चुपके से गायब हो गया । बाजार में पता लगाया तो लेनदारों की संख्या ज्यादा निकली ।

साख बचाने के लिए सभी लेनदारों का पैसा वापस करना पड़ा

हीरे के धंधे में काफी सारा काम गैरकानूनी भी होता है ...

अर्थात् ऑफ द रिकॉर्ड होता है

जिसमें स्मगल किए हुए हीरे की खपत भी की जाती है

काफी दिन से हिमेश भाई खुफिया विभाग के रडार पर थे ।

इसी दौरान उनके ऊपर छापेमारी भी हुई ।

दिल्ली के दो शोरूम बंद करने पड़े.....

मामले को रफा-दफा करने के लिए बहुत बड़ी रकम लगानी पड़ी ।

कुल मिलाकर कंगाली में आटा गीला वाली स्थिति थी.....

करोड़ों का कारोबार औंधे मुंह जमीन पर गिरता जा रहा था

जब भी आदमी बुरी तरह से फंस जाता है । तब उसे भगवान ज्यादा याद आता है । हिमेश भाई भी बुरी तरह से फंसे हुए थे । ऐसे ही एक दिन वे सुप्रसिद्ध अंबाजी मंदिर में दर्शन करने के लिए गए हुए थे ।

रास्ते में उनके पुरोहित वृंदावन शास्त्री का घर था । जो पहले उनके घर में पूजन आदि संपन्न करते थे साथ ही ज्योतिष का कार्य भी करते थे । लगभग 80 वर्ष की आयु के वृंदावन शास्त्री ने ज्योतिष तथा पूजन का कार्य छोड़ दिया था तथा एकांतवास कर रहे थे । हिमेश भाई ने उनको लगभग 2 एकड़ जमीन खरीद कर दी थी । जिसमें उनका एक छोटा सा आश्रम था । जिसमें वे रहा करते थे । उस आश्रम में एक देवी मंदिर था और यज्ञ शाला । साथ ही एक गौशाला । उनका अधिकांश समय भजन पूजन तथा यज्ञ में व्यतीत होता था । उनसे मिले भी काफी समय बीत चुका था । मंदिर से लौटते समय उन्होंने वृंदावन जी से भी चर्चा करने के विषय में सोचा और उनके आश्रम में पहुंच गए ।

आश्रम में पहुंचने के बाद उन्हें पता चला कि वृंदावन शास्त्री जी बहुत ज्यादा बीमार हैं और बिस्तर पर हैं ।

हिमेश भाई जब उनके कमरे में पहुंचे तब वह काफी गंभीर स्थिति में थे । उन्होंने सभी को कमरे से बाहर जाने के लिए कहा और हिमेश भाई को अपने पास बुलाया । शास्त्री जी बोले - हिमेश तेरे ऊपर बहुत भयंकर तांत्रिक प्रयोग हुआ है । तेरी ही किसी करीबी ने यह किया है । मुझे पता चला तो मैंने तेरे लिए अनुष्ठान में बैठने की कोशिश की थी । दो दिन तक तो सब ठीक चला लेकिन तीसरे दिन शायद उसे पता चल गया । जिसका परिणाम तू देख रहा है । अब मैं बहुत समय का मेहमान नहीं हूँ ।

तू किसी अच्छे तांत्रिक से मिलकर निराकरण का उपाय कर ! नहीं तो तेरा सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा ।

इतना कहकर बाबा ने आंखें मूंद ली.....

हिमेश भाई बुरी तरह घबरा गए !

उनको समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें ?

देवी देवताओं में और ज्योतिष में तो उनकी आस्था थी । लेकिन तांत्रिक प्रयोग और तंत्र-मंत्र में वे बहुत ज्यादा आस्था नहीं रखते थे । इसलिए उनका तांत्रिकों से मिलना जुलना भी नहीं के बराबर था । केवल वृन्दावन शास्त्री जी के पास वह पूजा पाठ के लिए तथा मुहूर्त देखने के लिए आया करते । इसके अलावा उनका आध्यात्मिक संबंध केवल सुबह शाम घर में लगी हुई राधा कृष्ण की मूर्ति के सामने हाथ जोड़ने तक सीमित था ।

आश्रम में वृन्दावन शास्त्री जी के दर्शन करने के बाद जब वे वापस लौट रहे थे तो रास्ते में एक बाबा पैदल जा रहा था । किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर उन्होंने उसे अपनी गाड़ी में बिठा लिया ।

बाबा लगभग 50 वर्ष की आयु का था ।

हट्टा कट्टा शरीर !

सुर्ख गोरा रंग !

चमकता हुआ भाल !!

दिप दिप करती हुई आंखें !!!

ऐसी आंखें जो लगता था भेद कर अंदर तक घुस
जाएंगे

मजबूत !

बलिष्ठ देह का स्वामी !!!

कमर में सिर्फ एक छोटी सी काली धोती ...

गले में रुद्राक्ष की चार पाँच मालाएँ

सिर पर लंबे लंबे बाल जो कंधे तक बिखरे हुए थे

हाथ में पीतल का चमकता हुआ त्रिशूल.....

कंधे पर लटका हुआ लाल रंग का झोला

एक नजर में ही तांत्रिक होने का पूरा आभास देता हुआ
व्यक्तित्व...

उसके व्यक्तित्व को देखकर हिमेश भाई को ऐसा लगा
कि शायद यह कोई समाधान निकाल पाएगा ।

उन्होंने रास्ते में एक ढाबे पर गाड़ी रोकੀ और बाबा से
भोजन ग्रहण करने का अनुरोध किया ...

बाबा बोला - दारु और गोश्त के बिना मैं भोजन नहीं करता । तू खिला पाएगा ?

हिमेश भाई शुद्ध शाकाहारी आदमी थे । उनके लिए यह बड़ा ही अटपटा सा प्रस्ताव था

उन्होंने अपने ड्राइवर को कहा - बाबा जो चाहता है उसे खिला दो ।

जैसा कि आप लोग जानते हैं गुजरात में शराबबंदी लागू है, लेकिन नशेड़ी अपनी राह निकाल लेते हैं । कुछ ढाबों पर इस प्रकार की व्यवस्था रहती है । ड्राइवर यह जानता था । इसलिए उसने हिमेश भाई को उस ढाबे पर उतारा और बाबा को लेकर थोड़ा आगे बढ़ गया ।

लगभग आधा किलोमीटर आगे एक छोटा सा ढाबा था । जहां पर सभी प्रकार की व्यवस्था रहती थी । ड्राइवर ने बाबा को भरपेट भोजन और दारु दोनों करवा दिया ।

बाबा तृप्त हो गया.....

बाहर निकलकर उसने सिगरेट पिलाने को कहा ।
ड्राइवर ने गोल्ड फ्लेक का पूरा पैकेट खरीद कर उसके हाथ में दे दिया । हिमेश भाई ने उसे बाबा का पूरा ध्यान रखने के लिए कहा था और साथ में पैसे भी दिए थे ।

अपनी हर मनचाही चीज मिलने से बाबा खुश हो गया और कुछ गुनगुनाने लगा

वापस लौटकर हिमेश भाई को लेने के बाद वापसी का सफर फिर से चालू हो गया । हिमेश भाई गुमसुम बैठे थे ।

बाबा ने पूछा - चिंता किस बात की है बच्चा ?

हिमेश भाई का सब्र का बांध टूट गया ।

वह फूट-फूटकर रो पड़े ।

उन्होंने अपना दुखड़ा बाबा के सामने कह सुनाया.....

तभी बाबा ज़ोर से गुराया - गाड़ी रोक ।

ड्राइवर ने हड़बड़ा कर गाड़ी रोक दी । सड़क के बाईं तरफ एक पुराना शिव मंदिर दिख रहा था । जो खंडहर जैसी अवस्था में पड़ा हुआ था । शायद ही कोई भक्त

वहां पर जाता होगा । लेकिन उसकी बनावट बता रही थी कि किसी समय वह काफी अच्छी अवस्था में रहा होगा

बाबा की कठोर आवाज गूंजी - हिमेश मेरे पीछे आ जा....

हिमेश भाई आश्चर्यचकित रह गए कि इसे मेरा नाम कैसे मालूम ?

किसी अदृश्य शक्ति के निर्देश जैसे वे गाड़ी से उतरे और बाबा के पीछे पीछे चल पड़े । ड्राइवर भी साथ में चलने लगा ...

बाबा फिर गुराया - तू गाड़ी के साथ रुक । हम 10 मिनट में आते हैं ।

बाबा हिमेश भाई को लेकर मंदिर के भीतर पहुंचा मंदिर में बहुत प्राचीन शिवलिंग था ...

शिवलिंग के सामने बाबा ने हिमेश भाई को खड़ा किया

बाबा ने हवा में हाथ लहराया

जल से भरा हुआ एक कलश तुरंत उसके हाथ में आ गया ।

उसने शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण करते हुए जल को
भगवान शिव पर समर्पित किया

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।

डमडुमडुमडुमन्निनादवडुमर्वयं,
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवो शिवम् ॥

जैसा कि आप लोग जानते हैं शिव तांडव स्तोत्र दशानन
रावण के द्वारा लिखा गया स्तोत्र है ...
रावण भगवान शिव का अनन्य भक्त था

जैसे-जैसे शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण आगे बढ़ता
जा रहा था ऐसा लगने लगा जैसे मंदिर के खंभों से डमरु
की ध्वनि निकलने लगी ...
पहले यह ध्वनि मंद मंद आ रही थी....

लेकिन जैसे-जैसे बाबा का उच्चारण आगे बढ़ता
गया

उसकी आवाज में गंभीरता और खनक भी बढ़ती चली गई ...

उसके साथ-साथ खंभों से आने वाली डमरु की ध्वनिया भी उतनी ही तीव्र होती चली गई ।

हिमेश भाई भय मिश्रित आश्चर्य के साथ इस घटना को घटित होते हुए देख रहे थे

अपने सामने चमत्कार देख रहे थे

उनको समझ नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है

स्तोत्र खत्म होते होते कलश का जल भी समाप्त हो गया और बाबा ने कलश को हवा में ऊपर उठाया और वहां से वह कलश गायब हो गया और उसके स्थान पर भस्म से भरा हुआ एक खप्पर उसके हाथ में आ गया

फिर बाबा के कंठ से अघोरेश्वर महादेव की स्तुति उच्चरित होने लगी.....

ॐ अघोरेभ्यो अथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः

उस भस्म को शिवलिंग पर समर्पित करने के बाद उसी भस्म का टीका उन्होंने हिमेश भाई के माथे पर लगा दिया ।

भावनावश हिमेश भाई बाबा के चरण स्पर्श करने के लिए झुके ।

बाबा ने हिमेश भाई की पीठ पर एक मुक्का जमा दिया और वह लड़खड़ा कर गिर पड़े !

फिर हड़बड़ा कर उठे !

तब तक बाबा वहां से गायब हो चुका था !

उन्होंने मंदिर को चारों तरफ से देखा लेकिन बाबा वहाँ कहीं दिख नहीं रहा था ...

बाहर निकलकर चारों तरफ देखा....

मंदिर के चारों तरफ खुली जगह थी ...

दूर-दूर तक बाबा का कोई नामोनिशान नहीं दिख रहा था ...

फिर वह मंदिर में आए....

मंदिर के अंदर शिवलिंग मात्र था !
कोई अलग से बना हुआ गर्भगृह नहीं था ।
चार खंभे थे और उसके बीच में शिवलिंग स्थापित था ।
कहीं कुछ भी दरवाजे जैसा भी नहीं दिख रहा था
तो आखिर बाबा कहां गया ???????

यह हिमेश भाई के लिए आश्चर्य का विषय था ।
आखिर वे सर पकड़ कर जमीन पर बैठ गए । जब
15-20 मिनट तक हिमेश भाई नहीं दिखे तो ड्राइवर
उनको ढूंढते हुए आया । उसने देखा हिमेश भाई सर
पकड़कर सीढ़ियों पर बैठे हुए हैं । उसने उन को पानी
पिलाया। हिमेश भाई थोड़ा संयत हुए ।

ड्राइवर ने पूछा - बाबा कहां गया ?
उन्होंने पूरी कहानी कह सुनाई । ड्राइवर भी आश्चर्य
चकित रह गया उसने भी अपनी तरफ से आसपास चारों
तरफ देखा मगर दूर दूर तक कुछ भी नहीं दिख रहा था ।
फिर दोनों वापस गाड़ी की तरफ लौटे

गाड़ी के अंदर बाबा बैठा हुआ था
गाड़ी लॉक थी

लेकिन बाबा अंदर बैठा हुआ था । ड्राइवर और हिमेश भाई दोनों ने बाबा के चरण पकड़ लिए ...

तीनों गाड़ी में बैठ गए और गाड़ी आगे बढ़ गई ।

अगले मोड़ पर बाबा ने गाड़ी रुकवाई और नीचे उतर गया बोला- बस मेरी मंजिल आ गई ।

अपने झोले में हाथ डालकर बाबा ने कुछ निकाला ।

उसे हिमेश भाई को देते हुए बाबा ने कहा - बेटा यह रुद्राक्ष रख

भगवान शिव तेरा कल्याण करें ...

उसने एक मटर के दाने के आकार का रुद्राक्ष हिमेश भाई को दिया ...

और कहा - इसे हमेशा अपनी जेब में रखना ।

उतरकर बाबा ने सड़क पार की ...

उसके बाद एक बस तेजी से गुजरी बस पार होने के बाद दोनों ने देखा कि बाबा फिर गायब था ।

दूर-दूर तक उनका कोई नामोनिशान नहीं था

कुछ देर वे देखते रहे फिर गाड़ी लेकर चल पड़े ।

घर पहुंचने के बाद भी उमेश भाई काफी देर तक सोच में बैठे रहे

फिर उन्होंने जेब में पड़े हुए रुद्राक्ष को हाथ में निकाल कर रखा और उसे देखने लगे

तभी उनके फोन की घंटी बजी.....

फोन उठाया तो यह आश्चर्य चकित रहे गए दूसरी तरफ मीठालाल था । वही मीठालाल जो पिछले 1 महीने से लापता था !

वही मीठालाल फोन के दूसरी तरफ था.....

मीठा लाल ने जो बताया वह भी बेहद अजीब था ।

उसने बताया - मैं पैसे लेकर अंडरवर्ल्ड के लोगों से स्मगलिंग का हीरा खरीदने के लिए ट्रेन में बैठकर सूरत से मुंबई जा रहा था । मेरे साथ 3 लोग और थे इकबाल, मनोज और जिग्नेश । हमने फ़र्स्ट एसी का एक कूपा बुक किया हुआ था । रात में लगभग 11:30 बजे सो गए । उसके बाद क्या हुआ कुछ पता नहीं चला । जब आंख खुली तब मैंने अपने आप को एक छोटे से कमरे में पाया । कमरे में मैं अकेला था । बाकी तीनों लोग पता नहीं कहां थे ।

उस कमरे को इस तरह से बनाया गया था कि उसमें कोई खिड़की नहीं थी और दरवाजे पर दो लोग पहरा देते रहते थे । मैंने काफी कोशिश की लेकिन वहां से नहीं निकल पाया ।

आज न जाने कहाँ से एक बाबा जिसके हाथ में त्रिशूल था । वह दरवाजा खोलकर अंदर आया और मुझे वहां से बाहर निकाल दिया । बाहर के दोनों पहरदार बेहोश पड़े थे । निकलते ही सबसे पहले मैंने आपको फोन किया

हिमेश भाई ने लोकेशन बताने के लिए कहा । उसे मुंबई में अंधेरी के पास एक मॉल के अंडरग्राउंड गोडाउन में छुपा कर रखा गया था

हिमेश भाई ने अपने आदमियों को खबर की । आधे घंटे में वे वहाँ पहुँच गए और लगभग आधे से ज्यादा पैसे बरामद हो गए

हिमेश भाई इस घटना से बेहद आश्चर्यचकित हुए और उन्हें सुबह मंदिर जाना और उस बाबा से मिलना सब कुछ याद आया ।

वे समझ गए कि यह चमत्कार बाबा ने किया है

उन्होंने ड्राइवर को तलब किया और उसे पूरा इलाका छान मारने के लिए कहा और किसी भी तरह से उस बाबा को खोज लाने के लिए कहा ।

ड्राइवर उसी शिव मंदिर के पास पहुंचा और वहां लोगों से पूछताछ चालू की लेकिन किसी ने भी बाबा को नहीं देखा था । वापस वह मंदिर की ओर ढूंढते ढूंढते गया । पूरा दिन गुजर गया लेकिन बाबा का सुराग नहीं मिला । आखिरकार रात को जब वह निराश होकर घर लौट रहा था । तब उसे सड़क के किनारे बाबा अपनी मस्ती में जाता हुआ दिख गया । वह गाड़ी रोककर उसके चरणों में लोट गया और बोला कि बाबा सेठ जी आपसे मिलना चाहते हैं आप घर चलो.....

बाबा बोले - तेरे सेठ का काम तो हो गया फिर मुझे क्यों घर ले जाना चाहता है ...

ड्राइवर भी चतुर था उसने कहा - सेठ जी आप का धन्यवाद करना चाहते हैं ।

बाबा जोर से हंसा और बोला - चल तेरे सेठ को भी देख लेते हैं ।

ड्राइवर ने बाबा के मिलने की खुशखबरी सेठ को सुनाई वह बेहद खुश हुए । हिमेश सेठ के आउटहाउस में बाबा के ठहरने की व्यवस्था की गई । बाबा के आउट हाउस पहुंचते ही हिमेश भाई उनके चरणों में लोट गए और पूरी बात कह सुनाई ।

बाबा सिर्फ मुस्कुरा कर रह गए बोले - सब उसकी माया है । भोलेनाथ पता नहीं कब किससे क्या करवा दें ।

हिमेश सेठ ने आउट हाउस में बाबा के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध करा दी । दो नोकर हमेशा उनकी सेवा में लगे रहते । जो जो उन्होंने मांगा वह सब कुछ हिमेश ने उपलब्ध करा दिया । बाबा लगभग एक हफ्ते तक वहां रहे ।

हफ्ते भर के बाद एक दिन बाबा ने कहा कि अब मैं जाना चाहता हूँ ।

हिमेश ने कहा - बाबा आप बहुत ज्ञानी हो ! आपकी कृपा से मेरा व्यापार डूबते डूबते बचा है ! आप कुछ ऐसा कर दो कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जाए ।

बाबा ने हामी भर दी । उसने कहा - मुझे तुम्हारे लिए उपाय सोचने के लिए एक दिन का वक्त चाहिए ।

बाबा ने कड़ी आवाज में चेतावनी दी - इस पूरे दिन में कोई भी आदमी आउटहाउस के अंदर नहीं आना चाहिए । बाहर में भले ही तुम आदमियों का पहरा बैठा दो । लेकिन

किसी भी हालत में आउटहाउस के अंदर कोई भी नहीं आना चाहिए । अगर गलती से कोई भी ...

चाहे वह तुम्हारे परिवार का ही सदस्य क्यों ना हो

उस आउट हाउस में आ गया तो अगले एक महीने तक उसे मेरे साथ मेरी सेवा में रहना पड़ेगा और जो भी मैं बोलूँ वह उसे करना पड़ेगा

अगर तुम्हें यह शर्त मंजूर हो तो मैं उपाय ढूँढने की कोशिश करूँगा

हिमेश भाई ने अपनी पत्नी की तरफ देखा वह भी बाबा के चमत्कार से प्रभावित थी । उसे शर्त अटपटी तो लगी ।

लेकिन... आउटहाउस में न जाना कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी ।

इसलिए उसने स्वीकार कर लेने की बात का इशारा हिमेश भाई को कर दिया ...

हिमेश भाई ने बाबा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया ।
सृष्टि में एक शब्द है “भवितव्यता”

जिसका मतलब होता है वह घटना जो घटित होने वाली है

सामान्यतः जो घटना घटित होने वाली होती है उसे रोकने का प्रयास करने पर भी वह घटित होती है यही भवितव्यता है ।

ऐसा ही कुछ हिमेश भाई के साथ भी घटित होने वाला था

हिमेश भाई ने अपने 4 नौकरों को आउट हाउस के बाहर तैनात कर दिया । बाबा ने जिन जिन चीजों की मांग

की थी । वह सारी चीजें कमरे के अंदर पहुंचा दी गई ।

उसके बाद बाहर के दरवाजे में दो नौकर खड़े हो गए ।
उस आउटहाउस में दो दरवाजे थे । एक दरवाजा सामने
बाहर की तरफ था और एक दरवाजा पीछे की तरफ
था । दोनों दरवाजों पर दो-दो नौकर पहरे पर तैनात कर
दिए गए.....

शाम तक सब कुछ शांत रहा

अंदर से कुछ मंत्रोच्चारण जैसी आवाजें आती रही....

रात के लगभग 9 बजे थे

अचानक किसी महिला के बात करने और खिलखिलाने
की आवाजें पानी चालू हो गई । ऐसा लग रहा था जैसे
कोई प्रेमी जोड़ा आपस में गुटर गू कर रहा हो

आउटहाउस के बाहर खड़े हुए नौकर चौकन्ने हो गए ...
लेकिन.....

निर्देश मिला था इसलिए वे बाहर ही खड़े रहे । लगभग
10 बजे के आसपास आउटहाउस के अंदर घुंघरू की
आवाज आने लगी

गाने की आवाज आने लगी.....

सरे राह चलते चलते चलते चलते

मुझे कोई मिल गया था

मुझे कोई मिल गया था

ऐसा लग रहा था

जैसे कोई कोठा हो और कोई तवायफ तबले की थाप
पर अपना नृत्य प्रस्तुत कर रही हो

आवाजे हिमेश भाई की कोठी तक जा रही थी....
लेकिन सबको पता था कि उधर हीं जाना है ...

वह प्रबल इच्छा होने के बावजूद अपने आप को रोक
कर कोठी में ही मौजूद थे

तेजल हिमेश भाई की इकलौती लड़की थी । वह
ऑस्ट्रेलिया में रह कर अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई
कर रही थी । उसे देश में हो रही घटनाओं के बारे में
जानकारी थी ।

वह वापस आना चाहती थी ...

लेकिन हिमेश भाई उसे बार-बार रोकते रहे

यहां होने वाली परेशानियों से वह उसे दूर रखना चाहते थे । तेजल का मन आस्ट्रेलिया में रहने के लिए नहीं मान रहा था । उसे लग रहा था कि उसके पिताजी परेशानी में है ।

ऐसे समय में उसे उनके साथ होना चाहिए ।

तेजल पढ़ने में शुरू से ही तेज थी । उसे इंजीनियरिंग में रुचि थी । उसके पढ़ने की रुचि को देखते हुए हिमेश भाई ने उसे हमेशा प्रोत्साहित किया और वह भी भरपूर मेहनत करके हमेशा अपने स्कूल में अव्वल आती रही ।

उसने आईआईटी मुंबई से कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की ।

उसके बाद अपनी योग्यता के कारण ऑस्ट्रेलिया में मास्टर डिग्री करने के लिए गूगल के साथ हुए अनुबंध के आधार पर गई हुई थी

आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि खूबसूरत युवतियों का बौद्धिक सामर्थ्य बहुत ज्यादा नहीं होता है और यदि

किसी सौन्दर्यशालिनी युवती मे बुद्धि का भी प्राबल्य हो
तो उसे अद्भुत मानते हुए उसे

द ब्यूटी विद ब्रेन

कहा जाता है

तेजल इस मापदंड पर खरी उतरने वाली युवती
थी

तीखे नाक नक्श वाली तेजल !

गोरे रंग की थी ।

जैसे दूध मे हल्का सा केसर मिला दिया गया हो

उसकी आंखें कमल की पंखुड़ियों की तरह

बेहद सुंदर और आकर्षक थीं

उसके गोल गोल गोरे कपोल ऐसा लगता जैसे छूते ही
लाल हो जाएंगे ।

कंधों तक बिखरे हुए लहराते हुए काले घुंघराले बाल

उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा देते थे ...

हल्की लालिमा लिए हुए होंठ किसी फिल्मी हीरोइन की तरह बेहद आकर्षक थे ।

लगभग 5 फुट 8 इंच लंबी तेजल शारीरिक रूप से भी बेहद सुंदर थी । उन्नत वक्ष स्थल और विस्तृत नितंब वाली उसकी देहयष्टि बिल्कुल वैसी ही लगती थी जैसे खजुराहो में लगी हुई प्रतिमाओं में से कोई अप्सरा निकल कर जमीन पर आ गई हो ।

भगवान ने उसे देने में कोई कमी नहीं की थी । इतने अद्भुत सौंदर्य तथा बुद्धि शालिनी होने के साथ-साथ उसकी आवाज भी कोयल की आवाज जैसी थी ... बेहद मीठी

जब वह बोलती तो ऐसा लगता जैसे कानों में शहद घुल गया

मासूम बच्चे जैसी सरल सहज मधुर मीठी सी उसकी आवाज और उसका आकर्षक व्यक्तित्व सब कुछ ऐसा था जैसे भगवान ने इसे बेहद फुर्सत में गढ़ा हो

अपने आप में लाखों-करोड़ों में एक

जैसे स्वर्ग से साक्षात कोई अप्सरा या किन्नरी मानव देह धारण करके पृथ्वी लोक पर उतर आई को.....

ऑस्ट्रेलिया में सारी खबरें सुनने के बाद उसने अपने आप को रोकने की काफी कोशिश की । लेकिन उसका मन नहीं माना

और वह बिना घर वालों को बताएं वापस भारत आ गई थी ।

उस रात करीब 10 बजे वह सूरत पहुंची और उसके बाद टैक्सी करके घर आ गई ...

उस समय लगभग 10:30 बज चुके थे जब उसने अपने घर के दरवाजे के पास कदम रखा.....

उधर दूसरी तरफ बाबा के तरफ नजारा कुछ और था

आउट हाउस में बजने वाली घूंघरु की ध्वनिया अब ज्यादा उत्तेजक ध्वनियों और सिसकारियों में बदल चुकी थी

काफी देर से अपने आप को रोकने की कोशिश करने वाले दोनों नौकर खिड़कियों से अंदर झांकने की कोशिश कर रहे थे

लेकिन उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था

अंदर की आवाज को सुनकर जब उनसे रहा नहीं गया ...

तो वह सारे निर्देशों को भूल गए ...

और सामने का दरवाजा खोलकर अंदर घुस गए

ठीक वही समय था, जब तेजल ने मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश किया ... दरबान ने अदब के साथ उसे सलाम कर गेट खोल दिया ।

वह अंदर प्रवेश कर गई

सब लोग दरवाजा बंद करके कोठी में अंदर बैठे हुए थे

इसलिए उनमें से किसी को भी तेजल के आने का पता नहीं चला...

तेजल ने जैसे ही गेट के अंदर कदम रखा । उसे अजीब सी आवाजें आउटहाउस की तरफ से आती हुई लगी ।

अनायास ही वह उस ओर जाने लगी

जब वह आउट हाउस के पास पहुंची तो उसने
देखा

दरवाजा खुला हुआ है

वह अपनी उत्सुकता को ना रोक सकी.....

कमरे के अंदर से आवाजों के आने का सिलसिला जारी
था

दोनों नौकर कमरे के दरवाजे के पास अपने अपने कान
लगाए सुनने और जानने की कोशिश करते हुए खड़े
थे

तेजल जैसे ही दरवाजे के अंदर घुसी

नौकरों के होश उड़ गए.....

तभी अंदर से बाबा की कड़कती आवाज आई - कौन
है...

दोनों नौकर दुम दबाकर वहां से भाग खड़े हुए....

उन्हें भागता देख कर तेजल भी मुड़ कर उल्टे पांव आउट हाउस से बाहर आ गई ...

उन आवाजों का सिलसिला रात भर जारी रहा ...
नौकर डर के मारे आउट हाउस के सामने ही खड़े रहे ।
दोबारा उन्होंने अंदर घुसने की हिमाकत नहीं की !
लेकिन जो होना था वह तो हो चुका था.....

भवितव्यता अपना काम कर चुकी थी....

तेजल घर के अंदर घुसी और जाकर अपने कमरे में सो गई ।

उसे नहीं पता था कि

उसकी जिंदगी में कितना बड़ा तूफान आने वाला है.....

अगले दिन सुबह हिमेश भाई के जीवन में भी एक बहुत बड़ा तूफान आने वाला था

सुबह लगभग 8 बजे इमेज भाई आउट हाउस पहुंचे ।

नौकरों ने बताया कि बाबा उठ चुके हैं ।

हिमेश भाई दरवाजे पर चहलकदमी करते खड़े रहे

लगभग आधे घंटे के बाद अंदर से आवाज आई - आ जाओ हिमेश.....

हिमेश भाई तुरंत अंदर की ओर लपके

बाबा स्नान ध्यान आदि से निवृत्त होकर सोफे पर पसरा हुआ था ...

कमरे के अंदर से चमेली के फूलों की खुशबू आ रही थी

ऐसा लग रहा था जैसे चमेली की खुशबू वाला रूम फ्रेशनर पूरे कमरे में स्प्रे कर दिया गया हो

हर तरफ चमेली की खुशबू ! बेहद मादक खुशबू !! फैली हुई थी

बिस्तर पर चमेली के फूल बिखरे पड़े थे ।
चादर में सलवटो के निशान मौजूद थे
जो रात की कहानी बयां कर रहे थे

तिरछी नजरों से हिमेश भाई ने पूरे कमरे का मुआयना किया लेकिन उनकी समझ में नहीं आया की यह कैसे संभव है ???

कमरे के अंदर तो केवल बाबा था

उनकी अनुमति या जानकारी के बिना आउटहाउस में कोई आ नहीं सकता था

कमरे के अंदर की परिस्थितियां बता रही थी कि कोई न कोई रात में कमरे में मौजूद जरूर था और यहां वह सब घटित हुआ जो रात में घटित होता है.....

कई प्रकार के विचार उनके मन में आते जाते रहे लेकिन वे हाथ जोड़कर बैठे रहे

बाबा सोफे पर पसरे हुए थे ।

शून्य में ताकते हुए

जैसे कुछ अज्ञात को तलाश रहे हों

हिमेश भाई बाबा के बोलने का इंतजार करते हुए हाथ जोड़े बैठे रहे.....

लगभग 10 मिनट के बाद बाबा ने चुप्पी तोड़ी -

हिमेश बोल तेरा क्या विचार है ?

हिमेश भाई बोले - बाबा कुछ उपाय निकला ?

बाबा के चेहरे पर कुटिल मुस्कान उतर आई और उन्होंने कहा - तुझे मेरी कल वाली शर्त याद है ?

हिमेश भाई बोले - हां बाबा याद है ?

बाबा बोला - तुझे कोई आपत्ति तो नहीं है ।

हिमेश भाई को तेजल के आने का पता नहीं था

इसलिए उन्होंने सहमति में सिर हिलाया ।

बाबा फिर बोले - तेरी समस्या का समाधान भी उसी की वजह से निकलेगा । जो कल रात इस आउट हाउस में आया था ।

जैसा कि मैंने तुझे कहा था

उसे मेरे साथ महीने भर रहना पड़ेगा

मैं जो कहूं उसका पालन उसे करना पड़ेगा ।

यह सुनकर हिमेश भाई को थोड़ा सा संशय हुआ कि बाबा ऐसा क्यों कह रहे हैं !

मैंने तो नौकरों को लगाया था !

वो तो मेरे यहां नौकरी कर रहे हैं !

अगर मैं उन्हें 30 दिन बाबा की नौकरी करने कहूंगा तो वह चले जाएंगे । इसमें दिक्कत वाली क्या बात है ?

फिर यह बाबा बार-बार ऐसा क्यों कह रहे हैं ...

बाबा फिर बोले - तेरे घर का कोई सदस्य भी कल
आउटहाउस में आया था

उस पर भी मेरा वही नियम लागू होगा....

तेरी समस्या का समाधान भी उसी के माध्यम से
होगा

तू बात कर ले कि क्या वह इसके लिए राजी है

जा घर जा और पूछ ले ।

फिर आकर बताना.....

अब ! हिमेश भाई का माथा ठनका !!!

उनके परिवार में पत्नी के अलावा कोई नहीं था ।

पत्नी तो रात भर उनके साथ थी ।

उसके अलावा उनके परिवार में एक ही सदस्य बचा और
वह थी तेजल.....

उनकी इकलौती बेटी

उनके दिमाग में तेजल का ख्याल आया !

कहीं वह तो नहीं आ गई

वह तुरंत अपनी कोठी की तरफ गए

दरवाजे पर तेजल खड़ी थी

उसे देखते ही हिमेश भाई के चेहरे का रंग उड़ गया।
वह उसे लेकर अंदर आए और सोफे पर सर पकड़ कर
बैठ गए

तेजल की भी समझ में नहीं आया कि क्या हुआ ??
उसने कई बार पूछा मगर हिमेश भाई ने कोई जवाब
नहीं दिया ।

तब तक उनकी पत्नी भी बेडरूम से उठकर आ चुकी थी
।

हिमेश भाई की हालत देखकर वह भी सकते मे आ गयी
और तेजल को अचानक अपने सामने देखकर हैरत में
पड़ गई ।

उसने हिमेश भाई से पूछा - क्या हुआ ?

हिमेश भाई उसी प्रकार सर पकड़ कर बैठे रहे ।

लगभग 15 मिनट के बाद उन्होंने तेजल से पूछा - तू कब
आई ?

तेजल ने बताया - रात को...

हिमेश भाई ने पूछा - तुझे तो मैंने आने के लिए मना
किया था बेटा ! फिर तू क्यों आ गई ?

तेजल - मुझसे वहां रहा नहीं गया । ऐसे समय में मैं आप लोगों के साथ रहना चाहती थी...

हिमेश - रात को तू आउटहाउस गई थी क्या?

तेजल पहले झिझकी फिर बोली - हां ! अजीब अजीब सी आवाजें आ रही थी । मैं उसे देखने के लिए वहां पहुंची थी । तभी अंदर से किसी ने डांट लगाई तो मैं वापस आ गई । कौन है पिताजी वहां पर

हिमेश भाई ने सारी कहानी शुरू से लेकर आखिर तक सुना डाली ।

यह भी बताया कि किस प्रकार से सभी तरफ से मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था और बाबा के आने के बाद कैसे समस्याएं धीरे-धीरे हल होती जा रही थी और परिस्थितियां अनुकूल हो रही थी ।

उसके बाद उन्होंने बाबा की कल रात की शर्त भी बताई ।

यह सुनकर तेजल के पांव तले जमीन खिसक गई....

एक अनजान आदमी

वह भी एक बाबा के साथ

एक महीने गुजारना कोई आसान बात बिल्कुल नहीं थी ।

मर्यादा !

सीमा !

इत्यादि ! इत्यादि ! का बंधन मध्यमवर्गीय परिवारों में ज्यादा होता है । उच्च वर्ग के परिवारों में स्वच्छंद व्यवहार होता है क्योंकि वे आर्थिक रूप से संपन्न होते हैं और उनको रोकने वाला कोई नहीं होता । वे जो करें वह जायज है ...

इसीलिए शायद तुलसीदास जी भी कहा गए थे कि

समर्थ को नहिं दोष गुसाई

अर्थात् जो सामर्थ्यवान या संपन्न होता है उसके द्वारा किए गए किसी भी कार्य को गलत नहीं माना जाता ।

ठीक इसी प्रकार से जो आर्थिक रूप से निम्न वर्ग में आते हैं !

मजदूर वर्ग के लोग !

उनके बीच भी बहुत ज्यादा मर्यादा की सीमाएं नहीं होती है ।

जाति भेद का बंधन भी नहीं होता है ।

होता भी है तो बहुत ज्यादा नहीं होता

एक तरह से देखें तो उनमें भी पर्याप्त मात्रा में स्वच्छंद व्यवहार देखने को मिलता है । इसकी वजह यह भी है कि उनके पास इतना काम रहता है कि उन्हें दूसरों के मामले में ज्यादा टांग अड़ाने की फुर्सत ही नहीं रहती.....

समाज के इन दो सिरों के बीच में जो आता है वह है मध्यम वर्ग ।

संस्कार, जाति, से लेकर.....

क्या करना चाहिए ?

क्या नहीं करना चाहिए ?

लोग क्या कहेंगे ?

क्या सोचेंगे ?

जैसे तमाम चाहे अनचाहे सवालों का जवाब ढूंढने का पूरा जिम्मा इसी वर्ग का होता है

उच्च वर्ग और निम्न वर्ग दोनों अपने अपने हिसाब से जिंदगी जी कर निकल जाते हैं.....

मध्यमवर्ग वाला दूसरों को खुश करने के चक्कर में न तो स्वयं खुश हो पाता है और ना ही दूसरों को खुश कर पाता है ...

इसी ऊहापोह में वह अपनी जिंदगी पूरी करके निकल जाता है ।

तेजल एक बड़े खानदान की लड़की थी....

उच्च वर्गीय संभ्रांत परिवार की खूबसूरत युवती

पढ़ी लिखी थी और स्वच्छंद वातावरण में रही थी ।

इसलिए सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करते हुए वह बड़ी हुई थी ।

वह एक ऐसे समाज का हिस्सा थी जहां बॉयफ्रेंड

गर्लफ्रेंड तथा ड्रिंक्स लेना सामान्य क्रियाकलापों में से माना जाता है ।

इसलिए वह भी कोई अपवाद नहीं थी.....

यूं समझ लीजिए कि वह दुनियादारी के संपूर्ण ज्ञान से युक्त युवती थी....

कहानी सुनने के बाद उसे यह तो समझ में आ गया था की बाबा बेहद समर्थ और शक्तिशाली व्यक्ति है ।
उसने अपनी साधना की क्षमताओं के बल पर उसके पिता के लगभग समाप्त हो चुके व्यवसाय को कुछ ही दिनों में वापस खड़ा कर दिया था....

उधर हिमेश भाई की यह सोच सोच कर हालत खराब हो रही थी कि अपनी इकलौती बेटी को इस अनजान बाबा को कैसे सौंप दें

दिल में यह लालच भी था कि अगर बिजनेस समाप्त हो जाएगा तो बचेगा क्या ?

दोनों ही स्थितियां बहुत दुखद थी ।

लेकिन !

एक बाप के लिए यह फैसला लेना बहुत मुश्किल था

काफी चिंतन मनन के बाद हिमेश भाई तथा पत्नी चर्चा करने के लिए बैठे

साथ में तेजल भी थी ...

माता-पिता की कश्मकश की स्थिति को देखकर

तेजल ने खुद प्रस्ताव को स्वीकार करने की बात
कही

लेकिन अभी भी हिमेश भाई कोई निर्णय नहीं ले पा रहे
थे ।

इसी कशमकश में दोपहर हो गई । लेकिन कोई निर्णय
नहीं निकल पाया ...

दोपहर के खाने का समय हो गया था ।

जब नौकर खाना लेकर बाबा के कमरे में पहुंचा तो
यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया कि कमरा खाली पड़ा
था....

वह दौड़कर कोठी की ओर गया और हिमेश भाई को
जानकारी दी कि बाबा अपने कमरे में नहीं हैं ।

हिमेश भाई उनकी पत्नी और तेजल तीनों बाबा के कमरे
की ओर गए और अद्भुत आश्चर्य कमरे में बाबा और
उसका सामान सब के सब गायब थे

बिस्तर पर जो चमेली के फूल बिखरे हुए हिमेश भाई ने
देखे थे वह भी गायब थे

सलीके से चादर बिछी हुई थी ऐसा लग रहा था जैसे उस पर कोई सोया ही ना हो

बाबा गायब हो चुका था

अब समस्या के समाधान की संभावनाएं समाप्त होती हुई दिखने लगी थी ।

जिससे हिमेश भाई फिर से परेशान हो गए ।

उनकी पत्नी को भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें ।

तेजल भी समझ नहीं पा रही थी कि क्या करें ?

बाबा चुपचाप चला गया था

इससे हिमेश भाई अंदर ही अंदर थोड़े खुश भी थे कि उन्हें तेजल को बाबा को नहीं सौंपना पड़ा ।

यह खुशी बहुत देर तक नहीं टिक पाई ।

हफ्ता बीतते बीतते परेशानियों का सिलसिला फिर चालू हो गया । अबकी बार ईडी के अधिकारी छापा मारने पहुंच गए ।

उधर सूरत के शोरूम में भी इनकम टैक्स की छापेमारी चल रही थी । हिमेश भाई ने अपने सभी राजनीतिक

सूत्रों का इस्तेमाल कर लिया लेकिन कोई भी मदद करने की स्थिति में नहीं था । सीधे गृह मंत्रालय के हस्तक्षेप से सारे काम हो रहे थे । जिसके कारण स्थानीय स्तर पर कोई भी हाथ लगाने को तैयार नहीं था । यहां तक कि राज्य के मंत्रियों ने भी किसी प्रकार के हस्तक्षेप से इंकार कर दिया क्योंकि सभी के काले कारनामों की फाइल गृह मंत्री के पास मौजूद थी और उसके मामले में कोई भी हाथ नहीं डालना चाहता था.....

दस दिन बीतते बीतते यह स्थिति हो गई

कि हिमेश भाई और परिवार को अंडरग्राउंड होना पड़ा ।

अब हिमेश भाई को फिर से बाबा याद आने लगा

उसने अपने ड्राइवर को किसी भी तरह उसे ढूंढ लाने के लिए भेजा ।

लगभग 5 दिन की खोजबीन के बाद ड्राइवर का फोन आया । उसे बाबा अक्षरधाम मंदिर जाने के रास्ते में श्मशान में मिल गया था । वह श्मशान में अकेला बैठा

हुआ था और एक कब्र के चबूतरे पर बैठकर गांजे की चिलम फूंक रहा था

उसके साथ बैठी थी !

एक 35 साल की महिला !

जो उसके साथ ही चिलम का सुट्टा खींच रही थी ।

ड्राइवर ने सबसे पहले हिमेश भाई को फोन लगाया

। फोन पर सारी बात बताने के बाद उसने शमशान

का पता भी बताया और फिर वापस वही जाकर खड़ा

हो गया । लेकिन उसके वापस आते तक बाबा फिर

गायब हो चुका था । केवल वह महिला वहां खड़ी थी

।

ड्राइवर ने पूछा - बाबा कहां गया ?

महिला ने कहा - बाबा बता कर नहीं जाता

उसकी जहां मर्जी होगी वहां चला गया होगा ।

ड्राइवर ने फिर पूछा- क्या आप उनको जानते हो?

महिला ने जवाब दिया - हां ! मुझसे मिलने बीच-बीच

में आता रहता है । तुझे उससे क्या काम है ? बच के

रहना वह नरबलि भी देता है । तुझे पता भी नहीं चलेगा

तू बलि चढ़ जाएगा

इतना कहकर वह भयानक अट्टहास करने लगी । ड्राइवर
वहां से प्राण बचाकर भागा । उसने पीछे मुड़कर देखा
तो वह महिला भी वहां से गायब हो चुकी थी

उसने फोन करके सेठ को पूरी बात सुनाई ।

अगले दिन सेठ अपनी पत्नी और तेजल के साथ मसान
घाट पहुंचा ।

सुबह के 10 बजे थे ।

वहां पर कोई नहीं था

देखते देखते दोपहर के दो बज गए

बाबा का कोई नामोनिशान दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे
रहा था ।

ड्राइवर चारों तरफ घूम घूम के देख रहा था !

लेकिन बाबा कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था ।

लगभग 3 बजे वह महिला फिर से दिखाई दी , उसे

देखते ही ड्राइवर ने सेठ को बताया कि यह वही महिला
है जो कल बाबा के साथ बैठी थी ।

सेठ उसकी ओर लपका और उसके चरणों में गिर गया ।

हिमेश करुण स्वर मे बोला - कैसे भी बाबा से मिलवा दो । आपका बड़ा एहसान होगा मैं बहुत मुसीबत में हूँ ।

उसने घूर कर हिमेश को देखा । उसकी लाल-लाल आंखें देखकर हिमेश की बची खुची हिम्मत भी जवाब देने लगी । वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । उस महिला ने खींचकर एक तमाचा हिमेश की गाल पर मारा और उसके सीने पर एक लात मारकर एक ओर बढ़ गई ।

उसकी लात इतनी जबरदस्त थी कि वह पलट कर पीछे की ओर गिर पड़ा ।

तभी मशान के दूसरे हिस्से में बाबा दिखाई दिया ...

वह महिला उसी की ओर बढ़ रही थी ...

बाबा फिर जाकर अपने चबूतरे पर बैठ गया और उसके साथ में वह महिला भी ।

दोनों सारी दुनिया से बेखबर होकर गांजे की चिलम फुंकने लगे ।

बाबा को देखते ही हिमेश भाई को ऐसा लगा जैसे लॉटरी लग गई हो

वह तेजी से बाबा की ओर दौड़ा । गिरते पड़ते जब वह बाबा के पास पहुंचा ।

बाबा ने उड़ती हुई नजर से उसकी ओर देखा और पूछा - तू मेरा पीछा क्यों कर रहा है ।

हिमेश भाई ने पांव पकड़ लिए और कहा - बाबा अब आप ही मेरा सहारा हो !

मैं बर्बाद हो गया !

मैं सड़क पर आ जाऊंगा ।

बाबा बोला - तुझे तो मेरी शर्त मंजूर नहीं है फिर मैं तेरी मदद कैसे करूं ।

तब तक तेजल भी वहां पहुंच चुकी थी उसने बाबा को हाथ जोड़े और कहा - मुझे आपकी शर्त मंजूर है ।

बाबा ने गहरी नजरों से उसकी तरफ देखा बोला - एक महीने तक तू मेरी दासी बनकर रहेगी । मैं जो बोलूंगा वह तुझे करना पड़ेगा । तुझे मंजूर है ?

तेजल बोली - मुझे मंजूर है ।

बाबा ने एक जोर का ठहाका लगाया और कहा - अपने बाप से पूछ ले ! उसे मंजूर नहीं है !!!
उसकी मंजूरी के बिना मैं तुझे नहीं ले जा सकता ।

तेजल बोली - उन्हें भी मंजूर है ।

बाबा ने प्रश्नवाचक निगाहों से हिमेश भाई की ओर देखा उन्होंने बड़े दुख भरे हृदय के साथ सहमति में सिर हिलाया ।

बाबा - ठीक है ! आज रात को अनुष्ठान करेंगे ।
बाबा ने सामान की लिस्ट सौंपी । शाम तक ड्राइवर सारी चीजों की व्यवस्था करके ले आया । दारु की बोतल और ढेर सारी पूजा सामग्री के साथ एक काले रंग का बकरा भी था

उस दिन उस मसान घाट में आने वाली आखिरी लाश एक लावारिस भिखारिन की थी । जो रेलवे स्टेशन के बाहर भीख मांगती थी । एक दिन वह सड़क पर बेहोश मिली । उसे जिला अस्पताल में भर्ती करा दिया गया । वहां पता चला कि उसे आखिरी स्टेज का कैंसर है । 15 दिन में उसकी मौत हो गई । उसका कोई नाम लेवा

नहीं था फिर जलाने के लिए किसी के आने की बात तो बहुत दूर की है । लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करने वाली संस्था श्रद्धांजलि ने उसका अंतिम संस्कार किया था ।

बाबा की सहयोगी महिला मसान घाट में बैठी हुई थी जिस पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया लेकिन वह अपना काम कर चुकी थी ।

दाह संस्कार करते करते शाम के 5 बज गए थे लेकिन उनकी भी समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा था । लकड़िया पूरी डाली थी और सूखी लकड़ियां थी ... लेकिन

लाख कोशिश करने के बाद भी आग तेजी से भड़क ही नहीं रही थी

धीरे-धीरे सुलगती थी

लगभग 1 घंटे तक देखने के बाद वे लोग भी वापस लौट गए ।

उनके जाने के साथ ही चिता की हल्की-हल्की आंच भी धीमी होने लगी । सिर्फ हल्का हल्का धुआ आभास दे रहा था कि चिता धीरे धीरे जल रही थी ।

पूरे समय वह महिला गांजे का सुट्टा लगाती हुई चबूतरे पर बैठी रही ।

वही चिता रात की साधना का माध्यम बनने वाली थी ...

लगभग 9 बजे के आसपास बाबा, हिमेश और उसका ड्राइवर सारे सामान के साथ पहुंचे । तेजल और उसकी मां साथ में नहीं थे ।

चिता के उस पार बाबा और वह महिला बैठे ।
चिता की अग्नि अभी भी जल रही थी लेकिन ऐसा लग रहा था
जैसे उसे किसी ने बांध दिया हो ।

उसकी लपटें एक दो इंच से ज्यादा ऊपर नहीं उठ रही थी ...

बाबा ने ड्राइवर को बाहर खड़े होने का संकेत किया और साथ ही ताकीद भी कि जब तक बुलाया ना जाए अंदर मत आना ...

ड्राइवर के बाहर जाने के बाद बाबा और वह महिला दोनों दिगंबर हुए । हिमेश को बाबा ने इशारा किया लेकिन वह संकोच करने लगा ।

बाबा गुस्से से चिल्लाया - साले ! तेरी नौटंकी देखने के लिए नहीं आया हूं । जो बोलता हूं वह कर ।
नहीं तो बकरे की जगह तुझे काट दूंगा

बाबा की दहाड़ सुनकर हिमेश के प्राण हलक में आ गए !

उसने तुरंत अपने कपड़े उतार दिए और दिगंबर हो गया ...

बाबा ने जोर जोर से मंत्रोच्चार करना प्रारंभ कर लिया और इसके साथ ही धीरे-धीरे चल रही वह चिता भी धधक-धधक कर जलने लगी

बाबा का मंत्र जाप पूरे जोरों पर चालू था

कट कट कट प्रचट प्रचट हैं हैं

जैसे-जैसे मंत्र जाप बढ़ता जा रहा था

मसान के वातावरण में भारीपन अपने आप उतरता जा रहा था.....

ऐसा लग रहा था जैसे वातावरण में हवा कम हो गई हो.....

सांस रुकने जैसा एहसास

मसान साँय साँय कर रहा था

लगभग 3 फुट ऊंचा एक उल्लू उस चबूतरे पर बैठा हुआ था, जहां बाबा बैठकर चिलम फूंकता था

वह अपनी गोल गोल डरावनी आँख से उसी ओर देख रहा था

हम और आप "उल्लू" शब्द को किसी को अपमानित करने के शब्द के रूप में इस्तेमाल करते हैं, ऐसा व्यक्ति जिसे बात समझ में नहीं आती ...

लेकिन

उल्लू एक बहुत ही विशेष पक्षी है ।

तंत्र शास्त्र में उल्लू का अपना एक बेहद विशेष महत्व है । उल्लू तंत्र , तंत्र के पक्षी शास्त्र नामक विभाग का एक विशेष अंग है । उल्लू तंत्र विशेष रूप से उच्चाटन मारण विद्वेषण के प्रयोगों में बेहद कारगर माना जाता है

उल्लू को सिद्ध करना बहुत कठिन है ...

इसके लिए केवल अघोर पंथ के साधक ही प्रयास करते हैं और विरले साधक सफल हो पाते हैं ...

उसके बाद ...

ऐसा माना जाता है कि उल्लू इंसान की भाषा में बात करता है ।

अनेक गोपनीय रहस्यों से साधक को अवगत कराता है

अब आप स्वयं सोचिए

जो स्वयं महालक्ष्मी का वाहन हो

उस महालक्ष्मी का

जो इस पूरे संसार के संचालक भगवान महा विष्णु की मूल शक्ति है ।

तो

वह कितना विशिष्ट और शक्ति संपन्न होगा.....

खैर इस विषय पर चर्चा फिर कभी...

बाबा वाले चबूतरे पर बैठकर वह उल्लू काफी देर तक चारों तरफ देखता रहा ।

उल्लू का सिर काफी बड़ा होता है !

उसकी आंखें बेहद डरावनी !!

अगर अंधेरी रात में आप अकेले जा रहे हो....

और !!!

सामने उल्लू बैठा हुआ दिख जाए

और!!!!

वह आपको घूर कर देख ले.....

तो

यह मान कर चलिए कि 90% लोगों की पेंट गीली हो जाएगी ।

उसकी आकृति!

उसका रंग !!

उसके चेहरे की बनावट !!!

उसमें झलकता हुआ खूंखारपन !!!!

सब मिलाकर उल्लू को बेहद भयावह बना देते हैं ।

सामान्यतः उल्लू एक डेढ़ फीट ऊंचे होते हैं । लेकिन ...

यह उल्लू लगभग तीन फीट ऊंचा था !

उसे देख कर हिमेश भाई और डर रहे थे ।

अचानक वह उल्लू किसी इंसान की तरह चीखा और फड़फड़ा कर चिता के ऊपर से हिमेश भाई के सर को स्पर्श करता हुआ सा तेजी से निकल गया

हिमेश भाई घबराकर गिरते-गिरते बचे...

बाबा के मुख से जोरदार हुंकार की ध्वनि निकली !

पास रखे हुए पात्र में से कुछ निकाल कर चिता की ओर आहुति की तरह से डाल दिया....

चिता जल रही थी

मांस और बाल के जलने की दुर्गंध फैल रही थी...

उसके सामने बैठना हिमेश भाई के लिए बहुत मुश्किल था ।

वह किसी तरह दम संभाल कर बैठे हुए थे !

बाबा आंखें बंद करके अपने मंत्र जाप में लिप्त था ।

अब जो घटित होने वाला था वह हिमेश भाई की कल्पना से भी बाहर की बात थी.....

बाबा ने फिर हुंकार मारा और खप्पर में मदिरा भर के चिता में समर्पित कर दिया.....

चमगादड़ का एक झुंड न जाने कहां से आ गया और उस चिता के चारों ओर गोल गोल चक्कर काटने लगा । चमगादड़ काफी नीचे उड़ गए थे इतने नीचे कि हिमेश भाई अपने कानों के पास उनके पंखों की सरसराहट को महसूस कर सकता था...

तभी चिता की लकड़ियां अपने आप सरक कर नीचे की तरफ गिरने लगी

मसान घाट के बाहर सुस्त पड़े हुए कुत्ते अचानक अपनी सुरीली आवाज में रोने लगे

पूरा वातावरण किसी भयानक सन्नाटे की कैद में आ गया

ऐसा लगने लगा जैसे कुछ अघटित घटने जा रहा है ।

कुछ ऐसा

जो बेहद भयानक और अस्वाभाविक है

और.....

पूरे शमशान के कोने-कोने से अजीब अजीब सी आवाजें आने लगी

ऐसी ऐसी आवाजें जो पूरे शरीर के रोंगटे खड़े कर
दो

ऐसी आवाजें जो दिल को दहला दे

ऐसी आवाजें जो किसी कमजोर दिल के आदमी को
सुनाई दे जाए

तो.....

उसका हार्ट ही फेल हो जाए ।

अचानक एक कोने से किसी औरत के जोर से चीखने
की आवाज में आई !

उस आवाज को सुनकर ऐसा लगा जैसे कोई उसे पीट
रहा हो !!!!!

और!

वह दर्द के मारे चीख रही हो

थोड़ी देर बाद ...

किसी छोटे बच्चे के दर्द से कराहने की आवाजें आने
लगी

फिर एक पुरुष का दर्द भरा भारी स्वर गूंजा.....

कुल मिलाकर बेहद भयानक परिदृश्य सामने खड़ा
था

तभी !

हिमेश भाई ने देखा

वह अधजला शव उठ कर खड़ा हो गया

उसके उठकर खड़ा होते ही उस महिला ने बकरे की रस्सी
उसकी तरफ फेंक दी ।

उस भयानक शव ने रस्सी को पकड़ लिया.....

एक ही झटके में उस रस्सी को खींच कर उस बकरे को
हवा में उछाल दिया ।

उसने उसे लपका और हवा में ही उसकी गर्दन मरोड़
दी

अब उसके एक हाथ में बकरे का धड़ था और दूसरे हाथ
में उसका टूटा हुआ सिर.....

उसके बाद चपर चपर की आवाजें गूंजने लगी !
बेहद भयानक अंदाज में !

मुश्किल से 15 मिनट के वक्त में

वह बकरा पूरी तरह से उदरस्थ कर गयी ।

वहां पर बकरे का नामोनिशान भी बाकी नहीं बचा ।

बकरे को निपटाने के बाद वह शव चिता से नीचे उतर
आया ।

महिला का शव बेहद भयानक दिख रहा था ।

कल्पना करिए

एक जलती हुई चिता में से

एक मनुष्य की देह !

जो पिछले चार-पांच घंटे से उसकी आंच में पड़ी हुई
थी !!

वह !!!

उठकर खड़ी हो जाए !

तो !

उसकी स्थिति कैसी होगी.....

भयानकता की सीमा को पार करता हुआ उसका स्वरूप
था !

उसके शरीर को देखने से मानव आकृति तो स्पष्ट
दिखती थी ...

लेकिन....

वह अंग जो पुरुष और स्त्री में भेद बताते हैं

उनका स्वरूप पूरी तरह से सिकुड़ कर नष्ट हो चुका था ।

चमड़ी जलकर सफेद सफेद सी दिख रही थी !

कहीं-कहीं बुरी तरह से काली ...

बिल्कुल कोयले के जैसी

अभी भी उसका कुछ हिस्सा साबुत था

बाकी हिस्सा लगभग जला हुआ था

सर की खाल एक तरफ से जलकर निकल चुकी थी...

वहां से खोपड़ी की हड्डियां दिखाई दे रही थी ।

आंख की जगह में दो गड्ढे दिख रहे थे

नाक भी गायब थी

एक तरफ का कान पूरा का पूरा गायब था दूसरी तरफ

का कान पूरा का पूरा साबुत था...

आग की तपिश की वजह से पूरा शरीर सिकुड़ कर हड्डियों से चिपक गया था ।

कुल मिलाकर ऐसा लगता था जैसे किसी कंकाल के ऊपर चमड़ी लगा दी गई हो...

चिता से निकल कर खड़े होने के बाद वह शव लहराया और अचानक उस शव के मुंह से एक भयानक चीख निकली.....

प्राण सुखा देने वाली भयानक चीख

पूरा श्मशान उस चीख से गूंज गया

पास के पेड़ में रहने वाले पक्षी हड़बड़ा कर उड़ने लगे

जैसे

किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत हो गए हों....

उसके बाद उच्च स्वर में उस शव का अट्टहास गूंजा....

हिमेश भाई की आत्मा शरीर से बाहर निकल जाने के लिए आतुर होने लगी.....

उनके प्राण थरथराने लगे

ऐसे विकट दृश्य की उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी.....

एक मरी हुई महिला का शव !

अचानक !!

उठकर !!!

खड़ा हो जाए !!!!

और.....

एक पूरे बकरे को चट कर जाए

उसके बाद

अट्टहास करने लगे

तो शायद ही कोई सामान्य आदमी अपने होश में रह पाएगा....

हिमेश भाई गिरने ही वाले थे !

तभी !

उस महिला ने उसके हाथ में एक शराब की बोतल पकड़ा दी

उस महिला का जला हुआ और भयानक शव चिता से उतरकर हिमेश भाई के पास आ गया था ।

वह जली हुई लाश मुश्किल से हाथ भर की दूरी पर खड़ी थी । उसकी मुद्रा से ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी चीज की प्रतीक्षा कर रही हो....

जैसे !

कुछ

बाकी रह गया हो !

जिसकी उम्मीद में वह हिमेश भाई की ओर आ रही थी ...

इतने पास में उसे देखकर ! हिमेश भाई ! डर के मारे पीपल के पत्ते की तरह कांपने लगे ।

उस महिला ने हिमेश भाई के गाल पर एक जोरदार तमाचा मारा ।

और कहा - इसको पिला और अपनी इच्छा बोल ।
वरना तेरा काम अधूरा रह जाएगा ।।

हिमेश भाई ने डरते डरते दारु की बोतल उसकी तरफ बढ़ाई ।

एक झटके में उसने बोतल खींची और पूरी बोतल गटक गयी ।

पूरी बोतल पी लेने के बाद ऐसा लगा !

जैसे !

उसे संतुष्टि नहीं हुई हो ।

उस महिला ने फिर से एक दारु की बोतल हिमेश भाई के हाथ में पकड़ा दी और कहा - इसे पिला ।

डरते काँपते हिमेश ने दूसरी बोतल भी उस जले शव के हाथ में दे दी । वह उसको भी पूरा गटक गई

लेकिन !

शायद

उसकी प्यास अब भी नहीं बुझी थी ।

इस तरह से वह लगभग 8 बोतल शराब पी गई ।

उसके बाद उसने तृप्ति भरी डकार ली । डकार भी बेहद भयंकर थी ।

पूरा श्मशान उसकी ध्वनि से गूंज उठा

शव अब हिमेश भाई के ठीक सामने खड़ा था.....

जो अब तक थरथराते और कांपते हुए शरीर के साथ
बेहोश हो जाने की सीमा तक पहुंच चुके थे.....

उस महिला ने कमर से उसे पकड़ रखा था....
नहीं तो !

वह कब का जमीन पर गिरकर बेहोश हो जाता

उस महिला की तीखी आवाज फिर श्मशान के सन्नाटे
में ज़ोर से गूंजी - फटती है ??

तो !

ऐसे काम क्यों करता है ।

अब क्या तेरा बाप आएगा तेरा काम बताने के लिए
.....

कमीने....

जल्दी बोल

वरना !!

एक बार यह चली गई

तो !

तेरा काम भगवान भी नहीं कर पाएगा

जल्दी मुंह फाड़ !!!!!

उसको अपना काम बोल

पता नहीं

ये बाबा भी कहां-कहां से ऐसे गए गुजरो को पकड़
लाता है

साले ! औरतों की तरह काँपते हैं ...

उसकी गालियों का असर कहिए.....

या.....

तानों से आत्मसम्मान को पहुंची हुई ठेस.....

हिमेश भाई ने उसके सामने अटक अटक कर ही सही
अपनी इच्छा व्यक्त कर दी.....

शव के मुंह से वीभत्स आवाज निकली - तेरे ही परिवार
के किसी ने किया है

अब उसका अंत निश्चित है.....

तूने मुझे तृप्त किया है.....

मैं अवश्य तेरा काम करूँगी.....

इतना कहते ही फिर उसने भयानक अट्टहास किया.....

और वह शव अचानक आसमान की ओर उछल गया

इतना देखने के बाद हिमेश भाई का धैर्य जवाब दे गया !

वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया ।

वह महिला उसे छोड़कर उधर बाबा की तरफ चली गई ...

बाबा का मंत्र जाप जोर से जारी था.....

महिला ने बाबा के मंत्र के साथ-साथ चिता में आहुतियाँ देना प्रारंभ कर दिया

यह क्रम लगातार चलता रहा

बाबा का मंत्र जाप लगातार जारी था

उसी के साथ निश्चित समय अंतराल में वह महिला साधिका चिता में आहुतियाँ लगातार देती जा रही थी

शव को गए हुए लगभग आधा घंटा बीत गया होगा ।
तब जाकर हिमेश भाई को होश आया । वह उठ कर
बैठ गया । उसने देखा कि बाबा का मंत्र जाप जारी है
और वह महिला चिता की अग्नि में मंगा कर लाए गए
विभिन्न पदार्थों की आहुति दे रही है ।
ऐसा लग रहा था जैसे चिता की अग्नि स्वयं आगे बढ़कर
उन पदार्थों को ग्रहण कर रही हो

हिमेश भाई की “काटो तो खून नहीं” वाली स्थिति हो
चुकी थी

थरथर कांपते हुए वह जमीन पर बैठा हुआ था ...
इस भयानक दृश्य को देख रहा था ...

थोड़ी देर पहले देखे हुए दृश्य की कल्पना मात्र से उसके
दिल की धड़कन इतनी बढ़ जा रही थी कि वह उसे खुद
सुनाई देने लगती थी.....

रात के लगभग 10:30 बजे होंगे जब आसमान से
वह शव वापस उस चिता के ऊपर आकर खड़ा हो
गया

उसके मुंह से खून बह रहा था

आते ही बाबा ने पूछा - काम हो गया ?

शव ने तीखी आवाज में जवाब दिया - हां ।

उसके इतना कहते ही बाबा ने अपने बगल में रखी हुई काले रंग की चीज़ अपनी मुट्ठी में भरी और मंत्रोच्चार करते हुए उस शव की ओर उछाली.....

शव पुनः भरभरा कर वापस चिता में गिर गया

बाबा अपने आसन से उठा और उसने एक बोतल उठा कर उसका पूरा द्रव उस शव के मुंह में उड़ेल दिया

ऐसा लग रहा था जैसे वह शव को विदाई दे रहा हो

शव पूरे द्रव को गटा गटा पी गया

उसके बाद थोड़ी देर फड़फड़ा कर शांत हो गया.....

चिता की अग्नि फिर से भभक कर जलने लगी

बाबा दंडवत मुद्रा में चिता के सामने लेटा हुआ
था.....

वह महिला अंधेरे में लुप्त हो चुकी थी

हिमेश को देख कर बाबा बोला - जा तेरा काम हो
गया

कल से सब कुछ ठीक होना चालू हो जाएगा ।
किसी अपने की मौत की खबर के लिए तैयार रहना...
जा !

अब तू वापस चला जा
मेरी शर्त याद रखना.....

जाने की बात सुनते ही हिमेश भाई ने जल्दी-जल्दी
कपड़े पहने और मसान घाट से बाहर आ गया ।

ड्राइवर बेचैनी से इधर-उधर टहलते हुये उनका इंतजार
कर रहा था उन्हें देखते ही उसके प्राण में प्राण आए ।
वह उन्हें लेकर घर की ओर बढ़ चला

घर पहुंचने के बाद हिमेश भाई काफी देर तक सुन्न बैठा
रहा

उसके साथ आज जो घटित हुआ था !

वह उसकी कल्पना से बहुत ऊपर की बात थी ।
जिन दृश्यों को उसने देखा था !
वैसे दृश्यों के संभव होने की बात तो दूर !
उसके बारे में उसने अपनी जिंदगी में सोचा तक नहीं
था.....

आज वह सब कुछ उसने अपनी आंखों से देखा था ...
इस बारे में वह किसी से भी कोई बात नहीं करना चाहता
था ...
वह चुपचाप कमरे में जाकर सो गया ।

अगले दिन सुबह उठते ही उसे जो पहली खबर पता
चली ...
वह थी.....
चाचा जी की मौत....

हिमेश भाई ने जो कारोबार संभाला था । वह उनके
पिताजी माणिक भाई ने चालू किया था । उनके साथ
उनका छोटा भाई जिग्नेश भी काम करता था ।
माणिक भाई ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे और बेहद सरल
स्वभाव के आदमी थे ।

बहुत मेहनती और बेहद सामाजिक किस्म के मणिक भाई व्यापार के सभी गुर जानते थे लेकिन पैसे वाले मामले में कमजोर थे । बहुत ज्यादा हिसाब किताब उनके दिमाग में आता नहीं था । इसलिए उन्होंने अपने छोटे भाई जिग्नेश को हिसाब किताब का पूरा काम सौंप रखा था ।

पिताजी की मौत के बाद जब हिमेश भाई ने काम संभाला तो महीने भर के अंदर ही उनको समझ में आ गया कि जिग्नेश भाई के काम में बहुत घालमेल है । उन्होंने धीरे-धीरे पैसों का हिसाब किताब जिग्नेश भाई से लेकर मीठालाल को सौंप दिया था ।

जब से मीठालाल ने हिसाब किताब संभाला था , तब से कंपनी की आमदनी लगातार बढ़ती चली गई ।

वही जिग्नेश भाई इस बात को लेकर हिमेश से दुश्मनी पाले बैठा था । लगभग 2 साल पहले हिमेश भाई ने जिग्नेश को अपने बिजनेस से अलग कर दिया ।

सूरत का पुराना शोरूम उन्होंने जिग्नेश भाई को दे दिया और बाकी सारे कारोबार से उनको अलग कर दिया ।

इस अपमान का बदला लेने के लिए जिग्नेश भाई लगातार प्रयास करते रहता था ।

धंधे के मामले में हिमेश भाई और मीठालाल की जोड़ी उसके हर दांव पेंच को फेल कर देती थी ।

काफी दिनों तक ऐसा ही चलता रहा और फिर

जिग्नेश भाई को एक कापालिक मिला...

जिसने हिमेश भाई के व्यापार को तहस-नहस करने की उसकी योजना में सहयोग किया

उसके बाद से हिमेश भाई का सब कुछ धीरे-धीरे तबाह होने लगा....

आखिरी दांव के रूप में उस कापालिक ने मारण प्रयोग किया था ।

बाबा ने उसी प्रयोग को वापस लौटा दिया था ।

जिसके परिणाम स्वरूप जिग्नेश की मौत हो गई थी ।

तंत्र में 6 प्रकार के कर्म माने गए हैं जिन्हें षट्कर्म कहा जाता है ।

यह हैं मोहन, वशीकरण, उच्चाटन विद्वेषण, मारण और शांति ।

इसमें सबसे खतरनाक होता है मारण प्रयोग । जिसमें किए जाने वाली क्रियाओं के द्वारा किसी व्यक्ति के प्राण लिए जा सकते हैं । यह क्रियाएं मुख्य रूप से श्मशान में संपन्न की जाती है । इसमें नकारात्मक शक्तियों जैसे भूत प्रेत आदि का सहयोग लिया जाता है ।

इन क्रियाओं में जब इन शक्तियों को जागृत कर भेजा जाता है तो यह शक्तियां संबंधित व्यक्ति को समाप्त करने के बाद ही शांत होती हैं

यदि संबंधित व्यक्ति या उसकी कोई रक्षक शक्ति उसे वापस भेज दे या उसे वापस लौटने पर मजबूर कर दे । तो वह भेजने वाले व्यक्ति के पास वापस लौट आती है । उसे ही भक्षण कर लेती है ।

इसलिए मारण प्रयोग को
सबसे जटिल !
सबसे खतरनाक !!

और सबसे भयानक !!! माना जाता है ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में मारण प्रयोग का ज्ञान गुरु विरले शिष्यों को ही देता है । इस प्रकार के प्रयोग का ज्ञान होने से शिष्य अहंकार से युक्त हो जाता है । किसी की बात से उत्तेजित होकर यदि इस प्रयोग को संपन्न कर देता है तो उसकी मृत्यु अवश्यंभावी हो जाती है । इसलिए यह ज्ञान उसी साधक या शिष्य को दिया जाता है जिसे अपने ऊपर नियंत्रण प्राप्त हो ।

कई परिस्थितियों में जब किसी की व्यथा सुनकर गुरु या साधक पसीज जाता है ...

या.....

किसी व्यक्ति के ऊपर किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा किए गए अत्याचार की कथा उसके मन को मथ देती है । तब ! उसके हृदय से उठने वाली पीड़ा की तरंगें मारण प्रयोग की ओर बढ़ जाती हैं ! उसके बाद संबंधित व्यक्ति का बचना लगभग नामुमकिन हो जाता है ।

जिग्नेश चाचा इसी प्रकार के मारण प्रयोग की वापसी का शिकार हो गए थे ।

कापालिक शक्ति संपन्न था

जो प्रयोग वापस हुआ उसके साथ - जैसा कि मैंने बताया यह शर्त होती है कि या तो वह लक्ष्य को भक्षण करेगा या फिर भेजने वाले का भक्षण करेगा ।

कापालिक ने अपनी जुगत से उस शक्ति को प्रसन्न करने का प्रयास किया जो उसका भक्षण करने के लिए आ रही थी

लेकिन

उसे तो मारण प्रयोग के लिए तैयार किया गया था और वह किसी मनुष्य की आहुती के बिना वापस नहीं जा सकती थी ।

जब कापालिक को लगा कि उसे शांत करने का कोई रास्ता नहीं है...

तो.....

उसने अपने अनुष्ठान और मंत्र बल से उस शक्ति को जिग्नेश भाई की तरफ मोड़ दिया ।

क्योंकि कार्य तो उसी का था और उस संहारक शक्ति ने जिग्नेश भाई का काम तमाम कर दिया ।

यह सब सुनने में अजीब और असंभव सा लग सकता है ! लेकिन इस प्रकार की घटनाओं का विवरण मिलता है

जिसमें तांत्रिक प्रयोगों के माध्यम से किसी व्यक्ति का प्राण भक्षण कर लिया गया हो.....

इस प्रयोग के बाद हिमेश भाई की हालत वापस सुधरने लगी ।

सब कुछ धीरे-धीरे सामान्य हो रहा था

हिमेश भाई की धड़कन बढ़ जाती थी जब वह यह सोचता कि अघोरी तेजल को लेकर जाएगा

लेकिन !

जैसे जैसे समय आगे बढ़ रहा था उसकी निश्चितता भी बढ़ती जा रही थी

क्योंकि

बाबा का कोई पता नहीं था

ना उसने किसी प्रकार से संपर्क करने की कोशिश की थी !

जब किसी चेतावनी या दुर्घटना को काफी समय बीत जाता है, तो धीरे-धीरे उसकी प्रचंडता या उसके द्वारा होने वाले नुकसान के विषय में सोचने की प्रवृत्ति भी कम होती जाती है

और.....

व्यक्ति अपने नित्य कर्मों में लिप्त होकर धीरे-धीरे उस बात को भूलने लगता है ।

हिमेश भाई के साथ भी यही हो रहा था

अगली अमावस्या की रात्रि लगभग 12 दिन के बाद पड़ी

उस दिन दोपहर को हिमेश भाई के कोठी के सामने बाबा प्रकट हुआ ।

बाबा को देखते ही दरबान ने सम्मान के साथ दरवाजा खोल दिया और अंदर हिमेश भाई को सूचित भी कर दिया ।

हिमेश भाई और पूरा परिवार दौड़कर उनके चरणों में लौट गया ।

बाबा तेजल को लेकर वहां से निकल गया

बाबा ने तेजल को अपने बारे में रास्ते में सब कुछ बताया । उसकी फर्फटदार इंग्लिश सुनकर तेजल दंग रह गई ।

बाबा का नाम खप्परनाथ था।

बाबा खप्परनाथ बोला - मैंने आईआईटी खड़गपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री ली थी । उसके बाद अमेरिका के लॉस एंजेलिस में एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता था । मेरा पैकेज एक लाख डॉलर का था

मेरी मेहनत और लगन से कंपनी बेहद खुश थी ।

वहां का स्वच्छंद माहौल मुझे बहुत पसंद था ।

एक अमेरिकन लड़की एली के साथ साल भर से लिव इन रिलेशन में रह रहा था ।

मेरे पिता एक आर्मी ऑफिसर थे । जो रिटायर हो चुके थे । मेरी मां बचपन में ही मर चुकी थी और मेरे पिता ने ही मुझे पाल पोस कर बड़ा किया था । उन्हें अकेला छोड़ कर आना मेरे लिए एक बहुत कठिन निर्णय था, लेकिन वह भारत छोड़कर आने को तैयार नहीं थे ।

वह लगभग छह फुट लंबे और हट्टे कट्टे मजबूत वजन के थे !

जैसा कि आमतौर पर फौज के लोग रहते हैं । घर में खाना बनाने के लिए कुक तथा नौकर की व्यवस्था थी । उनका अपना सिक्योरिटी एजेंसी का काम था । जो बहुत अच्छे से चलता था ।

कुल मिलाकर पैसे की किसी प्रकार की कमी नहीं थी । कभी कभी मैं भी कुछ पैसे भेज दिया करता था, यह जानते हुए भी कि उनको मेरे पैसे की जरूरत नहीं है ।

सब कुछ अच्छा चल रहा था । अचानक एक दिन भारत से मुझे अपने पिता की एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मौत की खबर मिली । मैं अगली फ्लाइट पकड़कर वापस आ गया ।

मैं एक महीने की छुट्टी लेकर आया था । मेरे साथ मेरी गर्लफ्रेंड एली भी आई थी । हमारे यहां मृत व्यक्ति की अस्थियों को इलाहाबाद में विसर्जित करने की परंपरा है । एली के लिए यह सब एक नए प्रकार का अनुभव था । अंग्रेजी संस्कृति में इस प्रकार की कोई रस्म नहीं होती

वह यहां के पूजा पाठ तथा अन्य उपायों को देखकर विस्मय और आश्चर्य से भरी हुई थी । उसने मेरे साथ इलाहाबाद चलने का आग्रह किया । उसकी वापसी की टिकट एक दिन के बाद की थी ।

मैंने उसे वापस चले जाने का आग्रह किया, क्योंकि मैं जानता था कि इलाहाबाद में काफी समय लगने वाला है । उसे वापस जाकर कंपनी का काम भी देखना था

मेरी अनुपस्थिति में वह मेरा काम भी देख लेती थी दोनों का एक साथ बाहर रहना कंपनी के हित में नहीं था ।

उसने मेरी बात समझी और वापस चली गई । मैं इलाहाबाद की ओर निकल पड़ा । मेरे साथ मेरे एक

रिश्तेदार भवानी चाचा भी थे । जो इलाहाबाद पहले भी जा चुके थे.....

वह ठंड का मौसम था

इलाहाबाद वैसे भी काफी ठंडी जगह है और ठंड के मौसम में वहां का पानी बर्फ के जैसा ठंडा हो जाता है.....

हमारी ट्रेन लगभग दोपहर के 2:30 बजे इलाहाबाद पहुंची

भवानी चाचा ने पन्डे से संपर्क किया तो उसने 4:00 बजे कार्यक्रम करने का सुझाव दिया ।

भवानी चाचा तैयार हो गए.....

लगभग डेढ़ दो घंटे इस दौरान पानी में रहना पड़ता है । दोपहर के 4 बजे भी संगम का पानी काफी ठंडा था ... लेकिन फिर भी उस में खड़ा हुआ जा सकता था

सारा कार्यक्रम पूरा हो जाने के बाद हम लोग वापस होटल लौट गए ।

भवानी चाचा ने सुझाव दिया - बेटा ! जब तुम आ ही गए हो तो बनारस भी चले चलते हैं । बाबा विश्वनाथ के दर्शन भी हो जाएँगे ।

यह तय हुआ कि अगले दिन बनारस जाएँगे.....

सुबह संगम की ओर टहलते टहलते निकले । वहां पानी में खड़े हुए लोगों की हालत देखकर समझ में आया कि पानी कितना ठंडा होगा । जो लोग पानी में खड़े थे वे थरथर कांप रहे थे उनके हाथ हिल रहे थे....

अपने पूर्वजों के लिए सभी उस ठंड में भी तर्पण क्रिया संपन्न करते हुए खड़े थे ।

खैर

बाबा खप्परनाथ आगे बोले - बनारस की ओर जाने के लिए हम लोगों ने एक टैक्सी की व्यवस्था की मैं और भवानी चाचा बनारस की ओर निकल पड़े । बनारस पहुंचने के बाद हम लोग मंगल लॉज में रुके ।

बनारस की धरती पर उतरते ही मुझे बेहद अजीब सा अहसास हुआ

एक ऐसा एहसास !

जो मैंने अपने जीवन में कभी भी महसूस नहीं किया
था

ठीक वैसा ही एहसास

जैसे एक बच्चे को अपने घर लौट आने पर होता
होगा

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं बनारस का ही हूं

मैं जैसे वापस अपनी मातृभूमि में लौट आया ।

यह एहसास बेहद अजीब था ।

मैं बचपन से ही दिल्ली में रहा ।

एक मिलिट्री ऑफिसर का घर भी बेहद अनुशासित
होता है । मैं भी उसी प्रकार के सख्त अनुशासन का
आदी था । शुरु से ही अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ा ।
भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति किसी प्रकार की
दुर्भावना नहीं थी । लेकिन कोई बहुत ज्यादा सम्मान या
समर्पण भी नहीं था । सुबह उठकर अगरबत्ती दिखाना
और नवरात्रि में देवी मंदिर जाना जैसे रूटीन धार्मिक
कार्य दादी के साथ कर लेता था । वह इन सब मामलों
में बहुत प्रॉम्प्ट थी

इतना कहकर बाबा खप्परनाथ ने एक गहरी सांस ली

तेजल की ओर गहरी नजरों से देखा ।

वह आंखों में आश्चर्य और विस्मय का भाव लिए हुए बेहद गंभीरता से बाबा की कहानी को सुन रही थी

बाबा खप्पर नाथ ने कहानी को आगे बढ़ाया और बोले - जब मैं बाबा विश्वनाथ के मंदिर पहुंचा तो न जाने मुझे क्या हुआ ? मैं हिलक हिलक कर रोने लगा ।

भवानी चाचा भी मेरी हालत देखकर घबरा गये ।

लेकिन

मेरी आंखों से आंसू रुक ही नहीं रहे थे

ऐसा लग रहा था जैसे बड़े लंबे समय से बिछड़ा हुआ कोई आत्मीय मिल गया हो

बाबा विश्वनाथ मुझे उस समय वैसे ही लग रहे थे..... मुझे उन क्षणों में वहां पर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था.....

मैं था

और

बाबा विश्वनाथ का शिवलिंग...

अचानक मैंने देखा कि वह शिवलिंग किसी रोशनी के गोले जैसा चमक रहा था ।

और.....

उसके अंदर दिखाई दे रहा था

एक बाबा का चेहरा....

चमकता हुआ.....

तेजस्वी चेहरा.....

सफेद बाल और लाल लाल आंखें.....

लगभग दो चार सेकंड यह दृश्य रहा होगा ।

उसके बाद वह लुप्त हो गया और मैं बेहोश होकर गिर गया

भवानी चाचा घबरा गए और फिर चार लोगों के साथ मुझे उठाकर मंदिर परिसर में बाहर लिटा दिया ।

तभी.....

बलिष्ठ शरीर का स्वामी !

एक बाबा !

जिसके बदन पर सिर्फ एक लंगोट थी !!!!!

वह मेरे पास आया !

उसने अपने कमंडल में से पानी निकाल कर मेरे चेहरे पर छिड़का

दो-चार मिनट के बाद मुझे होश आ गया जैसे ही मुझे होश आया मैं उस बाबा को देख कर चौक गया ।

क्योंकि

यह वही बाबा था !

जिसका बिंब मुझे बाबा विश्वनाथ के लिंग में दिखाई दिया था.....

मैं तुरंत उनके चरणों में गिर पड़ा !

फिर मेरी हालत वैसी ही हो गई ...

मैं उनके पांव को पकड़कर बच्चों की तरह रोने लगा !

भवानी चाचा परेशान हो गए कि यह मेरे साथ क्या हो रहा है ?

बाबा ने भवानी चाचा को परेशान देखकर बताया -
घबरा मत बेटा । मेरा नाम आदित्यनाथ है । यह पिछले
जन्म में मेरा चेला था । मैं इसे लेकर जा रहा हूँ । तू घर
वापस लौट जा । मैं इसे घर पहुंचा दूंगा ।

भवानी चाचा ने उनके पाँव पकड़ लिए - मैं मर जाऊंगा
बाबा !

यह विदेश से आया हुआ बच्चा है !

सब बोलेंगे कि मैंने उसे यहां लाकर मार दिया !

इसके बिना मैं नहीं जाऊंगा । मुझे भी आप अपने साथ
ले चलो।

बाबा आदित्यनाथ बोले - ठीक है...

उसके बाद वह तेज कदमों से एक तरफ बढ़ गए ।

उनके पीछे पीछे मंत्रमुग्ध सा मैं

और मेरे पीछे भवानी चाचा भी चलने लगे

नदी के किनारे बसा हुआ उनका आश्रम था ।

आश्रम में लगभग 10-11 झोपड़ियां बनी हुई थी ।

उनमें से एक झोपड़ी अलग और एक कोने में थी ।

वह बाकीयों से बड़ी भी थी और उसके सामने एक

यज्ञशाला भी बनी हुई थी । उसे एक लकड़ी के बड़े से बाड़े से अलग किया हुआ था । संभवतः वह बाबा आदित्यनाथ की रही होगी।

हमारे वहां पहुंचते ही दो शिष्य आ गए और उन्हें देखते ही बाबा ने कहा इनको एक झोपड़ी दे दो ।

उसके बाद मेरी ओर देख कर बोले - तू नहा कर मेरी झोपड़ी में आ जाना । चाचा तब तक झोपड़ी में रहेगा

...

मैंने सहमति में सिर हिलाया....

थोड़ी देर में नहा कर मैं उनके कमरे में पहुंच चुका था । बाबा ध्यान में बैठे हुए थे उनको प्रणाम करके उनके सामने बैठ गया

वहां बैठते ही फिर मेरी आंखों से आंसू प्रारंभ हो गया । मैं खुद नहीं समझ पा रहा था कि मेरे साथ क्या हो रहा है ?

मैं जिस परिवेश में पला बढ़ा था !

वहां भावुकता का बहुत ज्यादा स्थान नहीं था ।

मैं भी अपने आप को बहुत मजबूत और पौरुष वान था
।

कुछ-कुछ उस प्रकार की मानसिकता का था जिसमें यह
माना जाता है कि

मर्द को दर्द नहीं होता

लेकिन यहां तो पूरा माजरा ही बदला हुआ था ।

बाबा ने मेरे रोने की आवाज सुनकर अपनी आंखें खोली
- बस कर बेटा ।

उन्होंने मुझे उठा कर अपने सामने बिठा लिया।

विभिन्न मंत्रों के उच्चारण के साथ मंत्र प्रवाह लगभग
आधे घंटे तक चलता रहा ।

उसके बाद उन्होंने अपने दाहिने हाथ का अंगूठा मेरे माथे
के बीच में रखा ।

उनकी मध्यमा उंगली मेरे ब्रह्मरंध्र के ऊपर रखी हुई थी
।

थोड़ी देर में उन्होंने अपने दाहिने पैर का अंगूठा मेरी छाती
के बीच में लगाया और उसके साथ ही मैं पीछे की तरफ
लुढ़क गया.....

मैं लगभग 24 घंटे तक बेहोश रहा ।

इस दौरान ...

आदित्य नाथ बाबा कई प्रकार की तांत्रिक क्रियाएं करते रहे ।

उस दौरान मैंने अपना पूर्व जन्म भी देखा ।

जब मैं बाबा के साथ अघोर साधना में था । मेरी समझ में आ गया कि मैं वास्तव में एक पूर्व जन्म का अघोरी हूँ ।

उसके बाद बाबा ने मुझे रुद्राक्ष की माला दी और उसे हमेशा पहने रहने के लिए कहा । साथ ही एक मंत्र भी दिया जिसका मुझे निरंतर जाप करना था । मैं वहां से वापस नहीं आना चाहता था लेकिन बाबा ने मुझे कठोर शब्दों में वापस जाने का आदेश दिया और मुझे वापस आना पड़ा ।

भवानी चाचा के साथ मैं वापस घर लौटा ।

दिल्ली में जो संपत्ति थी उसका मैं इकलौता वारिस था मेरे पास इतना पैसा था कि मुझे उसकी जरूरत नहीं थी ।

मैंने उसे भवानी चाचा के हवाले कर दिया और वापस अमेरिका चला गया ।

वहां जाने के बाद भी मेरा मंत्र जाप जारी रहा ।

मैं दिन में ऑफिस के कार्य करता और रात होते होते मेरे अंदर का अघोरी जागृत हो जाता और मैं गुरुदेव के द्वारा दिए गए मंत्र का जाप करता रहता ।

लगभग 6 महीने तक ऐसा ही चलता रहा । फिर एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में मेरे कमरे में बाबा आदित्यनाथ ने अपने बिम्ब स्वरूप में दर्शन दिए और कहा - मेरा अंतिम समय आ गया है । तू वापस आ जा....

मैं अगली फ्लाइट से भारत आया । बनारस पहुंचने के बाद जब मैं आश्रम पहुंचा तो देखा कि बाबा अपनी मृत्यु शैया पर हैं । उनका प्रमुख शिष्य मुद्गर नाथ उनकी बगल में बैठा हुआ है....

मुझे देखते ही बाबा के मुख पर हल्की सी मुस्कान उभरी....

उन्होंने कहा- बेटा ! पिछले जन्म में तूने बहुत साधना की थी, लेकिन असमय ही तेरी मृत्यु हो गई थी ! मैं तुझे उस समय बहुत सारी चीजें देना चाहता था ! लेकिन नहीं दे पाया ।

अब मेरा अंतिम समय आ गया है ।

मेरे पास जो भी है वह सब मैं तुझे देना चाहता हूं । मैं चाहता हूं कि तू मेरे बाद मेरे आश्रम का भार संभाल ले.....

उसके बाद कुछ विशेष क्रियाओं के द्वारा मुझे अघोर पंथ की अनेक दीक्षाओं से सिद्ध कर दिया और शाम होते-होते प्राण त्याग दिये ।

इतना कहकर बाबा खप्परनाथ चुप हो गया

तेजल सोच भी नहीं सकती थी कि वह जिसे एक अघोरी बाबा सोच रही है

वह इतने अलग किस्म के परिवेश से आया हुआ, और पढ़ा लिखा इंजीनियर है

आमतौर पर हमारी जो सोच है वह ऐसी है कि, जो कम पढ़ा लिखा होगा या जिसने स्कूली शिक्षा नहीं ली होगी, वही बाबा बनता है

या अध्यात्म के क्षेत्र में जाता है

लेकिन वास्तविकता इससे बहुत अलग है....

उदाहरण के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान की शिवानी जी और इस्कॉन के गौर गोपाल दास को सम्पूर्ण विश्व के लोग जानते हैं

इन दोनों ने पुणे यूनिवर्सिटी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की पढ़ाई पूरी की है ।

विश्व विख्यात तंत्र विशेषज्ञ डॉक्टर नारायण दत्त श्रीमाली जी दो विषयों में एमए और पीएचडी थे ।

वास्तव में आध्यात्मिकता में आगे बढ़ने के लिए पढ़ा लिखा होना एक अतिरिक्त सहायक के जैसे काम करता है । वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आध्यात्मिक तथ्यों को समझने की सहज प्रवृत्ति देता है ।

जो सामान्य आदमी को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ने में सहायक होता है , शायद इसीलिए यह सभी बेहद लोकप्रिय लोग हैं ।

यदि हम साधु संतों की बात करें तो कई बड़े-बड़े विद्वान नागा साधु बने हुए हैं ।

यह भी एक तथ्य है कि अघोर पंथ में भी कई बड़े-बड़े विद्वान अपनी जमी जमाई नौकरी या बिजनेस छोड़कर साधना में रत है ।

उज्जैन में होने वाले कुम्भ मे एक ऐसी अघोरी महिला तांत्रिक भी पहुंची थी

जो अमेरिका से पीएचडी करने के बाद भारत आकर श्मशान साधना करने वाली अघोर तांत्रिक बन गई थी

एक महिला अघोर साधिका भी है जो पूर्व में सॉफ्टवेयर इंजीनियर हुआ करती थी.....

इनसे संबंधित विवरण आप गूगल में सर्च करके प्राप्त कर सकते हैं.....

अस्तु.....

मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि कई उच्च कोटि के विद्वान विभिन्न साधनात्मक पद्धतियों का अनुसरण करते हुए इस धरा पर आध्यात्मिक सुगंध फैलाने में लगे हुए हैं.....

यही अध्यात्म का सौंदर्य है...

खैर

हम अपनी कहानी की ओर वापस लौटते हैं.....

बाबा खप्पर नाथ के विषय में पूरी जानकारी मिल जाने के बाद तेजल उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी । उनकी साधनात्मक क्षमता का प्रभाव वह पहले ही देख चुकी थी

जब उनकी बौद्धिक क्षमता और बैक्प्राउण्ड के बारे में पता चला तो वह और भी ज्यादा प्रभावित हो गई । एक तरह से यूं समझ लीजिए कि आकर्षित सी हो गई.....

सारी कहानी बता देने के बाद बाबा ने आगे कहा - मैंने लगभग 3 वर्ष आश्रम में गुजारे । मणिकर्णिका घाट मेरी साधना का प्रमुख स्थान था ।

मुझे एक दिन स्वप्न में गुरुदेव ने दर्शन दिए और कहा - अब तुझे आगे बढ़ना है । आश्रम छोड़कर तुझे कुछ और साधनाएँ सिद्ध करनी हैं । तू गुजरात की ओर प्रस्थान कर बाकी मार्ग आगे स्वयं बनता जाएगा । उनकी बात सुनकर मैं बनारस से गुजरात की ओर बढ़ा और आगे की कहानी तुम जानती हो ।

तेजल ने पूछा- बाबा ! मैं इन सबके बीच में कहां से आ गई ?

बाबा ने कहा - साधना का क्षेत्र शिव शक्ति का क्षेत्र है । यहां पर किसी भी साधक के लिए उच्च स्तर की साधना करने के समय श्रेष्ठ भैरवी शक्ति की आवश्यकता होती है । मुझे भी उसकी आवश्यकता है । मैं चाहता हूं कि तुम एक महीने के लिए मेरी भैरवी के रूप में मुझे साधना में सहयोग करो ।

तेजल ने अपनी सहमति व्यक्त कर दी

सबसे पहले बाबा उसे सूरत के उसी श्मशान में ले गया,
जहां पर हिमेश भाई के लिए प्रयोग संपन्न किया गया
था ।

वहां पहुंचने के बाद वह तंत्र साधिका पुनः प्रकट हुई ।

बाबा खप्पर नाथ ने उससे तेजल को मिलवाया बताया
- यह चंचला भैरवी है । मेरी सहयोगिनी । यह तुम्हें
3 दिन तक विभिन्न प्रकार की तंत्र क्रियाओं और
साधनाओं के द्वारा आगे की प्रक्रियाओं के लिए तैयार
करेगी । मैं तुमसे 3 दिन के बाद फिर मिलूंगा ।

इतना कहकर खप्पर नाथ बाबा मसान घाट से बाहर
निकल गया

अब वहां पर केवल चंचला भैरवी और तेजल रह
गए

चंचला तेजल को लेकर मसान घाट के दूसरे कोने की
ओर चल पड़ी । वहां नदी बह रही थी ...

नदी के अंदर बहुत ज्यादा पानी नहीं था ।

घुटने घुटने तक पानी था

दोनों ने नदी पार कर ली ...

शाम का धुंधलका बिखर रहा था ...

दूर-दूर तक कोई भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था....

नदी पार करने के बाद आगे जंगली इलाका था । बड़े-बड़े पेड़ जिन्हें देखकर तेजल घबरा भी रही थी ।

ए.सी. गाड़ियों में घूमने की जिसे आदत हो !

वह पेड़ पौधे देखकर घबरा जाते हैं !

फिर यह तो भयानक जंगल था

बड़े-बड़े पेड़ ऐसे लग रहे थे !

जैसे आसमान को छू रहे हो !

नदी के पास खुले आसमान की वजह से थोड़ी बहुत रोशनी दिखाई दे रही थी.....

लेकिन

वहां तो कुछ भी दिखाई ना दे इतना अंधेरा लग रहा था ...

ऐसा प्रतीत होता था जैसे चंचला भैरवी उस जगह के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थी !

वह बेहद सहजता से आगे बढ़ रही थी और तेजल की मुश्किल को देखते हुए उसने उसके हाथों को पकड़ रखा था ।

लगभग आधा किलोमीटर चलने के बाद एक पुराना खंडहर दिखाई देने लगा जो किसी पुराने मकान के अवशेष जैसा दिखाई दे रहा था । उसमें लकड़ी के बड़े-बड़े दरवाजे लगे हुए थे और लोहे का सांकल जैसा कुंडा लगा हुआ था ।

चंचला भैरवी ने कुंडे को खोला और दोनों अंदर चली गई । उसके बाद दरवाजे को अंदर से बंद करने के बाद चंचला आगे बढ़ी । तेजल उसके पीछे पीछे आगे बढ़ने लगी

कोने में रखी हुई लालटेन को उसने जला दिया । हल्की हल्की पीली रोशनी पुरानी इमारत के अंदर बिखर गयी ।

अगर आपने लालटेन की रोशनी देखी हो तो आपको वह कुछ कुछ पुराने फिलामेंट वाले बल्ब की रोशनी जैसी दिखाई देगी

उसका पीला प्रकाश जब पुराने पत्थर से बने हुए खंडहर पर पड़ता है तो अजीब सी भयावहता बिखर जाती है.....

कुछ-कुछ वैसा ही उस खंडहर में भी हो रहा था

लगभग एक घंटे तक चंचला भैरवी ने तंत्र साधना और उसमें शिव शक्ति सामंजस्य की उपयोगिता और उससे उत्पन्न होने वाली ऊर्जा के संबंध में विस्तार से जानकारी दी ।

जहां-जहां चंचला के बताए हुए हिंदी शब्दों को तेजल समझ नहीं पाती थी, वहां पर चंचला उसे बकायदा अंग्रेजी में समझाती थी ।

तेजल को यह समझ में आ गया कि चंचला भी काफी पढ़ी-लिखी और विद्वान महिला है ।

उसके अंदर बाबा के साथ एक महीने रहने का जो खौफ था

वह अब लगभग समाप्त हो चुका था ।

उसकी जगह एक नए एडवेंचर का आनंद लेने की प्रबल आकांक्षा जाग गई थी ।

जीवन में रिस्क लेना हर कोई चाहता है

लेकिन !

अपनी जिम्मेदारियों और मजबूरियों के चलते वह रिस्क लेने में झिझक जाता है ।

सबसे मुश्किल चीज जो रिस्क लेने के मार्ग में आ जाती है

वह होता है धन !

आर्थिक कमजोरी या अनिश्चितता की वजह से मध्यम वर्ग के लोग आमतौर पर रिस्क नहीं लेते और एक बंधी बंधाई दिनचर्या पर चलना पसंद करते हैं ।

उनके साथ साथ में वे अपने बच्चों के अंदर भी यही मानसिकता डालते हैं कि सिक्योर लाइफ तक पहुंचना है

इसके लिए नौकरी करना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है ।

नौकरी करने के लिए इंजीनियरिंग करनी है

या फिर मेडिकल की पढ़ाई करनी है.....

या फिर चार्टर्ड अकाउंटेंट की पढ़ाई करनी है....

या फिर कंपनी सेक्रेटरी की पढ़ाई करनी है

स्टाफ सिलेक्शन की परीक्षा पास करनी है

या किसी बैंक में नौकरी करनी है ।

इस प्रकार की बनी बनाई परंपराओं का पालन करने की कोशिश मध्यमवर्ग करता है ।

जो धनवान होते हैं उनमें से भी अधिकांश रिस्क नहीं लेते क्योंकि उनको मालूम होता है कि कुछ भी कर ले आखरी में संभालना तो पुश्तैनी बिजनेस को ही है

लेकिन कुछ बच्चे हर जगह से निकल आते हैं जो जिंदगी में रिस्क उठाने के लिए ही पैदा होते हैं ।

उनकी सोच अलग होती है

उनका समझने का तरीका अलग होता है...

उनका समझाने का तरीका भी अलग होता है ।

यह एक अलग बात है कि उनको आमतौर पर ना उनके साथ के लोग समझ पाते हैं और ना ही उनके माता-पिता

इसकी वजह सिर्फ यह है कि वह जमी जमाई या लीक पर चलने वाली सोच से हटकर कुछ नया सोचने की कोशिश करते हैं.....

इनमें से भी अधिकांश को चमका धमकाकर या फिर दबाव बनाकर या फिर इमोशनली समझा कर किसी तरह से ढर्रे पर ले आया जाता है

और.....

उसके बाद शादी करके उनके गले में घंटी बांध दी जाती है ।

जिसे वह सारी जिंदगी बजाते रहते हैं ।

एक बार शादी हो गई तो उसके बाद बच्चे हो जाते हैं ।

बच्चे होने के बाद जिम्मेदारियां आ जाती है ।

जिम्मेदारी आने के बाद आदमी रिस्क लेने से और भी घबराने लगता है.....

तेजल इस मामले में एक अलग ही किस्म की युवती थी । उसे मालूम था कि उसके पिता का हीरो का बिजनेस आखिरकार उसे ही संभालना है । उसने अपने शौक की खातिर इंजीनियरिंग करने का फैसला लिया और वह भी विदेश जाकर पढ़ने का

घरवालों ने काफी विरोध भी किया ।

समझाने की कोशिश की ।

इमोशनली ब्लैकमेल करने की कोशिश भी की ।

लेकिन वह टस से मस नहीं हुई

इकलौती बच्ची थी

घर वाले भी जानते थे कि बचपन से ही जो चाहती है वह करके रहती है । इसलिए उन्होंने भी अंततः उसकी मर्जी से उसे जाने दिया

तेजल बचपन से ही तेज दिमाग और चुस्त शरीर की स्वामिनी थी

उसके शौक भी ऐसे थे जो रोमांच से भरपूर हुआ करते थे ।

जैसे पैराग्लाइडिंग ट्रैकिंग घुड़सवारी आदि.....

यानी कुल मिलाकर रोमांच के प्रति पूरी तरह से समर्पित

जानकारी मिलने और बाबा के द्वारा किए जा रहे प्रयोगों को देखने के बाद उसे साधना का क्षेत्र भी बेहद रोमांचक लगा.....

चंचला ने उसे जानकारी देने के बाद उसके शरीर के प्रत्येक अंग में विभिन्न बीज मंत्रों के द्वारा पूजन करते हुए भैरवी शक्ति का आह्वान किया और स्थापना की ।

देवीय शक्तियां अपने मूल स्वरूप में बहुत ही दुर्लभ साधकों को दिखाई देती है क्योंकि उसके लिए अत्यंत उच्च कोटि का साधना बल होना चाहिए ।

इसके साथ साथ शरीर और उसकी शुद्धता का बहुत ज्यादा ध्यान रखना पड़ता है ।

यहां तक कि किसी से स्पर्श नहीं होना चाहिए और भी बहुत कुछ

यूं समझ लीजिए कि वह बहुत दुर्लभ किस्म की स्थिति है

दूसरा अनुभव जो साधकों को होता है वह आमतौर पर किसी माध्यम के द्वारा ही होता है

इसमें भैरवी सबसे प्रमुख माध्यम है ।

इसे अगर मैं एक सामान्य उदाहरण के माध्यम से समझाऊं तो शायद ज्यादा स्पष्ट कर पाऊंगा....

हम सभी टीवी देखते हैं ।

टीवी में दृश्य दिखाई देते हैं ।

उनकी मूवमेंट दिखाई देती है और उनकी आवाज भी सुनाई देती है ।

टीवी पर आने वाले सिग्नल अंतरिक्ष में स्थित किसी सेटेलाइट के द्वारा भेजे जाते हैं ।

इसे आप परा शक्ति या दिव्य शक्ति समझिए ।

सेटेलाइट से आने वाले सिग्नल अपने आप में पूरी वीडियो और उसके अंदर की ऑडियो सब कुछ समेटे हुए हैं

लेकिन ,

उस सिग्नल को आप देख नहीं सकते ...

और ना ही उसको महसूस कर सकते हैं

क्योंकि,

हमारा मस्तिष्क और हमारी ज्ञानेंद्रियां उस वेवलेंथ को या उन तरंगों को समझने की क्षमता नहीं रखती है ।

ठीक इसी प्रकार से परा शक्ति की वेवलेंथ पकड़ने की क्षमता साधक की नहीं होती है ...

क्योंकि वह बहुत ही उच्च स्तर की होती है

सेटेलाइट से आने वाले सिग्नल के अंदर मौजूद वीडियो और उसमें स्थित ऑडियो को हम तक पहुंचाने के लिए टीवी एक माध्यम बनता है ।

सेटेलाइट से आने वाला सिग्नल वही रहता है ...

अगर आपका टीवी ब्लैक एंड वाइट है ...

तो आपको तस्वीरें ब्लैक एंड वाइट दिखाई देंगी ।

अगर आपका टीवी कलर है

तो आपको तस्वीरें और वीडियो सब कुछ रंगीन दिखाई देगा ।

अगर आपका टीवी एचडी है ...

तो आपको वीडियो बहुत स्पष्ट और उसके रंग बहुत ही अच्छी तरह से दिखाई देंगे

इसमें आप एक बात को समझें !

सिग्नल वहीं आ रहे हैं !

उसके अंदर सब कुछ मौजूद है !

लेकिन आपके पास जो माध्यम है !

वह अगर ब्लैक एंड व्हाइट टीवी के रूप में है
तो

आप सारी सिगनल्स होने के बावजूद
केवल दो ही रंग देख सकते हैं

दूसरी ओर एचडी टीवी हो
तो.....

आप सारी की सारी तस्वीरें देख सकते हैं
हजारों रंगों में ...
वह भी उनके पूरे सौंदर्य के साथ

अगर उसमें बहुत अच्छी किस्म के स्पीकर लगे हो
तो

आने वाली आवाज भी आप बिल्कुल स्पष्ट और
मनभावन तरीके से सुन सकते हैं

साधक की स्थिति भी बिल्कुल वैसी ही है ।

वह एक दर्शक के रूप में सामने बैठा रहता है ।

इसमें से बहुत ही सिद्ध किस्म के जो योगी होते हैं , वह
उन वेवलेंथ को पकड़ने की क्षमता से युक्त होते हैं जो

सीधे महामाया से आते हैं या उस पराशक्ति से आते हैं

उसका आधार उसके संकेत सब कुछ वह समझ लेते हैं लेकिन ऐसे साधकों की संख्या बहुत कम होती है ।

इसके बाद आते हैं वह साधक जिनके पास उच्च कोटि की भैरवी शक्तियां होती है ।

यह शक्तियां जितनी ज्यादा सात्विक !

जितनी ज्यादा शुद्धि संयुक्त होंगी

वे उतनी बढ़िया माध्यम बनेंगी ॥

यहां पर शुद्धि का मतलब सभी प्रकार की शुद्धि से है

जिसमें शरीर की शुद्धि के साथ-साथ आचार विचार और व्यवहार तीनों प्रकार की शुद्धियां भी शामिल है ।

जो उच्च कोटि की भैरवी शक्ति होगी

वह बिल्कुल एक एचडी टीवी के जैसे कार्य करेगी और साधक को उस देवीय सत्ता के साथ संपूर्ण संपर्क का सौभाग्य प्रदान करेगी

यू कह सकते हैं कि उस भैरवी शक्ति के अंदर वह परा शक्ति पूर्ण रूप से अपने स्वरूप को अभिव्यक्त कर पाती है.....

उस अभिव्यक्ति को उससे संबंधित साधक देख पाता है.....

समझ पाता है.....

और

उसके अनुसार साधनात्मक रूप से.....

आध्यात्मिक रूप से

आगे बढ़ पाता है

वाम मार्ग में देवी शक्तियों के साथ संपर्क कराने का जो कार्य भैरवी शक्तियां करती हैं

वही कार्य दक्षिण मार्ग में गुरु के द्वारा शिष्यों को प्राप्त होती है ।

गुरु यदि साधना संपन्न है तो

वह दैवीय शक्तियों के स्वरूप को भी जानता है ।

उनकी विशिष्टता को भी जानता है ।

वह अपने शिष्य को भी जानता है

और उसकी क्षमता को भी जानता है ।

उसके अनुसार वह शिष्य को उस परा शक्ति से संपर्क कराता है ।

यह जानना भी जरूरी है कि गुरु भी अपने ज्ञान और साधना के अनुसार ब्लैक एंड व्हाइट टीवी के समान हो सकता है

जो थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त हो

वह इतना ही ज्ञान अपने शिष्यों को प्रदान कर सकता है.....

दूसरी ओर साधनात्मक शक्ति से युक्त !

प्रबल आध्यात्मिक गुण !!

सात्विक आहार विचार और व्यवहार वाला गुरु !!!

ठीक किसी एचडी टीवी की तरह ही अपने शिष्यों में उस परा शक्ति का अनुभव कराने में समर्थ होता है.....

अस्तु...

भैरवी शक्ति आमतौर पर बिरले लोगों को प्राप्त होती है.....

शारीरिक संबंध बना लेना या विभिन्न मुद्राओं में या आसनों में सहवास कर लेना साधना नहीं है

और ना ही इससे भैरवी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है.....

इस बात को आप स्पष्ट समझ ले

भैरवी स्वयं में उच्च कोटि की साधिका होती है और वह साधनात्मक क्षमता में उसके भैरव यानि साधक से ज्यादा क्षमता युक्त होती है

भैरवी शक्ति प्रकृति की तरफ से या उस महामाया की तरफ से मिला हुआ वरदान है ।

साधक की साधना क्षमता

उसके पूर्व जन्म के किए गए तप

के आधार पर यह भैरवी शक्ति उसे प्राप्त होती है

यह भैरवी शक्ति प्रेमिका के रूप में भी हो सकती है !

पत्नी के रूप में भी हो सकती है !

और माता के रूप में भी हो सकती है.....

इसका एक उदाहरण है स्वामी रामकृष्ण परमहंस !

उनकी भैरवी शक्ति उनकी पत्नी मां शारदा थी

जिसे वह मातृ रूप में देखा करते थे

किसी किताब में पढ़कर या किसी कहानी को पढ़कर
भैरवी के विषय में कोई गलत धारणा ना बनाएं ।

भैरवी अगर वास्तव में भैरवी है

तो वह साधक को क्षणभर में पूर्णता दे सकती है....

तो क्षणभर में जमीन में गाड़ने की शक्ति भी रखती है ।

वह स्वयं उस पराम्बा का जीवित स्वरूप होती है ।

इसलिए इस प्रकार की साधनाएं बेहद सावधानी और

अनुभवी साधक के निर्देश पर ही करनी चाहिए

वरना गंभीर नुकसान हो सकता है

भैरवी बनने के लिए जो स्त्री शक्ति होती है ...

उसके अंदर विभिन्न प्रकार के बीज मंत्र को तांत्रिक

प्रक्रिया के द्वारा अंग प्रत्यय में स्थापित किया जाता है ।

यह ठीक वैसा ही होता है जैसे किसी देवी प्रतिमा के

अंदर प्राण प्रतिष्ठा की जाती है ।

फर्क सिर्फ इतना होता है कि देवी प्रतिमा पत्थर या धातु

की बनी होती है जबकि भैरवी स्वयं एक जीवित मानवी

होती है

चंचला भैरवी ने तेजल को इस प्रकार की प्रक्रिया से गुजारा और उसके अंग प्रत्यंग में विभिन्न बीज मंत्रों की स्थापना करते हुए उसके पूरे शरीर को जागृत किया ।

जब इस प्रकार का जागरण संपन्न होता है तो पूरा शरीर एक विशिष्ट आभा से भर जाता है ...

उस शक्ति के आह्वान और स्थापन की वजह से भैरवी के चेहरे में अद्भुत तेजस्विता बिखर जाती है

उसमें एक दैवीय चमक आ जाती है....

इस चमक को देखकर स्वयं ही हृदय में आदर और श्रद्धा का भाव उत्पन्न होने लगता है ।

तेजल के चेहरे में भी तेजस्विता छलकने लगी थी !

उसका अंग प्रत्यंग एक देवी आभा से युक्त हो चुका था ।

मंत्र स्थापन करने के बाद चंचला भैरवी ने तेजल के कान में एक गुप्त तांत्रिक बीज मंत्र बताया उसके जाप का निर्देश दिया ।

उस समय तक रात गहरा चुकी थी अर्ध रात्रि लगभग समीप थी.....

मंत्र जाप की प्रक्रिया बताने के बाद चंचला भैरवी बाहर चली गई ।

बाहर एक आंगन सा बना हुआ था ।

जिसके ठीक बीच में एक मंडप जैसा आकार बना हुआ था ।

जो लगभग 5 फुट बाई 5 फुट का रहा होगा ।

जिसमें ऊपर कंगूरा जैसा बना हुआ था ।

नीचे काले पत्थरों का फर्श था ।

उसके सामने एक छोटा सा तालाब जैसा बना हुआ था

जिसमें कभी पानी हुआ करता होगा

लेकिन फिलहाल वह सूखा था ।

उस मंडप में जाकर चंचला भैरवी ने कुछ विचित्र प्रकार के यंत्र जमीन पर कुमकुम से बनाये ...

चारों कोनों में चार दीपक की स्थापना की और विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण किया

तेजल अभी भी कमरे के अंदर ही बैठी हुई थी । लगभग 15-20 मिनट मंत्रोच्चार करने के बाद चंचला भैरवी ने आसमान की ओर हाथ उठाकर कुछ विचित्र प्रकार के मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ किया

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी देवीय शक्ति का आह्वान कर रही हो । उसके हाथ हवा में आह्वान की मुद्रा में उठे हुए थे और नेत्र किसी दूरस्थ शून्य में केंद्रित थे

जैसे किसी अदृश्य लोक को इंगित करके वह मंत्र जाप कर रही हो ऐसा दिख रहा था

तभी !

अचानक

आसमान में बिजली कौंधी !

एक बिजली की किरण ठीक उस तालाब के बीच में आकर गिरी ।

जैसे ही वह बिजली उस तालाब के बीच में आकर गिरी

कमरे के अंदर बैठकर मंत्र जाप करती हुई तेजल के अंदर शक्ति का स्पंदन प्रारंभ हुआ

उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसे अपने आसन से उठना है ...

उसे कहीं जाना है.....

काफी देर तक उसने अपने आप को रोकने की कोशिश की....

लेकिन उसका शरीर उसके बस में नहीं था.....

ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके शरीर पर नियंत्रण कर लिया हो

तेजल अपने आसन से उठकर उस मंडप की ओर बढ़ गई

आसमान से बिजली गिरने का सिलसिला जारी था और अजीब बात यह थी कि वह बिजली ठीक उसी तालाब में आकर गिरती थी ...

ऐसा लगभग चार पाँच बार हुआ

उस बीच में तेजल आकर उस मंडप के फर्श पर चंचला भैरवी के द्वारा बनाए गए यंत्र के बिल्कुल बीच में बैठ गई ।

बैठने के बाद उसने चंचला भैरवी की ओर देखा ...

चंचला भैरवी ने उसे कहा - किसी भी हालत में जब तक मैं ना आऊँ ! तुम्हें आसन नहीं छोड़ना है !

इस बात का ध्यान रखना !

किसी बात से नहीं डरना !

तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा !

मैं आसपास ही मौजूद हूँ

इतना कहकर चंचला वहां से चली गई.....

अब स्थिति यह थी कि सुनसान पड़े हुए उस खंडहर के बड़े से आंगन में बने हुए उस छोटे से मंडप के बीच में तेजल अकेले बैठी हुई मंत्र जाप कर रही थी ।

आसमान से गिरती हुई बिजली की बौछार बंद हो चुकी थी लेकिन काले काले बादल अब भी उमड़ रहे थे ।

अचानक !

जोरदार बिजली कड़की और उस मंडप के छत पर गिरी...

मंडप बुरी तरह से थर्राया और जमीन के अंदर घुसने लगा....

मंडप लगभग 15 फीट नीचे की तरफ गया होगा । उसके बाद वह रुक गया ।

सामने लगभग 50 मीटर की दूरी पर, मंदिर का गर्भ गृह दिखाई दे रहा था ।

तेजल को ऐसा लग रहा था जैसे वह बाहर मंदिर के गलियारे में बैठी हो और उसे गर्भ गृह के अंदर का दृश्य दिखाई दे रहा हो

गर्भ गृह में 10 फीट ऊंची एक प्रतिमा दिखाई दे रही थी । जिसमें देवी महाकाली शव बने हुए शिव के ऊपर खड़ी हुई दिखाई दे रही थी ।

काले रंग के पत्थर से बनी हुई वह आकृति बेहद विकराल स्वरूप में बनी हुई थी

ऊंचा दस फुट का उसका आकार भी उसे विकराल बनाने में अपना भरपूर योगदान दे रहा था ।

मूर्ति की आंखें बड़ी बड़ी थी और उसकी लाल रंग की जीभ बाहर निकलकर लप-लपा रही थी ।

दाहिने हाथ में चंद्रहास खडग आकाश की ओर उठा हुआ था । जो चांदी जैसी किसी धातु का बना हुआ था । वह चमचमा रहा था

मूर्ति के गले में नरमुंड की माला पड़ी हुई थी ।

बाएं हाथ में खप्पर था

दाहिने हाथ में एक ताजा कटा हुआ सिर था ...

जिसमें से खून की बूंदें टपक रही थी ।

उस आकृति को देखकर तेजल की आत्मा तक काँप गई ।

वह वहां से उठकर भाग जाना चाहती थी लेकिन वह अपनी जगह से नहीं हिल पा रही थी । तभी उसे सामने का दृश्य परिवर्तित होता हुआ दिखाई दिया ...

एक बाबा जो दिखने में खप्पर नाथ जैसा था ...

दिगंबर अवस्था में मूर्ति की बाईं तरफ से निकलकर आते हुए दिखाई दिए

सिर पर लंबी-लंबी जटाएँ थी, जो उसके कंधों तक बिखरी हुई थी ।

चेहरे पर लंबी दाढ़ी थी जो उनके सीने तक आ रही थी ...

दाढ़ी और सिर के सारे बाल बिल्कुल काले थे जो उसके युवा होने की गवाही दे रहे थे ...

लगभग 7 फुट ऊंचा उसका बदन हट्टा कट्टा और मजबूत था ।

उनके साथ पांच और लोग थे !

सभी ऊंची कद काठी के थे !

लगभग 6 - 6 फुट के !

और !

पूर्ण दिगंबर अवस्था में

उनके हाथ में नगाड़े जैसे वाद्य यंत्र थे !

स्वयं उस विशालकाय बाबा के हाथ में एक डमरु जैसा यंत्र था ।

मूर्ति के सामने पहुंचते ही सभी ने अपने-अपने वाद्य यंत्र को बजाना चालू कर दिया ।

पूरे मंदिर का वातावरण उन वाद्य यंत्रों की आवाज से गूंजने लगा ।

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मंदिर की दीवाले भी उन ध्वनियों को दोहरा रही है

आप कभी किसी मंदिर में आरती में शामिल हुए हो ।
तो !

जैसे ही आरती के साथ ढोल नगाड़े जैसे वाद्य यंत्र बजने लगते हैं....

तो वातावरण में एक अलग ही प्रकार की विशिष्टता उभरने लगती है

यदि आप किसी बंगाली दुर्गा पंडाल में गए हो और वहां के नृत्यमय पूजन में शामिल हुए हो तो आप इस अनुभव को बेहद सरलता से समझ पाएंगे

यह एक ऐसा अनुभव है जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता ...

जैसे शिव का तांडव शब्दों से परे है
ठीक वैसे ही

शक्ति का लास्य भी शब्दों की सीमा से बाहर की स्थिति है

जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है ...

लगभग पाँच मिनट तक किसी अजीब से गीत का गायन करते हुए इन वाद्य यंत्रों को बजाकर देवी के सामने वे सभी उन्मत्त होकर नृत्य करते रहे । उसके बाद वह मूर्ति के सामने बैठकर पूजन करने लगे ...

उसके बाद सभी ने मूर्ति को साष्टांग दंडवत प्रणाम किया ...

फिर वह लोग अपने-अपने वाद्य यंत्र बजाते हुए गर्भ गृह से निकल कर जिधर से आए थे उधर वापस चले गए

अब गर्भ ग्रह में केवल बाबा खप्पर नाथ के समान दिखने वाला वह दिगंबर बाबा बैठा हुआ था.....

उसके मुख से निरंतर मंत्रोच्चार की ध्वनिया निकल रही थी ।

बिल्कुल स्पष्ट !

शुद्ध !

संस्कृत में उच्चरित होते हुए मंत्र ,,,

वातावरण को अजीब सी दिव्यता प्रदान कर रहे थे ...

लगभग 5 या 10 मिनट का समय बीता होगा जब

अचानक मंदिर के अंदर घुंघरू की आवाज आने लगी ।

एक युवती जो पूर्ण दिगंबर अवस्था में थी !

वह बेहद सधे हुए कदमों के साथ अपने घुंघरू की

झंकार से पूरे मंदिर को गुंजरित करती हुई महाकाली की

प्रतिमा की ओर बढ़ रही थी ...

उसकी पीठ तेजल की तरफ थी ...

वह आगे बढ़ते हुए महाकाली की प्रतिमा के सामने

पहुंच गई और उसके सामने रखी हुई चौकी पर बैठ गई

।

जैसे ही वह आसन पर बैठी

दीपक की रोशनी में उसका चेहरा दिखाई देने
लगा.....

तेजल आसन से गिरते-गिरते बची.....

वह तो स्वयं तेजल थी.....

फर्क सिर्फ इतना था कि ...

जहां तेजल की देह लालिमा लिए हुए गोरे रंग की थी ।

वहां महाकाली की प्रतिमा के सामने बैठी हुई वह युवती
हल्के सांवले रंग की थी

तेजल के बाल जहां कंधों तक स्टेप कट मे कटे हुए थे

॥ वही रहस्यमय युवती के बाल कमर तक बिखरे हुए
थे ...

बाकी देहयष्टि में कोई फर्क नहीं था

वह भी बिल्कुल तेजल की ही तरह बेहद सुंदर और
मादक देहयष्टि की स्वामिनी थी ...

बाबा खप्परनाथ ने ठीक वैसा ही उस सुंदरी का पूजन किया, जैसा चंचला भैरवी ने कुछ समय पहले खंडहर में तेजल का किया था.....

तेजल आंखे फाड़ फाड़ कर यह सब देख रही थी.....

आधे घंटे तक यह पूजन चलता रहा होगा.....

बाबा के पूजन के साथ ही उस युवती के अंदर आवेश आना प्रारंभ हो गया ।

वह अपने स्थान पर पहले थरथराने लगी ।

उसके बाद धीरे-धीरे उसने अपने सर को दाएं बाएं झटकना चालू कर दिया ।

बाबा का मंत्र जाप जारी था

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी प्रकार का आह्वान कर रहे हो कुछ समय और बीता अब वह बाबा मंत्र जाप के स्थान पर देवी स्तुति का उच्चारण कर रहे थे । यह कुछ-कुछ शिव तांडव स्तोत्र के समान बेहद मादक और उत्तेजक शब्द श्रृंखला में बंधा हुआ था । जल्द ही उसका प्रभाव भी दिखाई देने लगा !

वह युवती अपने आसन से उठ खड़ी हुई और नृत्य करने लगी

नृत्य की उग्रता और तीव्रता लगातार बढ़ती जा रही थी । वह युवती बेहद उग्र स्वरूप में कूद कूद कर नृत्य कर रही थी ।

उसकी आंखें बेहद लाल लाल और भयानक दिख रही थी

बाबा का मंत्र जाप भी तेज और तेज होता जा रहा था ...

ऐसा लग रहा था जैसे कोई सिंह गर्जना कर रहा हो
पूरा मंदिर उस ध्वनि से थर्रा रहा था

मंत्र और नृत्य की तीव्रता के साथ साथ पीछे स्थित महाकाली की मूर्ति में भी जैसे तेजस्विता बढ़ रही थी.....

तभी बाबा के सहयोगी वापस आते हुए दिखे ।
उनके साथ लगभग 20-22 वर्ष का एक युवक भी था ।

उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी प्रकार के नशे में था । वह लाने वालों के ऊपर लदा हुआ सा प्रतीत हो रहा था ।

उन लोगों ने उसे लाकर देवी प्रतिमा के सामने बने हुए बली यूथ पर लिटा दिया । वह बली यूथ पर पेट के बल पड़ा हुआ था । उसकी गर्दन यूथ से थोड़ी सी बाहर निकली थी ।

उसके बगल में चमचमाती हुई एक बड़ी सी तलवार रखी हुई थी । जो लगभग वैसी ही थी । जैसी देवी के हाथ में मौजूद थे । नृत्य करती हुई उस युवती की भाव भंगिमा रौद्र से रौद्र होती जा रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आंखों से अग्नि की ज्वाला सी निकल रही हो....

वेग से थिरकती हुई उसकी देह कुछ देर के लिए थमी । उसने अपना मुंह खोल दिया और बाबा ने एक खप्पर में भरा हुआ द्रव उसे पिला दिया । नृत्य की गति लगातार बढ़ती चली गई.....

उसके बाद उसने बगल में रखी हुई तलवार को उठा लिया और देवी प्रतिमा की ओर देख कर नृत्य करना चालू कर दिया

उसके साथ साथ अब गर्भ गृह में मौजूद सारे लोग बेहद रुद्र स्वरूप में नृत्य कर रहे थे ।

तेजल अपने स्थान पर डर के मारे कांप रही थी उसने सोचा भी नहीं था कि उसे ऐसा दृश्य भी देखना पड़ेगा ...

वह चीखना चाहती थी लेकिन डर के मारे उसके मुंह से आवाज भी नहीं निकल रही थी

उसे समझ आ गया कि उस युवक की बलि दी जाने वाली है ।

वह उसे रोकना चाहती थी लेकिन अवश थी

अचानक !

नृत्य करती हुई उस युवती ने अपने तलवार का एक वार किया

और !

उसके बाद उसने बगल में रखी हुई तलवार को उठा लिया और देवी प्रतिमा की ओर देख कर नृत्य करना चालू कर दिया

उसके साथ साथ अब गर्भ गृह में मौजूद सारे लोग बेहद रुद्र स्वरूप में नृत्य कर रहे थे ।

तेजल अपने स्थान पर डर के मारे कांप रही थी उसने सोचा भी नहीं था कि उसे ऐसा दृश्य भी देखना पड़ेगा ...

वह चीखना चाहती थी लेकिन डर के मारे उसके मुंह से आवाज भी नहीं निकल रही थी

उसे समझ आ गया कि उस युवक की बलि दी जाने वाली है ।

वह उसे रोकना चाहती थी लेकिन अवश थी

अचानक !

नृत्य करती हुई उस युवती ने अपने तलवार का एक वार किया

और !

युवक की गर्दन धड़ से अलग हो गई....

वाद्य यंत्रों की ध्वनिया फिर से अत्यंत तीव्र हो गई

और तभी !

अचानक !!

फिर से बिजली कड़की !!!

सामने दिख रहा पूरा दृश्य गायब हो गया ।

तेजल यह देखकर चौकी कि वह वापस उसी मंडप में बैठी हुई थी और सामने वही सूखा हुआ तालाब मौजूद था ।

उसे समझ में नहीं आया कि उसने जो दृश्य देखा था !

वह वास्तविकता थी !!

या उसकी कल्पना.....

उसका मन यह कह रहा था कि उसने वह सब कुछ सच में देखा था । लेकिन !

सामने जो कुछ दिख रहा था !

वह उन सारे दृश्यों के सिर्फ कल्पना होने की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त था ...

उसने अपने हाथ पैर हिलाने की कोशिश की तो वह सामान्य अवस्था में आ चुके थे और हिल रहे थे

उसने अपने सर को झटका और फिर से मंत्र जाप में लग गई ।

पूरी रात उसे विचित्र विचित्र प्रकार के अनुभव होते रहे.....

रात का अंतिम चरण चल रहा था ।

भोर खुलने ही वाली थी....

अंधेरे की ओट से प्रकाश की हल्की हल्की किरणें पृथ्वी की गोद में आने को आतुर होती हुई दिखाई दे रही थी ...

आसमान हल्की लालिमा दिए हुए बादल के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपने अंक में समेटे पृथ्वी की ओर देखकर मुस्कुरा रहा था.....

और !

अलसाई हुई पृथ्वी जैसे सूर्य का स्वागत करने के लिए अंगड़ाई लेकर उठने की तैयारी में थी ।

कुछ वैसा ही अनुभव हो रहा था.....

तेजल रात भर के मंत्र जाप से थक कर निढाल हो चुकी थी....

वह सुबह की ठंडी ठंडी हवा के लगते ही वही मंडप में ही नींद के आगोश में चली गई ।

जब सूरज की किरने प्रखर होने लगी और उनकी गर्मी शरीर से टकराने लगी ।

तब ! तेजल की आंखें खुली !

उस समय सुबह के 9 बजे होंगे ।

खंडहर अब स्पष्ट दिखाई दे रहा था और वह काफी बड़ा था । अवश्य किसी बड़े जमींदार या किसी रईस आदमी का रहा होगा ।

काफी बड़ी जगह मे बना हुआ था ...

आंगन के चारों तरफ ढेर सारे कमरे बने थे । जो काल के प्रवाह के सामने नतमस्तक होकर खंडहर होने की स्थिति में पहुंचे चुके थे ।

लेकिन !

उनकी बनावट बता रही थी कि वह बेहद भव्य रहे होंगे । दरवाजों पर की हुई कारीगरी और उनकी बनावट बता रही थी कि उसे बेहद सुंदर तरीके से बनाया गया होगा

अधिकांश कमरे बेहद जर्जर अवस्था में थे फिर भी अपनी भव्यता की कहानी बयां कर रहे थे । जैसा कि कहा जाता है :-

खंडहर के निशान बता रहे हैं

कि इमारत कभी बुलंद हुआ करती थी.....

नींद खुलने के साथ ही तेजल को चंचला भैरवी का ध्यान आया !

उसने आवाज लगाई

लेकिन कहीं से कोई उत्तर नहीं आया ।

उसने फिर जोर से आवाज लगाई ...

दीवाल से टकराकर आई हुई प्रतिध्वनी के अलावा कोई उत्तर नहीं मिला । वह दरवाजे की तरफ भागी । उसने

उसने दरवाजे को देखा तो उसमे अंदर कुंडी नहीं लगी हुई थी ...

धक्का देकर बाहर खोलने की कोशिश की

लेकिन वह नहीं खुला अर्थात वह बाहर से बंद था ।

काफी देर तक वह दरवाजा खोलने की कोशिश करती रही । लेकिन असफलता ही हाथ लगी । उसने दीवाल के ऊपर चढ़कर बाहर भागने की सोची और दीवाल पर चढ़ गयी.....

उसने बाहर देखा ...

खंडहर के बाहर चारों तरफ दूर-दूर तक भयानक जंगल था ।

बड़े-बड़े पेड़ चारों तरफ फैले हुए थे दूर-दूर तक पेड़ ही पेड़ दिख रहे थे , उस भयानक जंगल को देख कर उसकी रही सही हिम्मत भी जाती रही ।

उसने सोचा कि इससे बेहतर तो अंदर रहना ही है । अब जो होगा वह देखा जाएगा और नीचे उतर गई

नीचे उतरने के बाद जैसे ही उसने पीछे मुड़कर मंडप की ओर देखा ।

वह आश्चर्यचकित रह गई...

मंडप के बीच में चंचला भैरवी ध्यान की मुद्रा में बैठी हुई थी

चंचला उसी को देख रही थी

उसका चेहरा बिल्कुल भावहीन था.....

ऐसा लग रहा था जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो

तेजल दौड़कर उसके पास पहुंची....

वह उसे रात में हुई सारी घटना बताना चाहती थी....

वह उस खंडहर से निकल कर चले जाना चाहती थी...

जब वह दौड़ती हुई चंचला के पास पहुंची !

तो !!

उसने तेजल को पास में बैठने का इशारा किया !!!

तेजल कुछ बोलना चाहती थी

लेकिन !

चंचला ने उसे आंखों के इशारे से मौन कर दिया...

तेजल चंचला की बगल में जाकर बैठ गई

चंचला ने उसके हाथ को थाम लिया

जैसे ही उसने हाथ को थामा

जिस दरवाजे को खोलने के लिए अभी वह एड़ी चोटी का जोर लगा रही थी । वह दरवाजा चरमराहट की आवाज के साथ खुल गया ।

दरवाजे पर 4 फुट की ऊंचाई वाला हट्टे कट्टे बदन का लगभग 40 वर्ष का एक व्यक्ति खड़ा हुआ था । उसका सर मुंडा हुआ था । एकदम काले रंग के उस व्यक्ति का चेहरा भी बेहद खूखार लग रहा था । उसकी गोद में एक काले रंग का बकरा था

वह उस बकरे को मंडप के पास छोड़ कर वापस चला गया । तेजल ने चंचला भैरवी की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ।

चंचला बोली - तुम अभी जहां पर बैठी हो । वह प्राचीन काल में कापालिक साधना का एक प्रमुख गढ़

हुआ करता था । रात जो तुमने दृश्य देखा वह तुम्हारे पूर्व जन्म का दृश्य था । उस समय भी तुम बाबा के साथ साधना में सहयोगिनी के रूप में थी । उस समय तुम्हारी साधना खंडित हो गई थी । जिसे पूरा करने के लिए इस जन्म में बाबा तुम्हें साथ लेकर आया है ।

तेजल ने पूछा - वह नरबलि ?

चंचला बोली- कापालिक संप्रदाय में नरबलि एक सामान्य पूजन प्रक्रिया है । यह खंडहर सैकड़ों नरबलिओं का साक्षी रहा है ...

तेजल ने घबराकर पूछा - तो क्या वह नरबलि मैंने ही दी थी ...

चंचला - हां ! तुम पूर्व जन्म में अत्यंत ही उच्च कोटि की साधिका थी । यह जो प्रतिमा तुमने देखी थी वह महाकाली के अत्यंत उग्र स्वरूप संहार काली की थी । इसके साधक विरले होते हैं और तुम इसकी साधिका थी ।

तेजल ने पूछा - मेरी साधना खंडित कैसे हुई ?

तुमने बाबा के साथ पूर्ण विधि-विधान से 21 दिन के इस अनुष्ठान का प्रारंभ किया था ।

जिसमें शुरु के दस दिन 24 घंटे मंत्र जाप होना था उसके बाद ग्यारहवें दिन से प्रतिदिन एक नर बलि दी जानी थी ।

तुम्हारा अनुष्ठान प्रारंभ हुआ और उसके लिए तुमने 11 लोगों की व्यवस्था भी कर ली थी ।

उन्नीसवें 19 वें दिन तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा ।

कुल नौ लोगों की बलि दी जा चुकी थी सिर्फ 2 दिन साधना शेष रह गई थी ।

बीसवें दिन जब तुम दोनों साधना में बैठे हुए थे तब दो बचे हुए लोग भाग खड़े हुए

अब स्थिति विकट हो चुकी थी ...

क्योंकि साधना के बीच में साधना क्षेत्र को छोड़कर जाना वर्जित था ।

यही नहीं यदि शेष दो बलिया नहीं दी जाती तो मृत्यु भी निश्चित थी ।

अब एक ही उपाय शेष था ..

कि तुम अपनी बलि स्वयं दे दो ।

बाबा ने कहा कि तुम उसकी बलि दो और आखिरी दिन अपनी बलि दे देना

जिससे तुम्हारी साधना पूर्ण हो जाती

बीसवें दिन साधना पूर्ण होने के बाद बाबा अपनी बलि देने के लिए तैयार हो गया ।

उसने बली का खड़ग तुम्हारे हाथ में पकड़ाया और बली यूथ में लेट गया , अंत समय में तुम्हारे अंदर का नारी हृदय विचलित हो गया और तुमने उसके स्थान पर अपना ही सर काटकर बली कुंड में समर्पित कर दिया ...

बाबा इस अस्वाभाविक घटना के लिए तैयार नहीं था । वह काफी देर तक स्तंभित बैठा रहा !

फिर उसने उस दिन का अनुष्ठान तुम्हारी बली के साथ पूर्ण किया

यही नहीं यदि शेष दो बलिया नहीं दी जाती तो मृत्यु भी निश्चित थी ।

अब एक ही उपाय शेष था ..

कि तुम अपनी बलि स्वयं दे दो ।

बाबा ने कहा कि तुम उसकी बलि दो और आखिरी दिन अपनी बलि दे देना

जिससे तुम्हारी साधना पूर्ण हो जाती

बीसवें दिन साधना पूर्ण होने के बाद बाबा अपनी बलि देने के लिए तैयार हो गया ।

उसने बली का खड़ग तुम्हारे हाथ में पकड़ाया और बली यूथ में लेट गया , अंत समय में तुम्हारे अंदर का नारी हृदय विचलित हो गया और तुमने उसके स्थान पर अपना ही सर काटकर बली कुंड में समर्पित कर दिया ...

बाबा इस अस्वाभाविक घटना के लिए तैयार नहीं था ।

वह काफी देर तक स्तंभित बैठा रहा !

फिर उसने उस दिन का अनुष्ठान तुम्हारी बली के साथ पूर्ण किया

इक्कीसवें दिन पूजन पूर्ण हो जाने के बाद बाबा ने स्वयं के शीश को भी देवी के श्री चरणों में समर्पित कर दिया

देवी प्रसन्न होकर प्रकट हुई

बाबा को पुनर्जीवन प्रदान कर दिया

बाबा ने आशीर्वाद में तुम्हारा जीवन मांगा ।

लेकिन

देवी ने कहा -उसे सिद्धि अगले जीवन में ही प्राप्त होगी

उसी साधना को पूरा करने के लिए बाबा इस जन्म में लंबी तलाश के बाद तुम्हें खोज लाया है ...

तेजल यह सब सुनकर सन्न रह गई

चंचला भैरवी बोली - मैं तुम्हें अब एक गोपनीय सम्मोहन मंत्र बता रही हूं । यह एक ऐसा मंत्र है जो किसी पत्थर को भी सम्मोहित कर सकता है । तुम्हें दोपहर 12 बजे से लेकर रात के 12 बजे तक एक ही आसन पर बैठकर बिना हिले डुले उस मंत्र का जाप करना है ।

तेजल बोली - क्या मैं ऐसा कर पाऊँगी ?

चंचला भैरवी ने कहा - इस जन्म में तुमने बहुत ज्यादा साधनाएं नहीं की है और ना ही तुम्हारा एक आसन पर बैठकर मंत्र जाप करने का अभ्यास है । इसलिए 12 घंटे बैठ पाना तुम्हारे लिए सामान्य अवस्था में थोड़ा मुश्किल होगा । हमारे पास समय भी कम है इसलिए उसी मंत्र का प्रयोग करते हुए मैं तुम्हें सम्मोहित करूँगी और स्थिर अवस्था में 12 घंटे तक बैठने के लिए निर्देशित करूँगी । यह तुम्हें इस साधना को पूर्ण करने में मदद करेगा ।

इसके बाद चंचला भैरवी ने उसे सम्मोहित किया और उसे निर्देश दे दिया कि इस पूरे 12 घंटे तक उसके शरीर का कोई भी हिस्सा वह नहीं हिला पाएगी ।

सम्मोहन विद्या के बारे में अगर आप जानते हो तो वह एक ऐसी विद्या है जो हमारे आंतरिक मन को अपने नियंत्रण में ले लेती है । ऐसी स्थिति में जिस सम्मोहन कर्ता के द्वारा ऐसा किया जाता है हमारा अंतर्मन उसकी बात को किसी रोबोट की तरह पूरा का पूरा स्वीकार

करता है । जिसके चलते हम उसके गुलाम जैसे हो जाते हैं । उसके निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हैं

सम्मोहन के लिए लगातार अभ्यास आवश्यक होता है । इसके अलावा चारित्रिक और वैचारिक शुद्धि के साथ-साथ शरीर की शुद्धि का भी ध्यान रखना पड़ता है । सम्मोहन कर्ता जितना प्रबल चारित्रिक दृढ़ता से युक्त सात्विक व्यक्ति होगा, उसके सम्मोहन का प्रभाव उतना ही प्रबल होगा ।

सम्मोहन तीन प्रकार के होते हैं ।

पहला होता है व्यक्ति सम्मोहन !

जिसमें सम्मोहन कर्ता किसी एक व्यक्ति को सम्मोहित करके उसे निर्देश देकर कोई कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है ।

इसका नकारात्मक उपयोग भी किया जा सकता है और सकारात्मक उपयोग भी । उदाहरण के लिए यदि आप एक अच्छे सम्मोहन विशेषज्ञ हैं तो किसी शराबी को सम्मोहित करके उसे शराब छोड़ने के लिए प्रेरित कर

सकते हैं । ऐसे ही कई प्रकार के सदुपयोग व्यक्ति सम्मोहन के किए जा सकते हैं ।

दूसरा होता है समूह सम्मोहन !

इसमें व्यक्तियों के पूरे समूह को सम्मोहन करता अपने सम्मोहन में बांध लेता है और वह सारे व्यक्ति उस सम्मोहन करता के निर्देशानुसार कार्य करते हैं । समूह सम्मोहन का प्रयोग किसी सभा में बोलने के लिए या प्रवचन करने के लिए भी किया जा सकता है । यदि बोलने वाले के पास समूह सम्मोहन की क्षमता है तो सुनने वाले व्यक्ति उसकी अगड़म बगड़म बातों को भी बड़े ध्यान से और एकाग्रता से सुनते हैं और उसे बहुत बड़ा विद्वान मान लेते हैं । इसके कई उदाहरण आपको समाज में देखेंगे ...

तीसरा होता है आत्म सम्मोहन !

इसमें हम स्वयं को सम्मोहित करके अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं । उदाहरण के लिए यदि आप लोगों के बीच में बोलने से हिचक जाते हो या घबराते हो तो आप आत्म सम्मोहन के द्वारा इस घबराहट से निजात पा सकते हैं ...

इस विषय पर ज्यादा जानकारी के लिए गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के द्वारा लिखित “प्राैक्टिकल हिप्नोटिज्म” नामक किताब का अध्ययन कर सकते हैं ... जो कि पुस्तक महल से प्रकाशित है ।

यह तो हुआ सम्मोहन के विषय में थोड़ा सा प्रकाश ... अब वापस लौटते हैं कहानी की ओर

सम्मोहन साधना की विधि बता कर चंचला भैरवी वहां से बकरे को लेकर लुप्त हो गई ।

तेजल ने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया

शाम के 6 बजे तक उसका मंत्र जाप सामान्य चलता रहा और कुछ विशेष घटित नहीं हुआ

शाम के लगभग 6 बजे वही नाटा व्यक्ति फिर से प्रकट हुआ और उसने मंडप के सामने वाली दीवाल पर एक लालटेन लटका दी और फिर से बाहर चला गया ...

लगभग 10 बजे तक सब ठीक ठाक चलता रहा ।

अचानक तेजल को अपने पैर पर किसी चीज के चलने का एहसास हुआ ...

और समझने से पहले तेज चुभन महसूस होने लगी ।

उसने आंख खोल कर देखा तो उसके पांव पर एक बिच्छू बैठा हुआ था । वह एक काले रंग का बिच्छू था जो उसके पैर में अपना डंक चुभो चुका था ।

उसके पांव में भयंकर जलन हो रही थी लेकिन सम्मोहन के प्रभाव की वजह से वह अपने शरीर के किसी भी हिस्से को नहीं हिला पा रही थी....

उसने नजर उठा कर देखा तो पूरा आंगन बिच्छूओं से भरा पड़ा था ।

हर तरफ काले रंग के बिच्छू ही बिच्छू नजर आ रहे थे और वह सारे के सारे धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहे थे । उसके आसन के चारों ओर भी सैकड़ों बिच्छू बैठे हुए थे और कुछ उसके शरीर पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे

कुछ ही समय में वे सारे के सारे बिच्छू उसके शरीर पर चढ़ने लगे और इधर-उधर काटने लगे ।

दर्द के मारे उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे, लेकिन वह अपनी जगह से नहीं हिल पा रही थी

लगभग एक घंटे तक वही स्थिति रही ...

उस दौरान उसका पूरा शरीर बिच्छू के काटने से लाल लाल हो चुका था । शरीर का शायद ही कोई हिस्सा रहा हो जहां पर बिच्छू ने ना काटा हो

घंटे भर के बाद वे बिच्छू जैसे प्रकट हुए थे ठीक वैसे ही गायब भी हो गए ।

उसके बाद उसे अपने दोनों नेत्रों के बीच में गुदगुदी जैसा एहसास होने लगा

धीरे धीरे उसे अपने शरीर के दर्द का एहसास कम होने लगा.....

आधा घंटे गुजरने के साथ उसे उस स्थान पर हल्के हल्के प्रकाश का अनुभव होने लगा और उसे अपना शरीर बेहद हल्का महसूस होने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पंख के समान प्रकाश में तैरती जा रही हो

अर्धरात्रि से कुछ पहले चंचला भैरवी फिर से वहां पर आई तेजल की स्थिति को देखकर उसके चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दी जैसे वह संतुष्ट हुई हो ।

अर्ध रात्रि को 12 बजे के साथ साधना पूर्ण हुई ।
चंचला भैरवी ने मंडप के सामने रखा हुआ दीपक जला
दिया ।

उसने तेजल से कहा - तुमने सारे परीक्षणों को
सफलतापूर्वक पूरा करते हुए साधना संपन्न की है ।
इस साधना में सिद्धि का मतलब होता है कि चैतन्य तो
चैतन्य जड़ वस्तुएं भी इस सम्मोहन के प्रभाव में आकर
अनुकूल कार्य करने को बाध्य हो जाती है ।

तेजल ने कहा - मैं आप का मतलब नहीं समझी ।

चंचला भैरवी ने उसे समझाया - जो जीवित वस्तुएं हैं
उन्हें चैतन्य कहते हैं और जिनमें प्राण नहीं होते या जिसे
हम जीवित नहीं मानते जड़ वस्तु कहते हैं

इस सम्मोहन साधना का प्रभाव इन दोनों पर ही बराबर
पड़ता है । उदाहरण के लिए यह जो दीपक मैंने
जलाया है यह जड़ वस्तु है । अगर तुम्हारी साधना सिद्ध
हुई है तो इसे भी तुम्हारी बात का मान रखना होगा तुम
अपने मन में भावना कर इस दिए को बुझने के लिए
कहो ...

तेजल के लिए यह अजीब सी बात थी ॥

उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला मन यह सब बातें
मानने को तैयार नहीं था !

लेकिन !

जो भी घटित हो रहा था वह भी मानने लायक नहीं
था !!

इसलिए उसने मन ही मन उस दीपक को बुझने का
निर्देश दिया ...

लेकिन कुछ भी नहीं हुआ ...

उसने चंचला भैरवी की ओर देखा !

भैरवी ने दोबारा प्रयास करने का इशारा किया

उसने फिर से प्रयास किया !

लेकिन इस बार भी कुछ नहीं हुआ ...

ऐसे लगभग दस प्रयासों के बाद दीपक हल्का सा
थरथराया ।

चंचला भैरवी ने कहा - उस दिव्य शक्ति का ध्यान
करके अपने मन को केंद्रित करो और उसके बाद पूरी
इच्छा शक्ति को केंद्रित करके पूरे विश्वास के साथ

आदेश दो यह सोचते हुए कि वह तुम्हारे आदेश का पालन अवश्य करेगी । तभी तुम्हें सफलता मिलेगी

तेजल ने दुबारा से प्रयास किया लेकिन इस बार भी असफलता ही हाथ लगी ।

केवल दीपक हल्के से थरथराया ...

और तीन चार असफल प्रयासों के बाद पांचवी बार जब उसने पूरा ध्यान केंद्रित किया और दीपक को बुझने का आदेश दिया तो वह फट से बुझ गया

चंचला भैरवी ने फिर से दीपक को जलाया और तेजल को दोबारा से बुझाने का निर्देश दिया ...

तेजल प्रक्रिया को समझ चुकी थी उसने पहले ही बार में दीपक बुझा दिया ...

चंचला ने तीन बार दीपक जलाया और तेजल ने तीनों बार उसे बुझा दिया

अब तेजल के चेहरे पर प्रबल आत्मविश्वास झलक रहा था...

एक ही कार्य को करते हुए अगर बार बार असफलता हाथ लगी तो आत्मविश्वास डगमगाने लगता है ।

लेकिन कई बार के प्रयास के बाद जब सफलता हाथ लगती है, तो आत्मविश्वास फिर से आ जाता है । लगातार सफलता मिले तो आत्मविश्वास प्रबल होता जाता है । यह सहज मानवीय प्रवृत्ति है ।

उसने अपनी शक्ति का परीक्षण करने के लिए सामने जलते हुए लालटेन की तरफ देख कर उसे मानसिक निर्देश दिया और वह भी क्षण भर में बुझ गया

अगले दो दिनों तक चंचला भैरवी ने उसे विभिन्न प्रकार की तांत्रिक क्रियाएँ संपन्न करवाई ।

तीसरे दिन रात को उस गोपनीय तांत्रिक विग्रह के सामने उस काले बकरे की बलि दी गई

चौथे दिन सुबह वह वापस शमशान की ओर लौट गई । वहां बाबा उनके इंतजार में खड़ा था ।

बाबा ने तेजल से कहा - अब हमें आगे की साधना के लिए नेपाल की ओर जाना होगा ।

इतना कहकर वह आगे चल पड़ा ।

उसके पीछे पीछे तेजल भी बढ़ गई ...

चंचला भैरवी वापस खंडहरों की ओर लौट गई

उसके बाद वे दोनों नेपाल की ओर निकल गए और
जनकपुर पहुंचे । वहां से उन्हें पशुपतिनाथ धाम जाना
था ...

जनकपुर में जानकी मंदिर में दर्शन के लिए आई थी
तेजल !

जहां मेरी उससे मुलाकात हुई थी ...

या यूं कह लीजिए कि मैंने उसे देखा था ।

वह अपने द्वारा सिद्ध की हुई सम्मोहन विद्या का परीक्षण
कर रही थी

उसी के प्रभाव में वह बालक उसके पीछे पीछे चल पड़ा
था

यहां यह भी बता देना चाहूंगा कि सम्मोहन विद्या का
प्रभाव कोमल मन वालों पर जल्दी पड़ता है

इसलिए ...

नन्हे बालक और कोमल स्वभाव वाली बालिकाएं और महिलाएं आसानी से सम्मोहन के प्रभाव में आ सकती हैं ।

मैं वापस मौसी के घर लौट आया । उसके बाद अगले दिन हम लोग यानी मैं और जटाशंकर काठमांडू जाने के लिए बस पकड़ने पहुंचे । हमारी ही बस में पहले से विराजमान थे बाबा और तेजल

जनकपुर से काठमांडू जाने का रास्ता घाटी से होकर गुजरता है । इसलिए वहां पर बहुत ज्यादा तेज गति में गाड़ी नहीं चलाई जाती । बड़ी बसों की तुलना में छोटी बसें घाटी में आसानी से मुड़ जाती है । इसलिए उनकी संख्या ज्यादा होती है । हम भी वैसी ही एक बस में सवार थे ...

रात होते होते हम लोग काठमांडू पहुंच गए

काठमांडू नेपाल का प्रमुख पर्यटन स्थल है ...

वहां पर आप सड़क में थूकने या पेशाब करने जैसा कोई कार्य करें तो आपके ऊपर तुरंत फाइन हो सकता है ।

विशेष रूप से काठमांडू का मुख्य मार्केट बहुत ही साफ सुथरा और व्यवस्थित होता है ।

वहां पर रात के 10 बजे भी आपको महिलाएं सड़कों पर घूमती हुई दिख जाएंगी । यह देखकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ मैंने होटल वाले से, जहां हम लोग खाना खा रहे थे, इसके विषय में पूछा । उसने बताया कि यहां पर कोई किसी लड़की को नहीं छेड़ता । ऐसा कोई आरोप लग जाए या कोई ऐसा छेड़ता हुआ व्यक्ति मिल जाए तो पुलिस उसे तत्काल उठाकर ले जाती है और इतनी खातिरदारी करती है कि वह जिंदगी भर के लिए छेड़खानी करना भूल जाता है

यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा की एक छोटा सा देश होते हुए भी महिलाओं के लिए कितना सुरक्षित है ...

इसके साथ साथ मुझे अपने देश की व्यवस्था पर भी दुख हुआ ...

जहां निर्भया जैसे कांड हो रहे हैं

खैर

नेपाल की महिलाएं और पुरुष दोनों ही ऐसे होते हैं कि उनको देखकर आप उनकी उम्र का अंदाज नहीं लगा

सकते । गठा हुआ चुस्त बदन फुर्तीला शरीर और गोरा रंग वहां के लोगों की खासियत है ।

अधिकांश लोग ...

जिन से मेरी मुलाकात हुई वे बेहद सरल स्वभाव के स्वामी दिखे

हां !

बहुत सारे लोग भारत के भी हैं ।

जो वहां पर कई प्रकार के कार्य करते हैं ...

अगले दिन काठमांडू देखने का प्लान जटाशंकर ने बनाया । होटल वाले ने टैक्सी बुक करके देने का प्रस्ताव रखा लेकिन जैसा कि आप लोग जानते हैं जटाशंकर घाट घाट का पानी पिया हुआ आदमी था । वह जानता था कि होटल वाला पैसे ज्यादा लेगा । उसने प्रस्ताव रखा कि हम बस स्टैंड चलते हैं और वहां से कुछ व्यवस्था देखते हैं

होटल से बाहर निकलते ही टैक्सी वालों ने हमारा पीछा करना चालू कर दिया । जैसा कि यहां पर भी होता है ! किसी भी पर्यटन स्थल पर टैक्सी वालों के लिए पर्यटक ही उनके आय का माध्यम होते हैं और वे किसी

भी प्रकार से उसे अपनी गाड़ी में बिठाना चाहते हैं ताकि उनका उस दिन का व्यापार बन सके

बहुत सारे लोगों ने अलग-अलग प्रकार के ऑफर दिए...

सबसे कम पर जो ऑफर था वह था ₹2000 का , लेकिन जटाशंकर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह आगे बढ़ता रहा ।

हम लोग जब थोड़ा और आगे बढ़ गए तो धीरे-धीरे टैक्सी वाले पिछड़ने लगे !

उनकी भी समझ में आ गया कि ये हमारे बस में आने वाले नहीं है ।

हम लोग बस स्टैंड पहुंचे । वहां पता चला कि टूरिस्ट बस है ! जो काठमांडू के सभी प्रमुख स्थलों का दौरा कर वापस लाती है ! वह लगभग एक घंटे बाद छूटने वाली थी ।

उसके किराए की जानकारी प्राप्त करने के बाद हम लोग बस स्टैंड में ही बैठे हुए थे ।

तभी !

एक बुजुर्ग व्यक्ति हमारी तरफ आए और हमसे पूछा -
क्या आपको टैक्सी लगेगी ?

जटाशंकर ने मना करने का भाव दिखाया पर मुझे उस
व्यक्ति पर दया आ गई !

मैंने उससे पूछा - क्या लोगे ?

उसने बेहद विनम्रता से कहा - मेरा पेट्रोल का खर्चा
हजार रुपया हो जाएगा , उससे ऊपर जो आप दे दोगे मैं
ले लूंगा ।

यह सुनकर मैंने जटाशंकर की ओर प्रश्नवाचक निगाहों
से देखा ।

उसने मुस्कुराते हुए सहमति में सिर हिलाया ।

नेपाल मूल रूप से एक हिंदू देश है ।

राजशाही हटने के बाद वहां भी व्यापक परिवर्तन आए
हैं । वर्तमान समय में काठमांडू में पशुपति नाथ धाम
से ज्यादा वहां के बौद्ध मठों का दर्शन ज्यादा लोग करते
हैं ।

टैक्सी वाले ने कई बौद्ध मठों के दर्शन कराएं ।

लेकिन !

हम तो बाबा पशुपतिनाथ के दर्शन करने के लिए आए थे ।

तो हमें वहां देखने में तो सब अच्छा लगा, लेकिन जो आत्मिक संतुष्टि बाबा के दर्शनों से होनी थी वह नहीं हो पाई ।

आखिर में वह हमें बाबा पशुपतिनाथ के मंदिर की ओर ले चला उस समय लगभग 3:30 बज रहे थे ।

भगवान शिव देवों के देव महादेव है ।

उनके अधिकांश मंदिर सुनसान विरान और बहुत कम श्रृंगार से युक्त होते हैं ।

लेकिन भगवान शिव के पीठ पर पहुंचने के बाद आप स्वयं एक अलग सी दिव्यता अनुभव करते हैं , जो भगवान शिव के सानिध्य के अलावा कहीं और संभव नहीं है

पशुपतिनाथ अपने आप में एक अद्भुत देवता है । यह संपूर्ण विश्व मेरे और आपके अलावा विभिन्न प्रकार के पशुओं से भरा हुआ है । चाहे हम उन्हें बंदर, हाथी, घोड़ा, चूहा, बिल्ली कह ले या फिर गंधर्व, अप्सरा, यक्ष या मानव ...

किसी भी योनि को ले ले !

यह सारे के सारे विभिन्न प्रकार के पशु हैं !

इन सारे पशुओं के जो देवता है वह हैं ...

पशुपति !

भगवान शिव !!

अर्थात पशुपतिनाथ....

भगवान पशुपतिनाथ का मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू से तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में बागमती नदी के किनारे देवपाटन गांव में स्थित है ।

इसके साथ में लगा हुआ महाश्मशान भी है

भगवान पशुपतिनाथ नेपाल के राष्ट्रीय देवता माने जाते हैं । यह मंदिर नेपाल में सबसे पवित्र मंदिर माना जाता है । नेपाल में प्रचलित कथाओं के अनुसार भगवान शिव एक बार वाराणसी के अन्य देवताओं को छोड़कर बागमती नदी के किनारे स्थित मृगस्थली चले गए, जो बागमती नदी के दूसरे किनारे पर जंगल में है । भगवान शिव वहां पर चिंकारे का रूप धारण कर निद्रा में चले गए । महादेव के इस प्रकार गायब हो जाने से देवता चिंतित हो गए । उसके बाद वे उन्हें खोजने निकले ।

जब देवताओं ने उन्हें खोजा और उन्हें वाराणसी वापस लाने का प्रयास किया तो उन्होंने नदी के दूसरे किनारे पर छलांग लगा दी। इस दौरान उनका सींग चार टुकड़ों में टूट गया। इसके बाद भगवान पशुपति चतुर्मुख लिंग के रूप में प्रकट हुए।

भारत में प्रचलित एक अन्य कथा के अनुसार पाण्डवों को स्वर्गप्रयाण के समय भैसे के स्वरूप में शिव के दर्शन हुए थे।

जो बाद में धरती में समा गए।

महाबली भीम ने उनकी पूँछ पकड़ ली थी। ऐसे में उस स्थान पर स्थापित उनका स्वरूप केदारनाथ कहलाया, तथा जहाँ पर धरती से बाहर उनका मुख प्रकट हुआ, वह पशुपतिनाथ कहलाया।

खैर....

पशुपतिनाथ का मंदिर बाकी शिव मंदिरों से थोड़ा सा अलग है। इसकी बनावट कुछ कुछ तिब्बती मठों के जैसी है। जिनकी छत थोड़ी सी कटाव लिए हुए होती है

मंदिर के सामने ही एक विशालकाय नंदी की प्रतिमा भी स्थापित है । मैंने इतनी बड़ी नंदी की प्रतिमा किसी शिवालय में नहीं देखी जितनी इस मंदिर में स्थापित है ।

भगवान शिव के प्रति मेरे अंदर में जो लगाव है ... उसकी वजह से कह दूं या उनके सिद्ध क्षेत्र में होने वाले प्रभाव की बात कहूं

जब भी किसी शिव क्षेत्र में पहुंचता हूं ...

मन बड़ा प्रसन्न हो जाता है !

ऐसा लगता है जैसे अपने घर में आ गया.....

मंदिर काफी पुराना है, और काफी बड़ा है !

संभवतः तीन चार सौ साल पुराना अवश्य होगा । मंदिर का काफी हिस्सा लकड़ी से बना हुआ है ।

जैसा कि मैंने कहा कि भगवान पशुपतिनाथ नेपाल के राष्ट्रीय देवता माने जाते हैं । उनके प्रांगण में हमेशा भीड़ बनी रहती है । दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है ।

चाहे वह स्थानीय हो या बाहर से आने वाले पर्यटक

हर समय मेला लगा ही रहता है । जब हम लोग पहुंचे

उस समय भी कुछ-कुछ वैसी ही स्थिति थी ।

दर्शन करने के बाद हम लोग मंदिर के प्रांगण में कुछ देर बैठे रहे.... वापस आने की इच्छा नहीं हो रही थी लेकिन वापस तो जाना ही था....

जब हम वापस लौट रहे थे टैक्सी वाले ने काठमांडू का मार्केट भी दिखाया ।

बहुत ही सलीके से सजा हुआ हर मुमकिन चीज मिलने वाला मार्केट.....

ढेर सारे विदेशियों से भरा हुआ

उनके मनोरंजन का भी हर सामान वहां पर मौजूद था ।

बार से लेकर डिस्को तक और डांसिंग से लेकर कैसीनो तक पर्यटकों के लिए सब कुछ उपलब्ध था

उन रंगीनियों को देखते हुए हम वापस होटल पहुंच गए । होटल पहुंचते तक रात के 9 बज चुके थे । कुछ देर चर्चा हुई और उसके बाद जटाशंकर ने अपना दैनिक कोटा पूरा किया और हम दोनों बिस्तर पर लुढ़क गए ।

दस बजे तक जटाशंकर के खरटि गूंजने लगे ...

मैं भी बिस्तर पर पसर गया ...

दिनभर की भागदौड़ के बाद शरीर बुरी तरह से थका हुआ था

नींद आंखों को बंद करने के लिए आतुर थी

लेकिन साधक होने का मतलब होता है कि आप शरीर के हिसाब से नहीं चल सकते.....

अचानक मुझे कपालिनी की उपस्थिति का आभास हुआ ...

उसकी आवाज कानों में गूंजी - माधुरी आ रही है ।

मैं चौक गया !

रात के साढ़े दस बजे थे और मेरी आंखें नींद से बोझिल हो रही थी । माधुरी के इस समय आने का मतलब था कि शमशान भैरवी की साधना का जो दूसरा चरण करना था उससे संबंधित कोई विशेष बात होगी । मैं सचेत होकर बैठ गया

तभी !

दरवाजे पर हल्की सी ठक ठक की आहट हुई ।

जिसे सुनते ही मैंने दरवाजा खोल दिया ।

सामने खड़ी थी माधुरी !

उसने कहा - चलो !

एक क्षण के लिए मेरे मन में विचार आया -

जटाशंकर !!!!!

मैंने पलट कर देखा वह गहरी नींद में था ।

माधुरी हंसी और बोली - चिंता मत करो उसके जागने से पहले वापस आ जाएंगे ।

मैं भी हंस पड़ा और फिर हम दोनों वहां से निकल पड़े ।

माधुरी के पास मारुति जिप्सी थी । जिसे वह ड्राइव कर रही थी ।

पशुपतिनाथ मंदिर के तरफ हम लोग जा रहे थे

अब आप यह सोचेंगे कि माधुरी के पास जिप्सी कहां से आई ...

इन सब प्रश्नों का कोई औचित्य नहीं

अगर साधक वास्तव में साधक है ...

तो.....

उसकी जरूरत की चीजों की व्यवस्था किसी न किसी प्रकार से हो ही जाती है

चाहे वह देश में हो....

या विदेश में

घर में हो...

या जंगल में

यह कोई मायने नहीं रखता है

उस समय रात के 11 बजे होंगे जब हम लोग

पशुपतिनाथ मंदिर के पास पहुंचे । पशुपतिनाथ मंदिर
के पीछे की तरफ श्मशान है ।

श्मशान काफी लंबा है ।

जिसमें उस समय एक चिता जल रही थी...

जल रही थी कहने का मतलब ... उसमें अभी आग
बाकी थी ।

गाड़ी से उतरकर हम लोग श्मशान के अंदर पहुंचे ...

वहां पर दो लोग बैठे हुए थे.....

मजबूत कद काठी वाला एक पुरुष और एक युवती ...

आपने सही पहचाना

बाबा खप्परनाथ ! और तेजल !!!

जलती हुई चिता में दोनों विभिन्न सामग्रियों की

आहुतियां डाल रहे थे और बाबा खप्पर नाथ का मंत्र

उच्चारण चालू था ।

मैंने आपको पहले भी बताया था कि साधकों के अपने अपने आभामंडल होते हैं

आभामंडल का मतलब होता है वह प्रकाश का घेरा जो भगवान के फोटो में अक्सर दिखाई देता है या फिर गुरुओं के फोटो में उनके सिर के इर्द-गिर्द फैला हुआ दिखाई देता है

जैसे-जैसे आप साधना में आगे बढ़ते जाते हैं आपको दूसरे साधकों का आभामंडल भी दिखने लगता है

मुझे भी आभामंडल दिखते थे

मैंने कई साधकों के आभामंडल देखे हैं ।

उनमें हल्का पीलापन !

हल्की सफेदी !!

या हल्का नीला पन दिखाई देता है ।

लेकिन....

बाबा खप्परनाथ का आभामंडल सबसे अलग किस्म का था ।

खून की तरह गहरी लालीमा लिए हुए !

बाबा खप्पर नाथ का आभामंडल !!

उसके इर्द-गिर्द लगभग 10 फीट के व्यास के गोले
जैसा !!!

बिखरा हुआ था !

कुछ कुछ, सायंकालीन सूर्य के रंग का
आभामंडल !!!!!

ऐसा आभामंडल मैंने किसी साधक का नहीं देखा

फिर मैंने तेजल की ओर देखा ...

उसके आभामंडल में भी वैसी ही लालिमा छाई हुई थी !
उसका आभामंडल उतना विस्तृत नहीं था !!

हल्का-हल्का !!

उसके शरीर से एक फुट बाहर निकला हुआ प्रतीत होता
था

कपालनी के द्वारा बताई गई कथा के आधार पर मैं वैसे
भी बाबा खप्परनाथ के व्यक्तित्व से प्रभावित हो चुका
था

उनका तेजस्वी आभामंडल देखने के बाद मैं समझ गया
कि यह एक अद्वितीय साधक है ।

माधुरी ने बताया - यह बाबा खप्परनाथ है । यही तुम्हें दूसरे चरण की साधना सिखाएंगे ।

माधुरी ने मेरे कान में कहा - सावधान रहना !!
वे परीक्षण कर सकते हैं !!!

तारापीठ की छाया नामक कहानी में आपने पढ़ा होगा कि किस प्रकार से श्मशान में बाबा प्रचंड नाथ ने मेरा परीक्षण किया था । यह एक सामान्य सी प्रक्रिया है । जिसके द्वारा साधक की योग्यता को परखा जाता है, विशेष रूप से तब जबकि कोई विशिष्ट साधना या कोई विशेष तांत्रिक सामग्री उसे देनी हो ।

मैं सतर्क हो गया !

मैंने गुरुदेव को याद किया !!

गुरु मंत्र का मन ही मन जाप किया और महातारा की स्तुति का उच्चारण कर उनके बिंब को अपने मानस पटल पर स्पष्ट करके उनसे प्रार्थना की

तारा कवच के माध्यम से अपने आपको कवचित कर लिया....

तारा कवच एक स्तोत्र है । जिसमें भगवती तारा के स्वरूपों को अपने शरीर में मंत्रों के माध्यम से स्थापित किया जाता है । उनसे प्रार्थना की जाती है कि वह उन अंगों की रक्षा करें

माधुरी ने समीप पहुंचने पर बाबा को बताया - बाबा ! यह अघोराणंद है । इसके विषय में मैंने आपसे चर्चा की थी ।

बाबा खप्परनाथ ने अपनी लाल लाल आंखों से मुझे सर से पांव तक और पाँव से सर तक एक बार घूर कर देखा ।

इसके बाद उसने तेजल की ओर देखा और दोनों खिलखिला कर हंस पड़े ।

जैसे माधुरी ने कोई जोक मार दिया हो ।

उनकी हंसी देखकर मेरा आत्मविश्वास भी डगमगाने लगा

मैंने मन ही मन गुरुदेव को स्मरण किया और स्थिर चित्त होकर खड़ा हो गया ।

तभी मैंने देखा

बाबा ने अपने पास रखे हुए थैले में हाथ डाला !
उसमें से कालीमिर्च के कुछ दाने निकालें !
हाथ को अपने मुंह के पास रख कर हथेली को फैला
दिया ।

हथेली में रखे हुए उन दानों की ओर देखते हुए बाबा
खप्परनाथ ने ऊंचे स्वर में मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ कर
दिया ।

मैंने तारा कवच से अपने आप को कवचित कर लिया
था , लेकिन मैं इस परीक्षण को बहुत लंबा खींचने के
मूड में नहीं था क्योंकि वह समय का अपव्यय होता ।
एक और सुरक्षा चक्र अपने चारों तरफ बना लेने का
विचार किया ताकि डबल लेयर सुरक्षा हो सके.....

इस बात को ध्यान में रखते हुए मैंने मन ही मन भगवान
पशुपतिनाथ का ध्यान किया और अपने गुरु से प्राप्त
पाशुपतास्त्र मंत्र का जाप भी साथ में करने लगा

पाशुपत मंत्र :-

॥ ॐ श्लीम पशुम हुं फट ॥

यह एक अद्भुत और प्रचंड मंत्र है । इस मंत्र का जाप करने से साधक को हर स्थिति और स्थान पर भगवान पशुपति की कृपा और रक्षा प्राप्त होती है !

मैं तो स्वयं उनके प्रांगण में ही खड़ा था ।

जैसे जैसे मैंने मंत्रों का उच्चारण मन ही मन प्रारंभ किया मुझे स्वयं अपने चारों ओर एक सुरक्षा चक्र जैसा बनता हुआ प्रतीत हुआ ...

जोकि मेरी रक्षा करने को तत्पर था

उधर बाबा खप्पर नाथ का मंत्र जाप जारी था

कुछ समय बाद उन्होंने अपनी हथेली मेरी तरफ तान दी और हल्का सा झटका दिया ।

हथेली में रखे हुए काली मिर्च के दाने बंदूक की गोली की तरह मेरी ओर लपके

ऐसा लग रहा था जैसे मशीनगन से गोलियों की बौछार हो गई हो ...

वह सारे के सारे मेरे शरीर से लगभग 8 इंच की दूरी पर आकर किसी अदृश्य कवच से टकराकर जल गए । यह

कुछ-कुछ वैसा लग रहा था जैसे मच्छर मारने के बैट में मच्छर जब टकराते हैं तो एक आग सी निकलती है.....

और उसके बाद मच्छर स्वाहा हो जाते हैं नीचे गिर पड़ते हैं ...

ठीक वही स्थिति काली मिर्च के उन दानों की भी हो गई थी ...

बाबा खप्परनाथ मुझे देख कर मुस्कुराये और चिता के दूसरी तरफ लगे हुए आसन पर बैठने के लिए संकेत किया

श्मशान में की जाने वाली साधना में दिगंबर होने का प्रावधान रहता है ।

हम दोनों भी दिगंबर होकर बैठ गए ...

चिता के एक तरफ बाबा खप्परनाथ और तेजल बैठे हुए थे और चिता के दूसरी तरफ मैं और माधुरी बैठे हुए थे ।

बाबा ने शून्य में अपना हाथ फैलाया और उसके हाथ में एक लाल रंग का झोला आ गया ।

वह झोला उसने माधुरी की तरफ उछाल दिया ।

झोले के अंदर कुछ सामग्रियां थी, जो हम दोनों को आहुति में प्रयुक्त करनी थी ।

जैसे ही झोला माधुरी के पास आया, माधुरी ने उसके अंदर से सामान निकाल कर कुछ मेरी तरफ बढ़ा दिया कुछ अपने पास रख लिया ।

उधर बाबा खप्पर नाथ का मंत्र जाप और आहुतियों का सिलसिला जारी था

मैं आश्चर्य से तेजल को देख रहा था

एक बेहद रईस परिवार की राजकुमारी के समान जीवन गुजारने वाली जवान युवती ! मसान घाट में ! चिता के सामने बैठकर ! बेहद सहजता से आहुतियां संपन्न कर रही थी ...

वास्तव में पूर्व जन्म के संस्कार जब जागृत हो जाते हैं ! तो !!!

इस जन्म की स्थिति पूरी तरह से बदल जाती है ।

इसका साक्षात उदाहरण सामने था ...

लगभग 15 मिनट तक इसी प्रकार से आहुतियों का सिलसिला चलता रहा ...

फिर विराम लेकर बाबा ने मुझसे कहा - अघोरानंद ! श्मशान भैरवी की साधना का अगला चरण अब प्रारंभ होगा । इस दौरान तुम्हें विभिन्न प्रकार के परीक्षणों से होकर गुजरना है ।

अपने आप को नियंत्रित रखना है !

अन्यथा तुम्हारी मृत्यु निश्चित है !!

क्या तुम तैयार हो ?

अब मैं क्या कहता ?

क्योंकि मैं तो आया ही उसी के लिए था । मैंने सहमति में सिर हिलाया । मेरे सर हिलाते ही बाबा का भयानक अट्टहास गूँजा ...

फिर उनकी सिंह गर्जना जैसा स्वर गूँजा - तू मृत्यु से भयभीत तो नहीं होगा ...

श्मशान मृत्यु का आनंद लोक है ...

यहां पग पग में मृत्यु नृत्य करती है ॥

भूत प्रेत पिशाच हर प्रकार की इतर योनियों का यह क्रीडास्थल है

उनकी अघोर क्रीड़ाओं का भयानक दृश्य उपस्थित
होगा

सावधान होकर बैठना

यह हर प्रकार की आत्माओं और इतर योनियों का स्थान
है ॥

यह उनकी रासलीला का स्थान है ॥

उनके नृत्य का स्थान है ॥

उनके लास्य का स्थान है ॥

उनके तांडव का स्थान है ॥

यहां कुछ भी संभव है ।

मृत्यु हर पद पर विराजमान है ।

अब तेरे सामने जो दृश्य उपस्थित होगा वह भयानक
होगा ।

सावधान रहना !

किसी भी स्थिति में अपने आसन का त्याग नहीं
करना !!

हम तीनों अपने आसन से उठ जाए ... तब भी !

तुझे ना तो अपने आसन से उठना है ...

और ना ही अपना नियंत्रण खोना है

इतना कहकर बाबा ने मेरी ओर देखा ...

मैंने हाथ जोड़कर सहमति में सिर हिला दिया । मैंने अपने गुरु को याद किया और आने वाले सभी प्रकार की स्थितियों के लिए तैयार होकर बैठ गया ।

बाबा ने अपने पास रखी हुई मदिरा की बोतल खोली और आधा खुद पी गया और बाकी तेजल की ओर बढ़ा दिया ।

तेजल ने बड़ी सहजता से बाकी बची हुई बोतल को खाली करके खाली बोतल को एक तरफ उछाल दिया

मैंने देखा माधुरी भी झोले से निकली हुई सामग्री में से बोतल निकाल चुकी थी

वह बोतल लेकर मेरी बगल में आकर बैठ गई ।

वह इस प्रकार से बैठी थी कि उसकी बाईं जांघ मेरी दाहिनी जान्घ से टकरा रही थी

उसने बोतल में से एक घूंट लिया और बोतल को मेरी तरफ बढ़ा दिया ...

मैंने भी उसमें से एक घूंट लिया.....

और उसे वापस उसकी तरफ बढ़ा दिया

लेकिन उसने संकेत से पूरा पी जाने के लिए कहा ।

जब आप श्मशान में बैठे हो तो आपकी शक्ति के द्वारा
दिए जा रहे निर्देशों का पालन ठीक उसी तरह से किया
जाता है जिस प्रकार से फौज में होता है.....

बिना सवाल-जवाब के आदेश का पालन ...

उस स्थिति में इष्ट स्वयं उस शक्ति के माध्यम से साधक
को विभिन्न निर्देश प्रदान करता है

मेरे लिए एक साथ पूरी बोतल पी जाना थोड़ा सा
कठिन कार्य था ... लेकिन करना तो था ही ...
तो मैं भी पूरी बोतल को उदरस्थ कर गया

उधर बाबा अपनी प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए तैयारी में
था ।

थोड़ी देर के बाद तेज स्वर में हुंकार भरने की आवाज
आने लगी । लगभग 20-25 बार उसने हुंकारा भरा
होगा ...

हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ.... हूँ....

उसकी आवाज के साथ पूरा शमशान थरथरा रहा था ...

बाबा ने अपने पास रखी हुई थाली में से सामग्री निकाल कर चिता की अग्नि को समर्पित किया और उसके बाद उच्च स्वर में मंत्रोच्चार प्रारंभ कर दिया ।

शमशान का वातावरण धीरे-धीरे भारी होने लगा

बाबा ने अपने हाथों से चिता की ओर संकेत किया...

और

चिता में से एक लकड़ी का टुकड़ा उठकर उसके हाथ में आ गया

बाबा ने उस लकड़ी को अपने दाहिने हाथ में पकड़ा और कुछ मंत्रों का उच्चारण करते हुए उसे अपने पीछे की ओर उछाल दिया

वह टुकड़ा किसी कलम की तरह जमीन में खड़ा हो गया ।

बाबा जैसे-जैसे मंत्र जाप करता जा रहा था वह लकड़ी का टुकड़ा हमारे चारों ओर गोल घेरे का निर्माण करता जा रहा था

ऐसा लग रहा था जैसे उस लकड़ी के टुकड़े को कोई पकड़ कर उससे गोल घेरा बना रहा है...

उसका जला हुआ हिस्सा जमीन की तरफ था और बिना जला वाला हिस्सा ऊपर की तरफ था....

इससे पहले भी सुरक्षा चक्र श्मशान में बनते हुए मैंने देखा है और खुद भी बनाया है । सुरक्षा चक्र बनाने का ऐसा अद्भुत तरीका मैंने पहली बार देखा था ।

बाबा उस चिता की ओर देखते हुए अपने मंत्र जाप में लीन था और वह लकड़ी का टुकड़ा हमारे चारों तरफ घूम रहा था

हर बार उसके गोला बनाने की जगह थोड़ी दूर हो जाती । हर गोला दूसरे गोले से लगभग 1 फुट बड़ा होता था इस प्रकार से उसने 11 गोले बनाएं ।

ग्यारहवां गोला पूरा होते ही ...

वह लकड़ी का टुकड़ा जमीन पर गिर गया

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उस अद्भुत घटना को देख रहा था कि कैसे एक लकड़ी अपने आप घूम घूम कर गोल गोल घेरा बना रही है ।

तंत्र साधना का क्षेत्र वास्तव में विचित्र होता है !

यहां पर जो असंभव है !

वह भी संभव होता हुआ दिखाई देता है ।

इसलिए साधक को हर प्रकार की चित्र विचित्र घटना के लिए तैयार होना चाहिए ।

मैं इन सब के लिए तैयार था !

लेकिन ऐसी विस्मयकारी घटना देखने के बाद मैं भी भौचक्का होकर बैठा हुआ था

बाबा का तेज स्वर सुनाई दिया - मंत्र जाप प्रारंभ कर ।

रीढ़ की हड्डियों में सनसनाहट पैदा कर देने वाली आवाज को सुनते ही मैंने हड़बड़ा कर मंत्र जाप करना प्रारंभ कर दिया

मैंने डोम बाबा के निर्देश पर श्मशान भैरवी की साधना का पहला चरण संपन्न किया था ॥

उस दौरान मुझे श्मशान भैरवी का मंत्र भी प्रदान किया गया था । उसी मंत्र का उच्चारण मुझे यहां भी करना था ...

मैंने मंत्र जाप प्रारम्भ कर दिया ।

मेरी बगल में बैठी हुई माधुरी

आंख बंद करके अपने मंत्र जाप में लीन थी ...

मैंने सामने देखा तो तेजल भी आंखें बंद करके अपना जाप कर रही थी ।

केवल मैं ही उल्लू की तरह इधर-उधर देख रहा था ।

मुझे अपनी स्थिति पर थोड़ी शर्म भी आई

फिर मैं सहज होकर अपने जाप में लग गया ।

अचानक जोर से चीखने की आवाज

आई

मैंने हड़बड़ा कर आंखें खोली तो बेहद डरावना दृश्य सामने था । गोल घरे के बाहर विचित्र विचित्र आकार की डरावनी स्त्रियां खड़ी हुई चीख रही थी । जिनका आकार और स्वरूप दोनों ही भयानक थे

कुछ स्त्रियों की लंबाई सामान्य थी । तो कुछ स्त्रियों की लंबाई असामान्य रूप से लंबी थी । कुछ सामान्य देह की स्वामिनी थी तो कुछ पहलवान जैसे हट्टी कट्टी और कुछ एकदम दुबली पतली सी

कुल मिलाकर सभी प्रकार के चित्र विचित्र आकार की महिलाएं वहां पर खड़ी थी ...

सारी की सारी निर्वस्त्र थी....

सभी की आंखों में लालिमा छाई हुई

ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने आहार को देख रही हो

वे उस घरे को पार करने का प्रयास कर रही थी....

लेकिन

नहीं कर पा रही थी ॥

उसी प्रकार से डरावनी शक्ति की वे स्त्रियां घरे के बाहर खड़े होकर चित्र विचित्र आवाज निकालते हुए भयभीत करने का प्रयास करती रही ।

मैं समझ गया कि !

श्मशान जागरण की प्रक्रिया बाबा ने प्रारंभ कर दी है ...

कुछ समय के बाद पुरुष आकृतियां भी घरे के बाहर दिखाई देने लगी । उन्होंने भी उसी प्रकार आवाजें निकालकर भयभीत करने का प्रयास किया !

लेकिन कोई विशेष असर ना होता देखकर विभिन्न प्रकार की कुत्सित क्रीड़ाएं करने लगे...

अचानक शमशान के एक कोने से पेड़ों के हिलने की
आहट सुनाई देने लगी

ऐसा लगा जैसे कोई उन पेड़ों को जोरों से हिला रहा
है...

ऐसी अजीब अजीब घटनाएं होते हुए देखना भी

एक बेहद रोमांचक अनुभव है.....

मैं मंत्र जाप करता जा रहा था और हो रही घटनाओं को
भी देखता जा रहा था

अचानक !

कोने में खड़ा हुआ पेड़ हरहराकर नीचे गिर पड़ा !

तभी हवा का तूफान जैसा एक झोंका हमारी तरफ आने
लगा.....

मैंने देखा ...

बाबा ने चिता की ओर संकेत किया !

एक और लकड़ी उछलकर उनके हाथ में आ गई थी

कोने की तरफ से जो पेड़ गिरा था वहां से हवा का

बवंडर जैसा कुछ हमारी तरफ बढ़ रहा था और उस

बवंडर के बीच में एक विशालकाय आकृति भी दिखाई

दे रही थी

माधुरी ने धीरे से कहा - ब्रह्म राक्षस है !!!

भूत प्रेत पिशाच आदि अलग-अलग प्रकार की इतर योनियाँ होती है । इनमें ब्रह्मराक्षस सबसे ज्यादा शक्तिशाली माना जाता है

उसके आगमन के साथ ही सारी आकृतियाँ जो घरे के बाहर खड़ी हंगामा कर रही थी ।
वे भागकर एक कोने में खड़ी हो गई

यह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसे शहर के सबसे खतरनाक डॉन को देखकर छोटे मोटे बदमाश एक कोने में खड़े हो जाते हैं ।

धूल का वह बवंडर तेजी से हमारी ओर बढ़ रहा था ।
मुझे लगा कि 11 वें घरे के बाहर वह खड़ा हो जाएगा ...
लेकिन....
ऐसा नहीं हुआ ।

वह बेहद आसानी से दसवां घरा भी पार कर गया ।
बाबा के हाथ में जो जलता हुआ लकड़ी का टुकड़ा था ,

उसे उन्होंने अभिमंत्रित करके बाहर घेरे की तरफ उछाल दिया, जो जाकर पांचवें घेरे के बाहर गिरा

ब्रह्मराक्षस तब तक सातवें घेरे तक आ चुका था । जैसे ही वह जलते हुए लकड़ी का टुकड़ा पांचवें घेरे के बाहर निकला

एक जोरदार धमाका हुआ

और....

ब्रह्मराक्षस लुप्त हो गया ।

ऐसा लगा जैसे चलते चलते उसे किसी अज्ञात स्थान में उछल दिया हो ...

फिर वातावरण में शांति छा गई....

लेकिन

भारीपन लगातार बना रहा ।

कुछ समय तक शांति रही

अचानक तेजल और माधुरी अपने-अपने स्थान पर खड़ी हो गई

ऐसा लग रहा था जैसे उनके अंदर किसी प्रकार का आवेश आ गया हो ...

कुछ देर तक वे एक दूसरे को घूरती रही ...
उसके बाद दोनों चिता के चारों तरफ परिक्रमा करने
लगी

कुछ समय बाद दोनों शांत हो गई और एक स्थान पर
खड़े हो गई ।

अब स्थिति यह थी कि चिता के एक तरफ बाबा बैठे
हुए थे ।

दूसरी तरफ में बैठा हुआ था ।

सिरहाने की तरफ तेजल खड़ी हुई थी !

और पांव की तरफ माधुरी खड़ी थी

लगभग 10 मिनट तक वैसी ही स्थिति रही होगी ।

दोनों साधिकाएँ एक दूसरे के आमने सामने खड़ी हुई थी
और विभिन्न द्रव्यों की आहुतियां चिता में डाल रही थीं
।

हर आहुती के साथ चिता की अग्नि थोड़ी सी भभक
जाती

एक तरफ बाबा बैठकर अपने मंत्र जाप में संलग्न थे और दूसरी तरफ मैं बैठकर इन अद्भुत घटनाओं का साक्षी बना हुआ मंत्र जाप कर रहा था

अचानक मैंने देखा कि एक काले रंग का वर्तुल आकार बनता जा रहा है जो चिता के मध्य से बाहर की ओर निकल रहा है....

धीरे-धीरे उस वर्तुल का आकार बढ़ता चला गया वह बढ़ते बढ़ते इतना बड़ा हो गया कि अब पूरी चिता उस के घेरे में दिखाई दे रही थी

थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि तेजल बाबा के ऊपर आरूढ़ हो गई है

और कुछ क्षणों के बाद माधुरी आकर मेरे ऊपर आरूढ़ हो गयी

काले रंग का घेरा धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था और हम चारों के चारों भी अब उस घेरे के अंदर आ चुके थे

एक प्रकार से हम चारों उस समय एक काले रंग के
गुब्बारे जैसी संरचना में कैद लग रहे थे
चिता से नीली नीली लपटें निकल रही थीं
ऐसा लग रहा था जैसे नीले रंग का शिवलिंग हो
उसके मध्य में बीच बीच में महामाया का दिव्य बिम्ब
दिख जाता था

उसी स्थिति में लगभग तीन घंटे तक साधना चलती रही
।

सुबह के लगभग 4 बजे होंगे ।

जब बाबा के हुंकार का स्वर गूँजा और दोनों अलग
होकर बैठ गए ...

हम भी अलग हो गए ...

लगभग 4:30 तक मंत्र जाप चला होगा

धीरे धीरे वह काले रंग का रहस्यमय गोला धुंधला पड़ते
पड़ते गायब हो गया

बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया

उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरा

और कहा - वास्तव में तू योग्य साधक है

मैं तुझसे और तेरे आत्मनियंत्रण से प्रसन्न हूँ ।

तेरा गुरु मेरा गुरु भाई है ।

मैंने उन्हे साष्टांग दंडवत प्रणाम किया ...

बाबा ने फिर कहा - श्मशान भैरवी साधना का दूसरा चरण तूने सफलतापूर्वक पार कर लिया है । इसकी पूर्णता के लिए कल मैं तुझे श्मशान भैरवी दीक्षा दूंगा ...

माधुरी तुझे शक्ति पीठ पर ले आएगी ...

इतना कहकर वे तेजल के साथ वहां से चले गए ।
मुझे माधुरी ने होटल में छोड़ दिया और उसके बाद अगले दिन शाम को 6 बजे आने की बात कर वह चली गई

जब मैं कमरे में लौटा उस समय सुबह के 5:30 बज रहे थे ।

भाई जटाशंकर उसी मुद्रा में अपने बिस्तर पर पड़े हुए थे ।

मैं भी जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया और लेटते ही गहरी नींद में चला गया

दिन भर इधर-उधर घूमना फिरना चलता रहा और फिर से शाम को हम लोग वापस होटल पहुँच गए । इसमें करीबन 5 बज चुके थे ।

मैं नहा धोकर तैयार हो गया ।

उसके बाद मैंने जटाशंकर को बताया - जटाशंकर तुम तो जानते हो कि मैं एक साधक हूँ । आज रात को मुझे एक जगह जाना है ... मेरी तुमसे मुलाकात हो सकता है अब कल सुबह ही हो ।

जटा मेरी फितरत से वाकिफ़ थे । उसने सहमति में सिर हिलाया और वापस टीवी देखने में मग्न हो गया ।

लगभग 6 बजे मैं तैयार होकर नीचे आ गया । तभी मुझे माधुरी की जीप आती हुई दिखाई दी । उसके पास आते ही मैं उस पर सवार हो गया ।

लगभग 30 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद जिप्सी एक पहाड़ी पर चढ़ने लगी ।

हिमालय के साथ सटा हुआ पहाड़ी इलाका है नेपाल

ऊंची ऊंची पहाड़ियां वहां की विशेषताएं हैं ।

काठमांडू से लगभग 30 किलोमीटर दूर पहाड़ी पर हमारी गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी ।

रास्ते में मोड़ आया रास्ता बाईं तरफ मुड़ गया था ।

माधुरी ने अपनी गाड़ी उस तरफ मोड़ ली....

हम लोग करीब 10 किलोमीटर और चले होंगे ...

जहां हम पहुंचे वहाँ एक छोटा सा गांव था । वहां

मुश्किल से 10 या 12 झोपड़ीया रही होगी । एक

झोपड़ी के सामने माधुरी ने गाड़ी खड़ी कर दी । झोपड़ी

में से एक लगभग पचास साठ साल की महिला बाहर

निकली माधुरी मुझे लेकर उसके साथ झोपड़ी में

चली गई ।

झोपड़ी के अंदर जाने के बाद माधुरी ने मुझे उस महिला

से परिचय कराया - यह इरम है , यह बहुत बड़ी

साधिका है ।

वह महिला हमारे लिए चाय बनाने के लिए अंदर चले

गए ।

माधुरी ने धीरे से मुझसे कहा - इन्हें नेपाल में बोक्सी

कहा जाता है । इनकी उम्र लगभग 125 साल होगी ।

यह अपना रूप बदल सकती है और किसी और का रूप भी बदल सकती है ।

रात तक तुमको यहीं रहना है रात को यह तुम्हें साधना स्थल तक पहुंचाएगी ।

यह एक नई जानकारी दीजिए मुझे प्राप्त हो रही थी ।

इस विषय में मैंने थोड़ा बहुत सुन रखा था ।

लेकिन वह असम के स्त्री प्रदेश के विषय में था ...

वैसा ही नेपाल में भी होता है यह मुझे नहीं मालूम था ।

हिमालय से सटा हुआ असम और असम के बाद का

क्षेत्र तंत्र क्षेत्र माना जाता है । तंत्र विद्या में असम

की महिलाएं सबसे ज्यादा निपुण मानी जाती है ।

कामाख्या योनि पीठ का यहां पर स्थित होना इस बात का प्रमाण है कि सृष्टि का मूल बिंदु वही है और तंत्र का भी ।

असम की महिलाएं अद्भुत तंत्रज्ञ होती है । ऐसा माना

जाता है कि पूरे भारत में जो भी उच्च कोटि के तांत्रिक

विद्या सिद्ध हैं वे कामरूप कामाख्या से लौट कर ही

पूर्णता प्राप्त करते हैं ।

असम को कामरूप, कवरु नगर तथा स्त्री देश के नाम से भी जाना जाता है । जो भी व्यक्ति असम के किसी तंत्र क्षेत्र में प्रवेश करता है यह साधिकाएँ उसे अपने नियंत्रण में ले लेती हैं और उसके बाद वह उसे किसी भी रूप में परिवर्तित करने में सक्षम होती हैं ।

ऐसा कहा जाता है कि आमतौर पर वे पुरुषों को बैल के रूप में परिवर्तित कर देती हैं और खेती के लिए हल जोतने के लिए भी उसका इस्तेमाल करती हैं ।

इस दौरान बैल के पिछले हिस्से पर बेत की जो मार पड़ती है उसके निशान पड़ जाते हैं । वह निशान

कामरूप कामाख्या से साधना लेकर आने वाले अधिकांश साधकों के नितंबों पर देखे जा सकते हैं ।

यह इस बात का प्रमाण है कि वह पशु रूप में अपने आप को स्वीकार करता है , तब पशुपति के समान वह महिला साधिका उसे विभिन्न प्रकार की तंत्र क्रियाएं सिखाती है । इस दौरान वह उससे विभिन्न प्रकार के कार्य भी करवाती है जिसका उसे पशु वत पालन करना ही होता है

मेरा अनुभव यह है कि शाबर मंत्रों के साधकों में यह ज्यादा पाया जाता है ।

यदि आपको ऐसा अवसर मिले कि कोई ऐसा साधक आपको मिले जो कामाख्या, या कवरु नगर, में साधना सीख के आया हो, वहां कुछ महीने रह कर आया हो । तो अगर आप उसे चेक करेंगे तो उसके नितंबों में इस प्रकार के निशान आपको दिखाई देंगे ।

जो कि इन कहानियों की सच्चाई स्वयं बयान करते हैं कि वे स्त्रियां उन को बंदी बनाकर रखती है ...

खैर ...

यह एक अलग विषय है इस पर फिर कभी चर्चा करेंगे

उस कमरे के एक कोने में एक बकरी बंधी हुई थी । जो टुकुर-टुकुर हमारी तरफ देख रही थी । चाय पत्ती के उबलने की खुशबू भी आने लगी ...

तभी वह महिला एक छोटा सा बर्तन लेकर बाहर आई और इस बकरी के पास जाकर दूध दुहने लगी । दूध दुहकर वह अंदर निकल गई और फिर थोड़ी देर बाद

चाय लेकर आई । हम दोनों ने चाय पी । माधुरी ने उसे कुछ बताया । वह नेपाली भाषा में बात कर रही थी जो बहुत ज्यादा समझ में नहीं आई लेकिन इतना समझ में आया कि वह उसे समझा रही थी कि मैं वही रहूंगा और वह जा रही है । रात को मुझे उसे किसी स्थान पर पहुंचाना था ।

उस महिला ने सहमति में सिर हिलाया

चाय पीने के बाद माधुरी झोपड़ी से बाहर निकलकर जीप लेकर चली गई । अब मैं उस कमरे में बैठा हुआ था । चाय के बर्तन लेकर वह अंदर चली गई । उसके बाद अंदर खटर पटर की आवाजें चलती रही । मैं शांति से अपने जगह पर उलट-पुलट होता हुआ बैठा रहा.....

तभी !

अंदर से एक बेहद खूबसूरत युवती बाहर निकली

उसकी उम्र मुश्किल से 20-25 साल रही होगी । उसने बंगाली स्टाइल में साड़ी पहनी हुई थी जिसमें अंदर ब्लाउज नहीं पहनते हैं

उसकी देहयष्टि बेहद मादक थी ।

जितना खूबसूरत उसका चेहरा था उतने ही कटाव भरे उभार उसके शरीर पर भी थे.....

जो झीनी साड़ी उसने पहनी हुई थी, वह उसके देह सौंदर्य को छुपा कम रही थी और दिखा ज्यादा रही थी

कुल मिलाकर यूं समझ लीजिए कि सब कुछ दिख रहा था

उसने मेरी ओर एक कटाक्ष भरी मुस्कुराहट छोड़ी और मध्यम गति से चलती हुई झोपड़ी से बाहर चली गई

मैंने बाहर की तरफ अपनी निगाह डाली तो वह संभवतः नहाने के लिए कुएं की तरफ जा रही थी । वैसा अद्भुत सौंदर्य मैंने कभी नहीं देखा था ।

इसलिए ना चाहते हुए भी मेरी निगाहें उसका पीछा कर रही थी ।

वह कुएं के पास पहुंची ,जो झोपड़ी के सामने ही बना हुआ था । वह इस तरह से बना हुआ था कि झोपड़ी के अंदर बैठे बैठे कुँए तक का नजारा साफ साफ दिखाई देता था

उसने कूयें में बाल्टी डालकर पानी को खींचना प्रारंभ कर दिया ।

पास ही एक छोटा सा बर्तन रखा हुआ था जो संभवतः सीमेंट का बना हुआ था । चार पांच बाल्टियों में वह भर गया

उसके बाद वहीं मुंडेर पर बैठ कर उसने स्नान करना प्रारंभ कर दिया....

अब आप स्वयं सोचें कि जिस प्रकार के झीने वस्त्र वह पहने हुए थी , वह जब पानी गिरने से गीले हो जाएंगे और बदन से चिपक जाएंगे तो देखने वाले की क्या स्थिति होगी

ठीक वही स्थिति मेरी भी थी.....

मैं मंत्रमुग्ध सा उसको देखता हुआ बैठा था । स्नान पूरा हो जाने के बाद वह मेरी तरफ मुड़ी और उसने अपने

ऊपरी हिस्से के वस्त्र को बड़े ही मादक अंदाज में अपने शरीर से अलग कर दिया ।

खजुराहो की अप्सराओं वाली मूर्तियों को भी मात देते हुए उसके सुगढ़ वक्षस्थल अनावृत हो चुके थे ।

मेरी आंखें उन पर जाकर अटकी हुई थी

उसने फिर से मुझे कटाक्ष भरी निगाहों से देखा और पलट गई ।

उसके पलटते ही मुझे एक झटका सा लगा और मेरे मन में यह विचार आया की कहीं यह इरम ही तो नहीं है

मैं इस तथ्य की पुष्टि करना चाहता था ।

इसके लिए मैंने अंदर वाले कमरे में झांकने की कोशिश की

वहां पर कोई नहीं था ।

मुझे आश्चर्य हुआ !

कोने में खड़ी हुई बकरी अजीब ढंग से मिमियाने
लगी ...

ऐसे !

जैसे कुछ संकेत करने का प्रयास कर रही हो ...

लेकिन बकरी की भाषा मुझे समझ तो नहीं आती

उसके भावों से मुझे ऐसा लगा कि वह शायद कुछ
संकेत करना चाहती है और बार-बार उस कमरे की ओर
इशारा कर रही थी ...

मैं हिम्मत जुटाकर उस कमरे की ओर बढ़ गया और
आश्चर्य !!!

वह कमरा बिल्कुल खाली था ।

उस कमरे से बाहर निकलने के लिए कोई और दरवाजा
भी नहीं था

चाय के वह बर्तन जो इरम उठा कर लाई थी वह धुल
कर रखे हुए थे । बिल्कुल करीने से

लेकिन इरम वहां दिखाई नहीं दे रही थी ।

फिर मुझे याद आया कि जाने से पहले माधुरी ने ईरम की रूप परिवर्तन सिद्धि के बारे में मुझे आगाह किया था !!!

अब मैं पूरी तरह से आश्चस्त हो गया कि वह युवती इरम ही है ।

मैं वापस अपने स्थान पर आकर बैठ गया ।

कुएं के पास का नजारा और भी ज्यादा ललचा देने वाला हो चुका था । वहां पर वह युवती यानी कि इरम पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में बैठकर अपने कपड़े धो रही थी ।

मुझे यह समझ में आ गया कि

मैं संभवत उसके सम्मोहन में फंस रहा हूं

यह स्थिति बेहद खतरनाक हो सकती थी !

इससे बाहर निकलना जरूरी था

मैंने जैसा कि आपको बताया था जब भी कोई जटिलतम परिस्थिति सामने आ जाती है तब मेरे जैसा शिष्य अपने गुरु को याद करता है और कुछ न कुछ रास्ता मिल ही जाता है

मैंने अपने गुरु को याद किया !

गुरु मंत्र का जाप किया और उसके बाद अपने आप को नियंत्रित करने के लिए अपनी जान्घ में स्थित मदन कामेश्वर गुटिका को स्पर्श करते हुए कामेश्वर मंत्र का जाप किया

॥ क्लीं कामेश्वराय नमः ॥

और

थोड़ी देर में शरीर नियंत्रित हुआ ।

मन भी नियंत्रित हुआ ऐसा प्रतीत हुआ ।

आप कहेंगे कि मैं तो श्यामा साधना जैसी उच्च कोटि की साधनाएं कर चुका था तब फिर यह विचलन कैसा

आपकी बात अपनी जगह पर बिल्कुल सही है ।

लेकिन !

इस संपूर्ण सृष्टि को जो संचालित करता है !

वह है !

काम का भाव

इसलिए कामदेव की शक्ति अपार है.....

अगर ऐसा नहीं होता !

तो !

जगतगुरु योगेश्वर महादेव शिव के मन में,
कामदेव के बाण से,
विचलन कैसे पैदा हो जाता है

मैं तो एक मामूली सामान्य सा साधक था ...
और....

सामने थी !

पशुपतिनाथ की बोक्सी !!

अद्भुत तंत्र शक्तियों की स्वामिनी !!!

इरम

कपड़े धोने के बाद उसने उसे कुएं के पास बनी हुई
रस्सियों पर सूखा दिया ।

इस पूरे प्रकरण के दौरान वह पूर्ण निर्वस्त्र ही थी ।

जैसे मुझे बार-बार आकर्षित करने का प्रयास कर रही
हो

लेकिन मैं अब सावधान था और अब थोड़ा नियंत्रित
भी....

रस्सी पर कपड़े डालने के बाद वह उसी अवस्था में
मदमस्त चाल में चलती हुई झोपड़ी के अंदर घुसी ।

मदन कामेश्वर गुटिका के प्रभाव से

अब मैं कुछ नियंत्रित अवस्था में था

लेकिन ...

उसके झोपड़ी के अंदर होते ही

पीछे पीछे एक बैल भी अंदर आने लगा.....

वह बैल हरियाणवी किस्म के बैलों के जैसा लंबा चौड़ा
हट्टा कट्टा था !

लगभग 4 फीट के बराबर !!

उसकी सींग भी लगभग 1 फुट की रही होगी और सिर के
ऊपर मुड़ी हुई थी । उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे
वह बहुत ही बढ़िया नस्ल का बैल हो

वह उसके पीछे पीछे ऐसे चल रहा था ... जैसे पालतू
कुत्ते चलते हैं ।

उसे देख कर अंदर बंधी हुई बकरी ज़ोर ज़ोर से मिमियाने
आने लगी और अपने पैरों से जमीन को जोर जोर से
मारने लगी ।

बैल ने उसे एक नजर देखा ...

ऐसा लगा जैसे वह कुछ बोलना चाहता है....

तभी !

इरम ने उसे पलट कर घूरकर देखा और हाथ घुमाया ,
बकरी जमीन पर लुढ़क गयी ...

और बैल फिर से सावधान मुद्रा मे उसके पीछे पीछे
कमरे के अंदर चला गया

मैं स्तब्ध सा अपनी जगह पर बैठा रहा

मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं ?

वह बैल उस युवती के इशारे पर ही उसके पीछे जा रहा
था तो उसे रोकने या कुछ करने का तो सवाल ही नहीं
था ।

वैसे भी मैं वहां पर मेहमान था ।

वहां घट रही गतिविधियों में हस्तक्षेप करने का अधिकार
वैसे भी मुझे नहीं था

लेकिन उत्सुकता बढ़ती जा रही थी

दूसरी तरफ जो कमरा बना हुआ था, वह युवती उस
कमरे में चली गई और उसके पीछे पीछे वह बैल भी
चला गया....

बात बड़ी अजीब सी थी !!!

क्योंकि कमरे के अंदर आमतौर पर छोटे जानवर जाते हैं !
जैसे ! बिल्ली ! कुत्ता ! या बहुत ज्यादा हुआ तो
बकरी !!!!!

लेकिन एक पूरे डील डौल का बैल किसी के कमरे में
उसके साथ जा रहा था ... यह अजीब सी बात थी
जिस परिस्थिति में मैं देख रहा था वह तो और भी अजीब
थी....

एक निर्वस्त्र युवती !

और !

उसके पीछे पीछे एक विशालकाय बैल !!

उस कमरे के अंदर जा रहा था ।

कमरे के बाहर एक पर्दा टंगा हुआ था !

इसलिए अंदर का दृश्य दिखाई नहीं देता था !

थोड़ी देर के बाद आवाज कमरे के अंदर से आवाजें आने
लगी जो यह बताने के लिए पर्याप्त थी कि अंदर में क्या
हो रहा है...

लगभग 10 मिनट तक मैं अपने आप को नियंत्रित करके
बैठा रहा

फिर.....

किसी अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित होकर मैं उस कमरे की ओर बढ़ गया

पर्दे को हल्का सा हटाकर मैंने अंदर झाँका ।

अंदर का दृश्य देखकर मैं दंग रह गया !

वह बैल गायब था !!!

वहां पड़े हुए बिस्तर के ऊपर वह युवती और एक हट्टे कट्टे बदन का युवक प्रेम क्रीडा में लीन थे

ऐसी अविश्वसनीय घटना का साक्षी होना अपने आप में दुर्लभ भी है और तंत्र साधना के व्यापक परिदृश्य का आकलन करने का अवसर भी

अंदर में बैल का नामोनिशान नहीं था और बैल के अलावा उस युवती के साथ कोई अंदर गया नहीं था इस कमरे में भी बाहर निकलने का कोई और दरवाजा नहीं था अर्थात !

वही बैल इस युवक के रूप में परिवर्तित होकर !

उस युवती की इच्छा पूर्ति कर रहा था ...

मैं कुछ क्षण वहां खड़ा रहा !

अंदर में जाकर देखा तो युवती के साथ में था एक युवक !!

अब बाहर निकलने की बारी आई तो बाहर निकल रहा था बकरा

मुझे लग रहा था कि उसके साथ निकलना चाहिए था बैल या फिर उस युवक को ...

लेकिन निकल रहा था बकरा

चटाई पर मैं बैठा हुआ था ।

उसने मुझे उपेक्षा भरी नजरों से देखते हुए बकरे को बांध दिया और बाहर चली गई....

मैंने अपने अब तक के साधना काल में जिस प्रकार की चीजें देखी थी उनसे यह बिल्कुल अलग थी !

थोड़ी देर के बाद एक थाली में कुछ भोजन लेकर इरम बाहर आई और उसने उस थाली को मेरे सामने रख दिया

भोजन करने के बाद इरम ने मुझसे कहा - तुम थोड़ी देर विश्राम कर लो । मैं अपने कुछ काम निपटा कर आती हूं । फिर तुम्हें ले चलूंगी....

अंदर में जाकर देखा तो युवती के साथ में था एक युवक !!

अब बाहर निकलने की बारी आई तो बाहर निकल रहा था बकरा

मुझे लग रहा था कि उसके साथ निकलना चाहिए था बैल या फिर उस युवक को ...
लेकिन निकल रहा था बकरा

चटाई पर मैं बैठा हुआ था ।

उसने मुझे उपेक्षा भरी नजरों से देखते हुए बकरे को बांध दिया और बाहर चली गई....

मैंने अपने अब तक के साधना काल में जिस प्रकार की चीजें देखी थी उनसे यह बिल्कुल अलग थी !

थोड़ी देर के बाद एक थाली में कुछ भोजन लेकर इरम बाहर आई और उसने उस थाली को मेरे सामने रख दिया

भोजन करने के बाद इरम ने मुझसे कहा - तुम थोड़ी देर विश्राम कर लो । मैं अपने कुछ काम निपटा कर आती हूं । फिर तुम्हें ले चलूंगी....

मैंने सहमति में सिर हिलाया

वह झोपड़ी से निकलकर बाहर चली गई । मैं वही
चटाई पर लेट गया और थोड़ी देर में मुझे झपकी आ गई
।

लगभग 1 घंटे के बाद इरम ने मुझे जगाया । उसके बाद
वह मुझे लेकर एक तरफ चल पड़ी । उसके एक हाथ में
एक रस्सी थी । उस रस्सी से उसने उस बकरे को बांधा
हुआ था ।

पहाड़ी रास्ता था

और अंधेरी रात थी

इरम को तो रास्ता मालूम था इसलिए वह आसानी से
चल रही थी , लेकिन मुझे चलने में दिक्कत हो रही थी
। मैं गिरते पड़ते हुए उसके पीछे पीछे चल रहा था ...

थोड़ी देर बाद उसे जब मेरी परेशानी का पता चला
तो

उसके बाद

जो मैंने देखा

वह किसी चमत्कार से कम नहीं था ।

उसने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को सामने किया और उसमें से किसी टोर्च की तरह रोशनी निकल रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे कोई एलईडी टॉर्च हो उसके प्रकाश में सब कुछ साफ दिखाई दे रहा था । हम लोग आराम से पहाड़ी चढ़ते हुए जा रहे थे ।

कुछ आगे जाने पर एक पुराना मंदिर दिखाई दिया । वह मंदिर भी चार-पांच सौ साल पुराना लग रहा था । मंदिर के सामने लगभग बीस फुट ऊंचा लकड़ी का दरवाजा था । जो उस समय बंद था ।

मंदिर के दरवाजे के दोनों तरफ दो बड़े बड़े दीपक रखे हुए थे । उन दीपकों के अंदर 4-4 बत्तियां जल रही थी । वह दीपक वैसे ही थे , जैसे दक्षिण भारत के मंदिरों में होते हैं ...

लगभग 5-5 फुट ऊंचे

और उनके बीच में नुकीला आकार और उसके ऊपर बनी हुई मोर की आकृति.....

मंदिर के पास पहुंचने पर इरम ने अजीब सी आवाज में कोई ध्वनि निकाली ।

जिसके उत्तर में मंदिर के अंदर से भी एक अजीब सी ध्वनि निकली

उसके बाद !

वह बड़ा दरवाजा चरमराहट की आवाज के साथ खुल गया

मैं ! इरम और हमारे साथ वह बंधा हुआ बकरा ! उस मंदिर के अंदर चले गए ।

हमारे अंदर घुसते ही दरवाजा अपने आप बंद हो गया । ऐसा लग रहा था जैसे कोई ऑटोमेटिक सिस्टम हो

अंदर में एक विशालकाय महाकाली की मूर्ति स्थापित थी ।

उस मूर्ति के सामने बाबा खप्पर नाथ बैठे हुए थे ।

एक यज्ञ कुंड बना हुआ था ।

जिसमें वह मंत्रोचार करते हुए आहुतियां दे रहे थे ।

हम लोग उनसे लगभग 10 फुट दूर जाकर रुक गए ।

उस मंदिर की खास बात यह थी कि वहां पर किसी प्रकार की छत नहीं थी ।

लंबे-लंबे खंबे थे !

जो लगभग 15-15 फुट ऊंचे रहे होंगे ।
उनमें बहुत शानदार नक्काशी की हुई थी ।
उनके बीच में वह मूर्ति स्थापित थी
जो अमूमन दस बारह फुट लंबी रही होगी ...
दोनों तरफ गलियारे बने हुए थे ।
जिसमें कुछ कमरे भी बने हुए थे ।
सभी के दरवाजे बंद थे ।
देखने से ऐसा लगता था कि उनमें भी छत नहीं थी ।

बाबा का आहुतियों का सिलसिला लगभग 10 मिनट
और चला होगा । उसके बाद वे उठकर खड़े हो गए !
हर हर महादेव का जयघोष किया ।

फिर वे हम लोगों की तरफ मुड़े॥
कहा - आ गए तुम दोनों ।

मैंने बाबा को साष्टांग दंडवत प्रणाम किया !
इरम ने भी उनको प्रणाम किया !!
बाबा ने इरम को देखकर कुछ इशारा किया और इरम
मूर्ति के दाहिने तरफ बने हुए कक्ष की ओर चली गई ।

अब उस मंदिर परिसर में सिर्फ बाबा खप्पर नाथ ! मैं !
और वह बकरा मौजूद थे ।

बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया ।
अपने दाहिने हाथ का अंगूठा अपनी बगल में रखे हुए
छूरे से चीरा अंगूठे से रक्त निकल पड़ा

रक्त की कुछ बूंदें यज्ञ कुंड में गिराने के बाद
उन्होंने उस रक्त से मेरे माथे पर तिलक किया !
उसके बाद !
माथे के बीच वाले भाग को जहां तीसरा नेत्र होता है ...
जहां आज्ञा चक्र की स्थिति मानी जाती है वहाँ जोर से
दबा दिया

मुझे ऐसा लगा जैसे
कोई बहुत तीव्र आघात
मेरे मस्तिष्क पर हुआ हो

मेरे तीसरे नेत्र की जगह पर गहरे लाल रंग का प्रकाश
फैलने लगा
मुझे एक लाल रंग के पानी से भरा हुआ
सागर जैसा

दिखाई देने लगा

जिसमें कोई ओर छोर नहीं दिखाई दे रहा था ।

अनंत अथाह विस्तार ...

उमड़ती घुमड़ती ...

उद्दाम वेगवान लहरे....

ऐसी लहरें

जो तट को तोड़कर बाहर निकल जाना चाहती हो

प्रचंड लहरें ...

जो सब कुछ डुबा देने को आमादा हो ...

सब कुछ समाप्त कर देने को तत्पर हो

फिर उसमें मुझे दिखाई देने लगे

अनंत कटे हुए नरमुंड....

मुंड विहीन शरीर ...

जो उस रक्त जैसे लाल सागर में तैर रहे थे

कहीं कटे हुए हाथ तैर रहे थे.....

कहीं कटे हुए पैर ...

इसी प्रकार से शरीर के कटे हुए अंग

उस लाल पानी में तैर रहे थे ।

जैसे रक्त के सागर में मृत्यु को प्राप्त असंख्य मानव अंग
तैर रहे हो.....

बेहद भयानक दृश्य था !

उन तैरते हुए मानव मुंडों में वृद्ध मुंड थे, तो युवा मुंड भी
थे

उनमें बच्चे और शिशु थे तो पुरुष और स्त्री भी.....

उन बहते अंगों को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे

अभी अभी अपने शरीर से कटकर गिरे हो ।

किसी युद्ध क्षेत्र में रक्त की नदी बह रही हो और उसमें
असंख्य मनुष्यों के मुंड, उनकी मृत देह के अलग-अलग
कटे हुए भाग बह रहे हों

मैं उस भयानक प्रलय के दृश्य को.....

स्तंभित !

विचलित !

भय के भाव के साथ देखता रहा ।

तभी

उस सागर के बीचो बीच ...

मंदिर में स्थित विग्रह का मुंड दिखाई देने लगा !

बाकी शरीर नहीं दिखाई दे रहा था !

केवल सिर का भाग दिखाई दे रहा था !!

जो अनंत विस्तार में फैला हुआ था !!!

उस समुद्र का विस्तार भी

जैसे

उसके मुख के आगे छोटा पड़ जा रहा था ...

काली-काली !

लहराती हुई !

सर्पाकार केश राशि !

चारों तरफ बिखरी हुई थी

ऐसा लग रहा था ...

जैसे बड़े-बड़े भुजंग अपना फन फैलाए हुए चारों तरफ

बिखरे हुए हैं.....

आप कल्पना भी नहीं कर सकते

कि उसे देखकर किस प्रकार के भय का आभास हो रहा

था !

ऐसा लग रहा था जैसे प्राण ही छूट जाएंगे !

मेरा पूरा शरीर थरथरा गया !

मेरी स्थिति ठीक वैसी ही हो गई थी !

जैसे आसन्न मृत्यु को देखकर मानुष की हो जाती है

भगवती महामाया का सबसे विकराल स्वरूप संहार
काली

सृष्टि को समाप्त करने वाली महाशक्ति का

तेजस्वी !

विकराल !!

भयंकर !!!

स्वरूप सामने था

उसका मुंह खुला हुआ था ...

और फिर जैसे संपूर्ण रक्त का समुद्र उसके मुख की ओर
तेजी से बढ़ने लगा

पूरा का पूरा मानव अंगों का वह विशाल संग्रह

उस भयानक विकराल मुख में समा गया !!!

उस भयानक लाल सागर की लहरें शांत होने लगी...

वह विशाल मुखमंडल भी उसी महासागर में समा
गया

उस सागर की लालिमा धीरे-धीरे कम होने लगी और
उसमें हल्का हल्का नीला पन बिखरने लगा

धीरे धीरे नीला रंग काला होता चला गया और फिर
उसके बीच में से विशाल पहाड़ जैसा कुछ उभरने लगा
।

उस दिव्य पर्वत पर विराजमान थे

अर्धनारीश्वर भगवान शिव.....

जिन का आधा शरीर पूर्ण पुरुष का था....

और आधा शरीर पूर्ण स्त्री का.....

दोनों हिस्सों से एक स्त्री और एक पुरुष निकला और
देखते देखते उनके चारों ओर असंख्य स्त्री पुरुष दिखाई
देने लगे ...

तभी मुझे पुनः एक झटका सा लगा ...

वह सारा दृश्य विलुप्त हो गया....

अब बाबा खपपरनाथ ने अपना हाथ मेरे ब्रह्मरंध्र पर
रखा !

मुझे ऐसा लगने लगा

जैसे मेरे खोपड़ी के अंदर आग जल रही हो ...

एकदम दोपहर की तपती हुई धूप के समय दिखने
वाले सुलगते हुए सूर्य के जैसा प्रकाश मुझे दिखाई देने
लगा

उसके बाद उनके दाहिने पैर का एक जोरदार
आघात

मेरी छाती पर पड़ा !

बिल्कुल वहां पर जहां दोनों वक्षों के बीच में एक गड्ढा
जैसा होता है ...

मैं पीछे की तरफ गिर गया

मैं संज्ञा शून्य हो चुका था

मुझे पता नहीं चला कि मैं कितनी देर तक बेहोश रहा ।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि कमरे में बाबा
खप्परनाथ और तेजल दोनों मौजूद थे ।

उनके साथ मौजूद था वही हट्टा कट्टा युवक जिसे मैंने
इरम के साथ कमरे में देखा था ।

मैंने चारों तरफ नजर घुमा कर देखा बकरा गायब था
और इरम भी दिखाई नहीं दे रही थी

बाबा और तेजल हवन कुंड के सामने बैठे हुए थे और दोनों आहुतियां डाल रहे थे ।

वह युवक उनसे लगभग 10 फीट की दूरी पर बैठा हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे किसी नशे में हो या किसी प्रकार के सम्मोहन में...

उसकी आंखें एकदम स्थिर थी

वह उस विकराल मूर्ति की ओर एकटक देख रहा था

जैसे-जैसे हवन आगे बढ़ता जा रहा था मूर्ति की तेजस्विता भी बढ़ती जा रही थी

उस मूर्ति के इर्द-गिर्द भी लाल रंग का प्रकाश बिखरा हुआ था जो बढ़ता जा रहा था । यह ठीक वैसा ही था जैसा मैंने बाबा खप्परनाथ के आभामंडल के पास देखा था.....

लगभग एक डेढ़ घंटे तक हवन का सिलसिला चला होगा ।

उसके बाद बाबा ने तेजल को इशारा किया
और उस युवक को कहा - यूथ पर लेट जाओ ।

युवक आगे बढ़कर बली के लिए बने हुए यूथ पर लेट गया । जैसे उसे यह भी नहीं पता हो कि आने वाले समय में क्या होने वाला है ...

वह इस प्रकार से जाकर लेट रहा था ,
जैसे वह एक सामान्य प्रक्रिया हो

मैं अंदर ही अंदर थर्रा गया
क्योंकि

अब मैं एक नरबलि का साक्षी होने वाला था

मैं एक बात स्पष्ट कर दूँ कि कोई चीज स्वप्न में देखना
और प्रत्यक्ष में देखना दोनों बिल्कुल अलग-अलग चीजें
हैं ।

मैं स्तंभित सा अपने आसन पर बैठा हुआ था । मेरे
सामने वह भयानक दृश्य आने वाला था

तेजल के हाथ में एक दो फुट लंबी खुखरी थी ।
आमतौर पर खुखरी लगभग 4 से 12 इंच तक लंबी होती
है ।

खुखरी छोटे से कटार जैसी दिखती है ।

यह नेपाल में इस्तेमाल किए जाने वाला प्रमुख हथियार है जिसे गोरखा इस्तेमाल करते हैं ।

तेजल के हाथ में जो खुखरी थी वह सामान्य खुखरी की तुलना में काफी लंबी थी

बाबा खप्पर नाथ का मंत्र जाप उच्च स्वर में जारी था.....

वह युवक बली यूथ पर लेटा हुआ था और तेजल सजग मुद्रा में खड़ी हुई थी ।

जैसे

बाबा के निर्देश का इंतजार कर रही हो ।

बाबा अब अपने स्थान पर खड़ा हो चुका था !

उसके दोनों हाथ आसमान की ओर उठे हुए थे !!

उसकी सिंह गर्जना जैसी आवाज प्रांगण में गूंज रही थी !!!

मूर्ति के इर्द-गिर्द फैली हुई लालिमा और सघन होती जा रही थी !

उसके पीछे का पूरा हिस्सा लालिमा से भर गया था !

ऐसा लग रहा था जैसे वहां पर सब तरफ रक्त ही रक्त बिखरा हो

बढ़ते बढ़ते उस लालिमा ने गलियारों को भी घेर लिया
।

अब वे दिखाई नहीं दे रहे थे !

लगभग चारों तरफ लालिमा का घेरा बना हुआ था और
उसके बीच में हम सब थे ।

वह अद्भुत दमकती तेजस्वी मूर्ति !

बली यूथ पर लेटा हुआ युवक !!

प्रहार की मुद्रा में खड़ी हुई तेजल !!!

और आह्वान की मुद्रा में दोनों हाथ उठाए हुए बाबा
खप्पर नाथ....

बाबा ने हुंकारा भरा और तेजल को इशारा किया ।

तेजल का हाथ ऊपर उठा और पूरी तेजी के साथ नीचे
की ओर लपका ॥

खचाक ! की आवाज के साथ उस युवक का सिर धड़
से अलग हो चुका था ।

रक्त की धारा किसी पाइप से निकलने वाले पानी की
तरह फलफलाती हुई बह निकली

जो सीधे भगवती के चरणों में जाकर गिर रही थी ...

भगवती का वह विग्रह अचानक अट्टहास कर उठा ।

जितना विशालकाय उनका शरीर था ...

अट्टहास भी उतना ही भयानक था ...

मेरी आत्मा तक थरथरा गयी ...

अचानक वहां पर एक भयानक विस्फोट जैसी आवाज

आई और तेज रोशनी बिखर गई ।

वह लाल प्रकाश धमाके के साथ और तेज हो गया ...

अब मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था

लगभग 10 सेकंड तक वैसी स्थिति रही होगी ।

जब स्थिति सामान्य हुई

तो !

पूरा परिदृश्य बदला हुआ था ।

वहां पर स्थापित वह विग्रह !

बाबा खप्पर नाथ !

और तेजल तीनों वहां से गायब थे

महामाया संहार काली अपने सिद्ध साधक और साधिका

को अपने साथ अपने धाम ले जा चुकी थी...

वहां पर पड़ा हुआ उस युवक का शरीर भी वहां से गायब हो चुका था

बाकी खंडहर भी भरभरा कर गिरने लगा

उसमे भयानक आग लग गई ।

यह सब देखकर मैं फिर से बेहोश हो गया और वहीं गिर पड़ा.....

जब मेरी आंख खुली तो मैं वापस इरम की झोपड़ी में था ...

माधुरी मेरे बगल में बैठी हुई थी मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ ?

वह बोली - वे दोनों संहार काली की सिद्धि प्राप्त कर चुके थे । इसलिए वह दोनों को अपने साथ ले गई । अब वह हमेशा उनके धाम में रहेंगे ...

यह मेरे लिए नई जानकारी थी ।

मैंने विष्णु लोक शिव लोक आदि के बारे में जरूर सुना था ...

मैंने माधुरी को प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ...

उसने बताया - हर देव शक्ति का अपना एक लोक होता है !

विशेष रूप से महाविद्याओं का !!

जो साधक पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं !!!

उन्हें महाविद्यायें अपने लोक में स्थान देकर अपना गण बना लेती है....

उसके बाद माधुरी ने कहा - चलो अब चलने का वक्त हो गया है

मैं उठ कर खड़ा हो गया !

तभी मैंने देखा की कमरे में वह बकरी और बकरा दोनों बंधे हुए थे ।

मैं फिर से आश्चर्य में पड़ गया !

यह बकरा तो हमारे साथ रात को मंदिर में गया था !

मंदिर में इसकी बलि दे दी गई थी ...

फिर यह वापस कहां से आ गया

उस समय दस बज रहा था और मुझे बड़े जोर की भूख लग आई

तभी इरम बाहर निकली ।

उसके हाथ में खाने की दो थालीया थी ।

माधुरी ने कहा - मैंने खाना खा लिया है.... तुम खा लो !

इरम ने थालियाँ नीचे रख दी और हम दोनों खाना खाने लगे

मेरी उत्सुकता रोके नहीं रुक रही थी !

आखिरकार मैंने इरम से पूछ ही लिया - इस बकरे की तो कल मंदिर में बलि दे दी गई थी । फिर यह वापस कैसे आ गया ।

इरम खिलखिला कर हंस पड़ी ...

उसने नेपाली में माधुरी से कुछ कहा ।

माधुरी भी खिलखिला कर हंस पड़ी ।

मुझे लगा दोनों मिलकर मेरा मजाक उड़ा रही है ।

इसलिए मैं मौन हो गया....

मुझे मौन देखकर शायद उनका दिल पसीज गया ।

इरम ने नेपाली में कुछ कहा जो मेरी समझ में नहीं आया ।

मैंने माधुरी की तरफ देखा ।

उसने बताया - संहार काली को जो नरबलि दी गई थी , वह साधना पूर्ण हो जाने के बाद पुनर्जीवित हो

गया । इसलिए वह युवक वापस जिंदा हो गया और उसके बाद इरम ने उसे वापस बकरा बना दिया ।

माधुरी जितनी सरलता से इन बातों को बोल रही थी उससे ऐसा लग रहा था कि उसे इस बारे में पूरी जानकारी है ।

वहां से हम लोग वापस लौट आए । माधुरी की ड्राइविंग बड़ी जबरदस्त थी । पहाड़ियों पर भी वह 80-100 की रफ्तार से गाड़ी चला रही थी । आजू-बाजू की घाटियों को देखकर मुझे ऐसा लगता था कि अब गिरे और तब गिरे । मैं सीट के सामने वाले लोहे के डंडे को मजबूती से पकड़ कर बैठा हुआ था ।

लगभग 10-12 मिनट में हम होटल पहुंच गए.....

मैंने सोचा था कि मुझे बाहर ही छोड़ कर माधुरी चली जाएगी । लेकिन माधुरी कमरे तक आई । जटाशंकर बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा में था । मेरे साथ माधुरी को देख कर वह और आश्चर्य में पड़ गया ।

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा - तीन दिन से कहां गायब हो गए थे तुम ?

मैं तो पुलिस में कंप्लेंट करने वाला था ?
और यह तुम्हारे साथ कौन है ?
क्या यही तुम्हें लेकर गई थी ?

जटाशंकर ने सवालियों की झड़ी लगा दी ।
उसकी बातें सुनकर माधुरी के चेहरे पर वही हल्की सी
मुस्कान बिखर गई ...

जटाशंकर की बातें सुनकर मेरा सिर चकरा गया ।
तीन दिन कहां हुए थे.....
कल शाम को ही तो मैं गया था
और आज सुबह वापस आ गया....
क्या जटाशंकर पगला गया है ? मैंने मन ही मन
सोचा !!!

मैंने जटाशंकर से कहा - जटा ! तू कैसी बात कर रहा है
। मैं तो कल शाम को ही गया था और आज सुबह आ
गया हूं । फिर तू इतना हड़बड़ा क्यों रहा है ?

जटाशंकर ने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मैं पागल हो
गया हूं ।

उसने आगे बढ़कर मेरा गिरेबान पकड़ लिया और कहा -
साले ! तू कल शाम को गया था !
मैं यहां तीन दिन से तेरी पागलों की तरह चिंता कर रहा
हूं और तू बोल रहा है कि कल शाम को गया था !!!
बता तू किस तारीख को गया था

मैंने कहा - 12 तारीख को शाम को ।
जटा बोला - और आज तारीख क्या है ?
मैंने बोला - 13 तारीख है
जैसे कि मैंने आपको बताया था जटाशंकर मेरा
लंगोटिया दोस्त है ।

वह मेरी बात सुनकर तिलमिला गया ।
उसने मेरी गर्दन पकड़ी और मेरे सर को टीवी की तरफ
घुमा कर टीवी के पास ले गया
टीवी पर उस समय आज तक चल रहा था
उसने मेरे सर को पूरा टीवी तक टिका दिया.....

मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था

जटा बोला - देख आज क्या तारीख है

मैं बोला - तू इतने पास रखेगा तो मुझे क्या दिखाई देगा ?

वह मेरी बात समझ गया !

उसने गर्दन छोड़ दी

जैसे ही मेरा सर टीवी के पास से थोड़ा दूर हटा तो मेरी नजर चैनल के अंदर दिखने वाले दिनांक और समय पर गई

वहां पर तारीख दिख रही थी 15 !!!!

और समय दिख रहा था 11:30.....

अब चकराने की बारी मेरी थी !

यानी जटाशंकर सच बोल रहा था !!

मैं पूरे 3 दिन तक गायब था

मैं कहां गायब था ?

मुझे तो सिर्फ इतना याद है कि रात को मैं मंदिर में बेहोश हुआ था

सुबह इरम के घर पर था

यानी वो अगली सुबह नहीं थी !

बल्कि !!

वह 3 दिन के बाद वाली सुबह थी.....

अब इसका जवाब सिर्फ माधुरी दे सकती थी ।

मैं उसकी तरफ मुड़ा ।

उसके चेहरे पर वही रहस्यमय मुस्कान बिखरी हुई थी ।

मैं उसके सामने जाकर खड़ा हो गया ।

वह आराम से सोफे पर पसरी हुई थी ।

उसने कहा - बैठ जाओ बताती हूं ...

जटाशंकर और मैं दोनों किसी स्कूल टीचर के सामने

बैठे हुए विद्यार्थी की तरह माधुरी के सामने उसकी तरफ

ताकते हुए बैठे थे.....

माधुरी ने जटाशंकर की ओर देखकर कहा - कुछ

पिलाओगे नहीं ?

जटाशंकर ने मेरी तरफ देखा मैंने दो उँगलियाँ दिखाकर

उसे इशारा किया । उसकी आंखें आश्चर्य से फटी और

फिर वह उठकर चला गया । थोड़ी देर में तीन गिलास

वहां आ चुके थे ... साथ में बोतल भी थी । जटाशंकर ने तीनों गिलास भरे और एक गिलास माधुरी की तरफ बढ़ा दिया ।

माधुरी ने एक ही सांस में उसे खाली करके जटाशंकर की तरफ बढ़ा दिया । जटाशंकर ने उसे फिर से भर दिया । दूसरा गिलास भी वैसे ही खाली हो गया । जटाशंकर अपना गिलास उठा तक नहीं पाया था । वह आश्चर्य से आंखें फाड़कर माधुरी को देख रहा था । माधुरी ने अपना गिलास फिर से उसकी तरफ बढ़ा दिया

जटाशंकर ने तीसरी बार गिलास भर दिया । माधुरी ने उसे भी एक ही सांस में खाली किया और गिलास एक तरफ रख दिया

माधुरी टीचर की क्लास चालू हो चुकी थी । दोनों विद्यार्थी यानी मैं और जटाशंकर उनकी और ताकते हुए बैठे थे ॥

माधुरी बोली - जटाशंकर ! तुम्हारा यह दोस्त एक साधक है ! इसके जीवन में अजीबोगरीब घटनाएं घटती रहती हैं !! यह घटना भी उनमें से एक है !!!

जटाशंकर बोला - पहेलियां मत बुझाइए ! साफ-साफ बताइए ! ताकि मुझे भी समझ में आए !!
मैं साधक नहीं हूं, आम आदमी हूं ।

माधुरी खिलखिला कर हंस पड़ी ।

उसने कहा ठीक है तो सुन - जटाशंकर, तेरा दोस्त अघोराचंद यहां शमशान भैरवी साधना का दूसरा चरण पूरा करने के लिए आया था । जिसका पहला चरण दुर्ग में मेरे साथ उसने संपन्न किया था ।

जटाशंकर ने मेरी तरफ कौतूहल भरी निगाहों से देखा मैंने सहमति में सिर हिलाया ...

माधुरी ने आगे बोलना चालू किया - यहां आने के बाद पहली रात को ही मैं इसे लेकर गई थी , तुमको शायद पता भी नहीं चला । उस रात्रि उस साधना का अगला चरण इसने पूरा किया था । अंतिम चरण के रूप में इसे शमशान भैरवी दीक्षा मिलनी थी । जिसके लिए यह 3

दिन पहले तुम को बता कर यहां से निकला था । वहां पर क्या क्या घटना हुई वह सारी बातें तुम इसी से पूछ लेना मैं सिर्फ जो इसे नहीं मालूम है वह बता रही हूं ।

जटाशंकर अड़ गया बोला - आधी अधूरी बात बताओगे तो मुझे पता कैसे चलेगा पूरी कहानी एक बार में बताओ ।

माधुरी ने शुरू से लेकर अभी तक की पूरी कहानी सुनाई !

उसके बाद कहा - महामाया के उस उग्र स्वरूप के दर्शन के बाद कोई भी अपने होश में नहीं रहता । अघोराणंद भी समाधि में चला गया था । उसकी समाधि अवस्था में ही मैं उसे इरम के साथ उसकी झोपड़ी में ले आई थी । इसे खुद नहीं पता है कि यह 3 दिन तक उसी अवस्था में पड़ा हुआ था । सामान्य परिस्थितियों में कोई भी साधक जो उस दिव्य स्वरूप का दर्शन कर लेता है । वह इस प्रकार की समाधि की अवस्था में चला जाता है । यह समाधि की अवस्था 3 दिन से लेकर 3 माह तक की हो सकती है । कई बार उसी समाधि की अवस्था

मैं ही साधक के प्राण उसके ब्रह्मरंध्र से बाहर निकलकर
भगवती के दिव्य चरणों में समाहित हो जाते हैं ...

जटाशंकर आंखे फाड़ फाड़कर यह सुन रहा था मेरी भी
स्थिति उससे बहुत ज्यादा बेहतर नहीं थी ।

कहां मैं यह सोच रहा था कि रात को उस अद्भुत
घटनाक्रम के बाद अगली सुबह मैं जाग रहा हूँ ...

और कहां यह सच्चाई पता चल रही है कि

इस बीच में 3 दिन का गैप था

जिसके बारे में मुझे कुछ भी याद नहीं था

जटाशंकर ने मेरी तरफ देखा

मैंने जटाशंकर की तरफ देखा

हम दोनों की आंखों में अविश्वास के भाव थे

मैं उस बकरे और बकरी के बारे में जानने को बहुत
ज्यादा उत्सुक था ।

मैंने माधुरी से पूछा - और वह बंधे हुए बकरे और बकरी
का क्या हुआ.....

माधुरी फिर से खिलखिला कर हंस पड़ी !

उसने कहा - वह एक पंजाबी लड़का और उसकी अंग्रेज गर्लफ्रेंड है । उस अंग्रेज लड़की को कहीं से बोक्सी के बारे में पता चल गया था । वह उसी के बारे में जानने के लिए कनाडा से नेपाल आई थी । और अपने साथ अपने बॉयफ्रेंड को भी लेती आई । जिस गांव में हम लोग गए थे वह पूरा का पूरा गांव बोक्सीयों का गांव है । इरम और इरम की छोटी बहन रिया दोनों ही बहुत ऊंचे स्तर की बोक्सी है ।

यह दोनों भटकते भटकते उस गांव तक पहुंच गए थे । वहां इरम से टकरा गए । लड़का हट्टा कट्टा था और उसे देखकर इरम समझ गई कि यह काम का व्यक्ति है । वह दोनों को बोक्सी से मिलाने का वादा करके अपने साथ ले आई । उन बिचारों को यह भी नहीं मालूम था कि वह जिसके साथ जा रहे हैं , वह खुद अपने आप में कितनी बड़ी बोक्सी है ...

परिणाम वही हुआ जो होना था ।

इरम ने दोनों को बकरा बकरी बना दिया

मैंने पूछा - क्या वह उन्हें कभी नहीं छोड़ेगी ?

माधुरी ने हंसकर जवाब दिया - नहीं । इरम किसी को भी अपने पास एक महीने से ज्यादा नहीं रखती है । इस दौरान वह जो सिखाना चाहती है । वह सिखा देती है ! और ना सिखाना चाहे तो बिना सिखाए ही भगा देती है ।

जटाशंकर यह सब बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था ... मैं उसे बचपन से जानता हूं इसलिए मेरी समझ में आ रहा था कि उसके दिमाग में कुछ ना कुछ पक रहा है

उसने माधुरी से पूछा - क्या मैं भी उससे मिल सकता हूं ...

माधुरी खिलखिला कर हंस पड़ी । उसने कहा - अपने दोस्त से पूछ ले ! वह तैयार हो तो मैं ले चलती हूं ।

जटाशंकर ने मेरी तरफ देखा ।

मैं जानता था कि मेरे इंकार करने पर यह मेरे पीछे पड़ जाएगा और तब तक नहीं मानेगा जब तक मैं उसकी बात पर सहमत ना हो जाऊं ।

इसलिए इंकार करने का कोई मतलब नहीं था ।

मैंने बुझे हुए दिल से हां कर दी ।

माधुरी ने कहा - तो अपना सामान ले लो ! चेक आउट कर लो !! क्या पता कितने दिन लग जाए ।

मेरा माथा ठनका

इसका क्या मतलब है ?

कहीं जटाशंकर को बकरा बनाने का प्लान तो नहीं है ...

जैसे ही मेरे मन में यह विचार आया !

माधुरी मेरी तरफ देख कर मुस्कुराई !!

जैसे कहना चाहती हो कि हां ! प्लान यही है

जैसा कि आप लोग जानते हैं होनी को कोई नहीं टाल सकता ।

मेरे साथ जिस प्रकार की घटनाएं घटती रही है, उसको देख कर मैं बहुत ज्यादा विरोध करने के पक्ष में भी नहीं रहता । मैं जानता हूं विरोध करने से भी, जो होना है, वह तो होगा ही ।

इसलिए सोचा - चलो देखते हैं जो भी होगा देखा जाएगा ।

हम लोगों ने सामान समेटा । कुल मिलाकर 2 सूटकेस और दो बेग थे । होटल से चेक आउट किया और उसके

बाद सबसे पहले जटाशंकर ने अपने घर पर फोन किया और बताया कि कुछ समय और लग सकता है चिंता ना करें । मेरा तो आगे पीछे कोई नहीं था इसलिए किसी को बताने की जरूरत भी नहीं थी । जिसे जानना होता वह जटाशंकर के घर में जाता और वहां से उसे जानकारी मिल ही जाती कि मैं अभी आने वाला नहीं हूं

उसके बाद हम लोग माधुरी की जिप्सी में बैठकर चल पड़े.....

मुझे यह तो पता था कि जटाशंकर का कोई नुकसान होने वाला नहीं है । लेकिन यह सोच कर मुझे हंसी भी आ रही थी और दुख भी हो रहा था कि बकरा बनकर जटाशंकर कैसा लगेगा ?

खैर.....

आधे घंटे के बाद हम लोग इरम के गांव पहुंच चुके थे

जब हम लोग इरम के घर पहुंचे तब दोपहर के 2 बज रहे थे । घर पर कोई नहीं था । हम लोग बाहर प्रतीक्षा करने लगे.....

आधे घंटे के बाद इरम आई ।

हमें देख कर मुस्कुराई और पूछी - कैसे आना हुआ ॥

माधुरी ने उसे नेपाली भाषा में सारी बात सुनाई ।

इरम ने जटाशंकर को गहरी नजरों से देखा !

उसके चारों तरफ चक्कर लगाया और मुस्कुरा उठी ।

मेरी प्रबल इच्छा थी कि यह देखू कि मानव को किसी दूसरी योनि में किस प्रकार से परिवर्तित किया जाता है और संभवतः यह सौभाग्य मुझे प्राप्त होने जा रहा था ।

इरम ने घर का दरवाजा खोला और हम तीनों अंदर आ गए । इरम अभी 50-55 वर्ष की अवस्था की दिखाई दे रही थी ...

अंदर आकर हम लोग बैठे । बकरा बकरी दोनों गायब थे ।

मैंने माधुरी की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ।

उसने इशारा किया कि चले गए ।

जटाशंकर अविश्वास भरी स्थिति में बैठा हुआ था ।

माधुरी ने इरम को सारी बात विस्तार से बताई ।
मेरी इच्छा भी ! कि मैं रूप परिवर्तन होते हुए देखना
चाहता हूँ ।

और जटाशंकर की इच्छा भी ! कि वह इरम से मिले !
यह सब सुनकर वह खिलखिला कर हंस पड़ी

उसने कहा - ठीक है ! लेकिन मेरे काम में कोई हस्तक्षेप
नहीं होना !

माधुरी ने हमसे यह बात कही ।
जटाशंकर ने तुरंत सिर हिलाया और मैं भी सहमत हो
गया

न जाने अब क्या देखना था ।

इरम ने कहा - चलो चाय पिलाती हूँ ।
मेरे मुंह से निकला - बकरी तो नहीं है अब दूध कहां से
लाओगे ...

माधुरी और इरम दोनों ठठा कर हंस पड़े ।
माधुरी ने कहा - इरम के लिए कुछ भी असंभव नहीं है॥

इरम ने हवा में हाथ फैलाया !

और उंगलियों को हल्के से घुमाया !!

अचानक !!!

उसके हाथ में एक मिट्टी का बर्तन आ गया !

जिसमें लबालब दूध भरा हुआ था

ऐसा लग रहा था जैसे अभी अभी दोहा गया हो ।

हम आंखें फाड़ फाड़ कर उस दृश्य को देख रहे थे ।

माधुरी तो शायद ऐसे दृश्यों की आदी थी ।

जटाशंकर अपने जीवन में पहली बार इस प्रकार का
अद्भुत दृश्य देख रहा था ।

इरम ने हमें चाय पिलाई फिर हम लोग बात करने बैठे ।

जटाशंकर ने कहा - क्या वास्तव में आप मनुष्य को
जानवर में परिवर्तित कर देती हैं ।

इरम ने पूछा - क्या तुम बनना चाहते हो ।

जटाशंकर थोड़ा सा झिझका फिर उसने हामी भर
दी ।

इरम ने आंख बंद की !

मन में कुछ ध्यान किया

उसके होंठ कुछ बुदबुदाये

उसने जटाशंकर की तरफ देखकर अपनी तर्जनी उंगली
घुमाई ।

उसके बाद

वहां जो घटित हुआ

आप उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते ।

मेरे देखते ही देखते !

जटाशंकर गायब हो गया !!

उसकी जगह काले रंग का एक बिल्ला आ गया ।

इरम ने उसे उठाकर अपनी गोद में रख लिया और बर्तन
में बचे हुए दूध को उसके सामने रख दिया ।

वह छप छप करके उस दूध को पीने लगा ।

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर इस अद्भुत दृश्य का साक्षी बना
हुआ था

मेरा अच्छा खासा फुल साइज का मित्र !

जटाशंकर !

छोटा सा बिल्ला बना हुआ ईरम की गोद में दूध पी रहा
था

वाकई तंत्र का संसार बेहद रहस्यमय और अद्भुत है ॥

अभी वह बिल्ला दूध पी रहा था

तभी ,,,,

कमरे में कोने से एक चूहा जाता हुआ दिखाई दिया !

उसे देखते ही बिल्ला उसके पीछे दौड़ पड़ा और उसे

दबोच कर इसका शिकार कर लिया । इसी प्रकार वह

इधर-उधर घूमता रहा और आकर हमारे पास बैठ जाता

। मैंने इरम से उस दिन की घटना के विषय में पूछा,

उसने मुस्कुरा कर बात को टाल दिया । फिर मैंने दोबारा

नहीं पूछा

लगभग आधा घंटा बीत चुका था !

मैंने जटा को वापस सामान्य बनाने के लिए कहा ।

लेकिन !

इरम ने बताया - एक बार परिवर्तन हो जाने के बाद कम

से कम एक प्रहर का समय उसे वापस मनुष्य बनाने के

लिए लगेगा ।

बिल्ला बना हुआ जटाशंकर तब तक दूध और चूहे से

पेट भर जाने की वजह से आराम से एक कोने में सोया

हुआ था ।

माधुरी ने मुझसे अपने साथ चलने के लिए कहा मैंने जटाशंकर की ओर इशारा किया तो वह बोली - उसे यहीं रहने दो । इरम ध्यान रखेगी ।

हम दोनों फिर से जिप्सी में बैठकर आगे चल पड़े ।

कच्ची सड़क मे अब कुछ और आगे बढ़े !

हम मेन रोड से काफी अंदर आ चुके थे । अब रास्ता पगडंडी जैसा हो चुका था । जिसमें गाड़ी के चक्के ऊपर नीचे ऊपर नीचे होते हुए चल रहे थे

यह कुछ-कुछ वैसा ही एहसास था जैसे गांव में खेतों की तरफ जाते समय ट्रैक्टर में बैठने से होता है

ट्रैक्टर के चक्के काफी बड़े बड़े होते हैं इसलिए बड़ी आसानी से निकल जाते हैं । जिप्सी के चक्के इतने बड़े नहीं थे और झटकों का एहसास ज्यादा करा रहे थे । रास्ता देखने से ऐसा लगता था कि उसमें बहुत ज्यादा आना जाना नहीं होता है ।

अंदर फिर एक पहाड़ी गांव आया ॥

यह गांव भी कुछ-कुछ इरम के गांव जैसा ही था ।

घरों की संख्या वहां से भी काफी कम थी ।

मुश्किल से 10 या 15 थे ! वह भी लकड़ियों से बने हुए थे ।

वैसे एक घर के सामने माधुरी ने जिप्सी खड़ी की ।

उसके बाद हम लोग अंदर गए ।

वहां लगभग 60 साल का एक व्यक्ति जो शक्ल से आंध्र प्रदेश का लगता था !

बैठा था !

गहरा काला रंग !

गोल गोल घुंघराले बाल थे ।

हट्टे कट्टे बदन का वह व्यक्ति लगभग साढ़े पांच फुट का रहा होगा ।

उसके बदन पर केवल एक लंगोट था !

उसका शरीर किसी बॉडीबिल्डर के जैसा लगता था !!

हाथ पैर की मांसपेशियाँ एकदम कसी हुई थी ।

माधुरी ने उसे प्रणाम किया । मैंने भी झुक कर प्रणाम किया ।

उसने माधुरी को पूछा - कैसे आया ?

माधुरी ने बताया - गणेश बाबा । यह अघोरा नंद है !

गुरुजी का शिष्य है !! इसे देह सिद्धि करवानी है !!!

यह सुनते ही गणेश गणेश बाबा बोले - उसके लिए तो तेलिया कंद ^[i]निकालना पड़ेगा !

तुम तो जानती हो बकरा लगेगा ।

यहाँ नहीं मिलेगा ! तुमको लाना पड़ेगा ।

माधुरी ने बताया - लाई हूँ बाबा ! जिप्सी में है ।

हम लोग जिप्सी के पास गए ।

जिप्सी की डिक्की में एक बोरा बंद पड़ा हुआ था , जो हिल रहा था !

उसे बाहर निकाला गया !

उसके अंदर से एक पहाड़ी बकरा निकला !!!

वह पूरे काले रंग का था ।

उसे देखकर बाबा खुश हो गया - वाह माधुरी ! तुझे

याद है सब !! एकदम सही बकरा लाई है ।

माधुरी बोली- बाबा ! आपका आशीर्वाद है । आपने

जो सिखाया था वह मुझे अब भी याद है ।

मतलब !

माधुरी देह सिद्धि साधना भी कर चुकी थी ।

देखने मे वो एक सीधी-सादी सामान्य युवती लगती थी । उसके चेहरे की मासूमियत को देख कर कोई यह नहीं बोल सकता था कि, वह इतनी बड़ी साधिका है

मैंने अपने जीवन में एक से एक महिला साधिकाओं को देखा है । उनमें से कई देखने पर ऐसे लगती हैं जैसे सबसे सरल और आसानी से बेवकूफ़ बनाए जाने लायक महिला है, जिसे दुनियादारी से लेकर आध्यात्मिकता तक का कोई ज्ञान नहीं है । एकदम गौ जैसी

लेकिन !

जब वे अपनी औकात पर आ जाए !!

तो उनकी सिद्धियों के सामने बड़े-बड़े तांत्रिकों को उनके चरणों में साष्टांग दंडवत होते हुए देखा है !!!

ऐसे ऐसे भ्रष्ट महिला तांत्रिकों को भी देखा है !

जो जानती तो कुछ नहीं है !!!

लेकिन

बातें !

हाव भाव !

सौन्दर्य !

यौवन !

भाव भंगिमा !!

और वेषभूषा के दम पर अच्छे-अच्छे को
बेवकूफ़ बनाकर निकल जाती है ।

माधुरी पहली श्रेणी की साधिका थी !

जो साधनात्मक रूप से बेहद उच्च कोटि पर होने के
बावजूद अपने आप को सहज और सरल बनाए रखने में
सक्षम थी ।

उनकी इच्छा के बिना आप उनके ज्ञान या सिद्धियों की
कोई थाह नहीं पा सकते ।

यह तो मेरा सौभाग्य था कि मुझे उसके सानिध्य का !

उसके मार्गदर्शन का !

उस के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था

ऐसे साधक दुर्लभ होते हैं !

और

इन को पहचानना, इनके ज्ञान की गहराई मापना
लगभग असंभव होता है ।

खैर.....

बाद में माधुरी ने मुझे देह सिद्धि साधना का विवेचन भी
किया - देह सिद्धि साधना से शरीर किसी भी प्रकार के
वातावरण में रहने के लिए तैयार हो जाता है । इसकी
अनेक प्रकार की विधियां है । जिसमें मंत्र साधना से
लेकर तांत्रिक क्रियाएं तक सब कुछ शामिल है ।

माधुरी ने मुझे बताया कि - गुरुजी लगभग 30 वर्षों तक
हिमालय के विभिन्न स्थानों में अपना समय विभिन्न
प्रकार की साधना में गुजारते रहे । उस दौरान अनेक
साधक उनसे मिले और हिमालय का शायद ही कोई
ऐसा कोना हो जहां पर उनके शिष्य मौजूद नहीं है ।

गणेश बाबा भी उन्हीं के शिष्य है । यह विशेष रूप से औषधि तथा आयुर्वेद विद्या में पारंगत है । इनका अपना औषधियों का एक बगीचा भी है जिसमें विश्व की दुर्लभतम जड़िया उगा कर रखते हैं ।

मुझे हमेशा से अपने गुरु पर गर्व रहा है, लेकिन जब भी इस प्रकार की बातें सुनता हूं तो मेरा सीना और चौड़ा हो जाता है कि मैं कितने विशिष्ट गुरु का शिष्य हूं

गणेश बाबा के साथ ज्ञान चर्चा चली....

गणेश बाबा ने बताया - किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए तीन उपायों का संयोजन अगर एक साथ किया जाए तो वह बहुत जल्दी कार्य करता है ।

इसमें पहला है मंत्र !

मंत्र का तात्पर्य होता है ।

उस कार्य से संबंधित देवी या देवता के आह्वान तथा उसे प्रसन्न करने के लिए उपयोग किया जाने वाला ऐसा कोड वर्ड ! जिसे बोलने से वह प्रसन्न होता है !!
या उसकी कृपा प्राप्त होती है॥

दूसरा होता है यंत्र !

यंत्र में कई प्रकार की चीजें शामिल की जा सकती हैं ।
सामान्यतः जो यंत्र होता है वह तांबे से बना होता है या
अन्य किसी धातु का बना होता है !

जिसमें अष्टधातु से लेकर सोना तक शामिल है !
यही नहीं कई प्रकार के रत्नों के भी यंत्र बनते हैं जैसे मूंगा
हीरा स्फटिक आदि आदि ।

इनके अंदर संबंधित देवी या देवता की आंशिक
उपस्थिति मानी जाती है ...

यंत्र अपने आप में ज्यामितीय रचनाएं हैं, जो अलग-
अलग देवताओं के अनुसार अलग-अलग प्रकार की
होती हैं ।

इसके अलावा कुछ विशेष प्रकार के यंत्र भोजपत्र तथा
पत्थर पर भी बनाए जाते हैं

तीसरी चीज होती है औषधि !

औषधि या आयुर्वेद विज्ञान भी तंत्र साधना का एक
अभिन्न अंग है । भारतीय संस्कृति जिसे हम सनातन
संस्कृति कहते हैं, उसमें पौधों को भी जीवित माना जाता
है ।

जब किसी औषधि का पौधा निकाला जाता है तो पहले उसका पूजन करके उससे अनुमति मांगी जाती है । फिर उसको निकाला जाता है

जब हम तुलसी के पत्ते तोड़ते हैं तब भी उसके पौधे को प्रणाम करके उससे अनुमति लेकर तोड़ते हैं ...

पौधों में पांच अंग माने जाते हैं जिसे पंचांग कहा जाता है ।

कई औषधियों में किसी पौधे के कुछ अंगों का इस्तेमाल किया जाता है और कुछ में पांचों अंगों का इस्तेमाल किया जाता है ।

यह पांच अंग है:-

जड़,

पत्तियाँ,

फल,

फूल और,

तना और उसकी खाल या छिलका

इसे मैं एक उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास करता हूँ

जब बगलामुखी साधना की जाती है तो

उनके यंत्र का उपयोग किया जाता है जिसे सामने पीठ बनाकर या चौकी रखकर उस में उसे स्थापित किया जाता है । उसी के सामने बैठकर मंत्र जाप किया जाता है । यह हो गई मंत्र और यंत्र की बात !

अब आते हैं औषधि पर

जब किसी विशेष कार्य के लिए बगलामुखी मंत्र का प्रयोग किया जाता है तो हल्दी !

जोकि अपने आप में औषधि है !

उस से बनी हुई माला का प्रयोग किया जाता है ! मंत्र का जाप हल्दी की माला से ही होता है ।

जब बगलामुखी साधना की पूर्णाहुति की जाती है तो उसमें हल्दी या पीली सरसों को दशांग में मिलाकर प्रयोग किया जाता है, जिससे कार्यसिद्धि की संभावनाएं बढ़ जाती हैं । यह सारी चीजें प्राकृतिक रूप से पौधों या औषधियों से प्राप्त है ।

अब आप समझ गए होंगे कि मंत्र यंत्र और औषधि का समन्वय किसी भी कार्य को पूर्णता प्रदान करता है - ऐसा सनातन धर्म कहता है ।

का एक चेला भी था ! वह भी उन्हीं की तरह हट्टा कट्टा और मजबूत बदन का था ।

जंगल में अंदर घुसते ही बाबा और उसका चेला लगभग 100 फुट की दूरी पर फैलकर चलने लगे । बाबा के साथ माधुरी चल रही थी और चेले के साथ मैं मैं चल रहा था ।

दोनों चारों तरफ निगाहें घुमाते हुए चल रहे थे । उनके अंदाज से ऐसा लग रहा था कि उस इलाके में तेलिया कंद पाए जाते होंगे । इससे पहले भी उन्होंने कंद निकाले थे ।

मैं उनकी हरकतों को देखता हुआ पीछे पीछे चल रहा था ।

जंगल काफी घना था !

ऊंचे ऊंचे पेड़ थे ।

नीचे झाड़ियों का भी अंबार था !

कुल मिलाकर आने जाने का रास्ता जटिल था ।

अगर कोई रास्ता भटक जाए तो उसे निकलने में भी बड़ी परेशानी हो जाती ।

का एक चेला भी था ! वह भी उन्हीं की तरह हट्टा कट्टा और मजबूत बदन का था ।

जंगल में अंदर घुसते ही बाबा और उसका चेला लगभग 100 फुट की दूरी पर फैलकर चलने लगे । बाबा के साथ माधुरी चल रही थी और चेले के साथ मैं मैं चल रहा था ।

दोनों चारों तरफ निगाहें घुमाते हुए चल रहे थे । उनके अंदाज से ऐसा लग रहा था कि उस इलाके में तेलिया कंद पाए जाते होंगे । इससे पहले भी उन्होंने कंद निकाले थे ।

मैं उनकी हरकतों को देखता हुआ पीछे पीछे चल रहा था ।

जंगल काफी घना था !

ऊंचे ऊंचे पेड़ थे ।

नीचे झाड़ियों का भी अंबार था !

कुल मिलाकर आने जाने का रास्ता जटिल था ।

अगर कोई रास्ता भटक जाए तो उसे निकलने में भी बड़ी परेशानी हो जाती ।

वह कृष्ण पक्ष की रात थी । इसलिए अंधेरा और घना हो गया था ।

किसी प्रकार का बना हुआ रास्ता नहीं था ...

बल्कि पेड़ों को देखते हुए

नीचे की झाड़ियों को लांघते हुए हम आगे बढ़ रहे थे ...

एक घंटे हम लोग चलते रहे

तभी माधुरी की आवाज गूंजी - बाबा !! वो रहा ...

हम दोनों भी उसी तरफ लपके.....

वहां का दृश्य देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया ।

दूर.....

लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर

ऐसा लग रहा था जैसे आग जल रही हो ।

उसे देख कर माधुरी उंगली दिखा रही थी ।

पहले मैंने सोचा - आग जलने से तेलिया कंद मिलने

का क्या संबंध है ? लेकिन उन दोनों के चेहरे की खुशी

बता रही थी कि वास्तव में उन्हें पौधा मिल गया है ।

हम लोग दिशा में आगे बढ़े । वह जितना पास दिख रहा था वास्तव में उतना पास नहीं था । लगभग आधा पौन घंटा चलने के बाद हम लोग उस तक पहुंच पाए । रास्ता बहुत ज्यादा उबड़ खाबड़ और फिसलन भरा था ।

जब हम पास पहुंचे तो हम लोगों ने देखा

ठीक सामने एक चमकता हुआ पौधा खड़ा था...

उसके पत्ते तारों की तरह टिमटिमा रहे थे....

गणेश बाबा ने बताया - यह पौधा रात में रोशनी बिखेरता है और यही इसकी पहचान है । इसे दिन में पहचानना बहुत मुश्किल होता है, क्योंकि यह इसी प्रकार घने जंगलों के बीच में ही पाया जाता है । इतना ही नहीं इसके पौधे बेहद दुर्लभ हैं । किसी जंगल में एक आध पौधा मिल गया तो बहुत बड़ी बात है ।

बेटा , अघोरा नंद तेरा भाग्य अच्छा है !

गुरुदेव की कृपा है !

इसलिए यह पौधा मिल गया....

इतना कहकर सबसे पहले बाबा ने अपने जेब में हाथ डालकर चावल के कुछ दाने निकालें । कुछ दाने हम सभी को दिये । हम सबने उस पौधे के पास उन्हें छिड़क

दिया । उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और आमंत्रित किया कि देह सिद्धि साधना के निमित्त उसे प्राप्त करना चाहते हैं । वह पौधा इस कार्य सिद्धि में उनकी सहायता करें ...

इसके बाद उन्होंने कुछ मंत्रों का उच्चारण किया । इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 5 मिनट का समय लगा होगा । हम तीनों हाथ जोड़कर उनके साथ खड़े रहे

बाबा बोले - इसके पास में निशान लगा देते हैं । कल आकर इसे खोद कर ले जाएंगे । यह दिन में नहीं चमकता है, इसलिए दिन में इसे पहचान पाना बहुत मुश्किल होगा ।

निशान लगाने के लिए वहां पर कुछ भी नहीं था । इसलिए आसपास से कुछ लकड़िया और पत्थर एक विशेष आकृति में बनाकर वहां पर बाबा के चेले ने रख दिया ।

माधुरी ने अपनी चुनरी वहां बगल वाले एक पेड़ पर बांधी । इस प्रकार से हम निशान लगा कर वापस लौट आए ।

उस समय तक रात के 10 बज चुके थे ।

गणेश बाबा ने मुझे एक मंत्र दिया । जिसका जाप मुझे रात भर करना था । मैं रात भर उस मंत्र का जाप करता रहा और सुबह लगभग 6 बजे अपने आसन से उठ गया । तब तक भोर की किरणों बिखरनी चालू हो चुकी थी

सुबह दस बजे के आसपास हम चारों फिर से जंगल की ओर निकले....

हमारे साथ में वह काला बकरा भी था

इसके अलावा बाबा ने और भी कुछ सामान लिए थे ।

जिसका उपयोग होना था ।

उसमें थी !

दो कुदाले !

दो बेलचे और एक लंबी सी मजबूत रस्सी.....

लगभग डेढ़ घंटे चलने के बाद हम लोग उस स्थान पर पहुंचे जहां हम लोगों ने निशान लगाया था । निशान की वजह से हम उस पौधे तक पहुंच गए क्योंकि दिन में वह नहीं चमकता था ।

वह पौधा करीब करीब 3 फुट या 4 फीट ऊंचा रहा होगा । उसके पत्ते लंबे लंबे से थे और उसमें निशान बने हुए थे । यह निशान बिलकुल वैसे ही थे जैसे सर्प के ऊपर पाए जाते हैं

उस पौधे के आसपास 10 फीट के घेरे में कोई दूसरा पौधा नहीं था । ऐसा लगता था जैसे वहां की घास तक गायब हो गई हो । एकदम प्लेन जमीन थी । वहां जमीन पर तेल बिखरा हुआ था । ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने एक पीपा तेल जमीन पर उड़ेल दिया हो । पूरी मिट्टी तेल तेल से चुपड़ी हुई लग रही थी । आसपास की जमीन पूरी तेल से गीली थी ।

मैंने हाथों से उस मिट्टी को छू कर देखा...

तो मेरे हाथ भी तेल से सन गए

इतना तेल मिट्टी में बिखरा हुआ था ...

अब काम चालू होना था ...

सबसे पहले बाबा ने उस पौधे के तने में जोकि लगभग 4 इंच की गोलाई का रहा होगा उस रस्सी को बीच में बांध दिया ।

उसका एक सिरा लगभग 15 फीट दूर खड़े एक मजबूत पेड़ के तने में बांध दिया । दूसरे सिरे को उसी पेड़ के नीचे छोड़ दिया ।

रस्सी पर्याप्त लंबी थी !

अब स्थिति यह थी कि उसका एक सिरा पेड़ के तने में बंधा हुआ था और रस्सी आगे जाकर तेलिया कंद के पौधे के तने में बंधी हुई थी

और रस्सी का दूसरा हिस्सा उसी पेड़ के नीचे जमीन पर पड़ा हुआ था ।

गणेश बाबा ने और उनके चेले ने कुदाल उठा लिए ॥
मैंने और माधुरी ने बेलचा उठा लिया ॥

पौधे के गोलाई में लगभग एक 1 फुट की जमीन बाबा और चेले ने मिलकर खोद डाली । हम लोगों ने बेलचे से मिट्टी को हटाया । अब पेड़ की जड़ें दिखनी चालू हो गई थी ।

जैसे ही पेड़ की जड़ें दिखने लगी

बाबा ने हमें रुकने का इशारा किया

बाबा ने सूर्य को देखकर दिशा का अनुमान लगाया और पूर्व दिशा में कुदाली को जमीन पर गाड़ दिया । जो उस पौधे से लगभग 5 फुट की दूरी पर था ।

इसी प्रकार उन्होंने दूसरी कुदाली को पश्चिम दिशा में उस पौधे से लगभग 5 फुट की दूरी पर गाड़ दिया ।

उत्तर और दक्षिण में हमारे हाथ में जो बेलचे थे । उनको उसी प्रकार 5-5 फुट की दूरी पर उन्होंने गाड़ दिया ।

इसका मंतव्य हमको समझ में नहीं आया और उस समय उन्होंने कुछ बताया भी नहीं

जिस पेड़ पर रस्सी का एक सिरा बंधा हुआ था वह जमीन से लगभग 5 फुट की ऊंचाई पर था । बाबा ने हम तीनों को उसी पेड़ पर चढ़ जाने के लिए कहा और अच्छी तरह से कसकर पकड़ कर बैठ जाने के लिए कहा । साथ ही यह भी कहा कि किसी भी हालत में नीचे नहीं उतरना है, जब तक कि उनका निर्देश ना हो ॥

रस्सी के दूसरे सिरे को लेकर बाबा बगल वाले दूसरे पेड़ पर चढ़ गए । बाबा ने उसी पेड़ के नीचे उस काले बकरे को भी बांध दिया ...

अब स्थिति यह थी कि.....

एक पेड़ पर जिसके तने अच्छे मोटे मोटे थे

मैं, माधुरी और बाबा जी का चेला अलग-अलग डाल से चिपक कर बैठे हुए थे...

और उस पौधे की तरफ देख रहे थे ।

दूसरे पेड़ पर बाबाजी रस्सी का दूसरा सिरा पकड़कर चढ़े हुए थे और उसी पेड़ के नीचे वह काला बकरा बंधा था ।

बाबा जी ने हमसे पूछा - सब मजबूती से बैठे हो ? कोई दिक्कत तो नहीं है ?

हम सब ने कहा - कोई दिक्कत नहीं है ।

बाबा ने दोहराया - किसी हालत में पेड़ को नहीं छोड़ना
और कुछ भी दिखे तो घबरा कर नीचे नहीं कूदना ! जहां
बैठे हो ! वहीं बैठे रहना !!

हम सभी ने हां की आवाज लगाई ।

मैं सोच रहा था कि - भगवान जाने अब क्या होने वाला
है

उधर बाबा जी ने मन ही मन कुछ मंत्रों का जाप किया
ऐसा लग रहा था क्योंकि वह आंख बंद करके
कुछ देर बैठे रहे उसके बाद उन्होंने अपने हाथ की
रस्सी को झटका देना चालू किया उनके झटके के साथ
तेलिया कंद का पौधा भी हिलता था ।

आठ दस झटकों में तेलिया कंद का पौधा थोड़ा-थोड़ा
जमीन से ऊपर की तरफ निकलने लगा ।

उन्होंने हल्का सा झटका और लगाया तो अब नीचे का
कंद दिखाई देने लगा था

तभी.....

वहां से चार काले काले सर्प निकलकर फुफकारते हुए
बाहर आए

वे बेहद तेजी से आगे बढ़े.....

जो कुदाल और बेलचे जमीन पर बाबा जी ने रखे थे वह
उस ओर बढ़े और उनको डसना चालू कर दिया

मेरे विचार से करीब करीब 15 से 20 बार उन्होंने उनको
डसा होगा.....

मैं कल्पना कर रहा था कि उसकी जगह अगर कोई
आदमी होता या हम लोग होते तो क्या स्थिति
होती

वे चारों सर्प इस प्रकार से डस डस कर पस्त होकर वही
गिर गए ।

बाबा अभी भी पौधे को हल्का हल्का झटका दे रहे थे
। फिर उन्होंने एक जोर का झटका दिया और वह पौधा
कंद समेत जमीन से बाहर आ गया.....

जैसे ही वह जमीन से बाहर आया

अंदर से एक बेहद मोटा काला सांप बाहर निकला ।

उसके शरीर पर सफेद सफेद गोल गोल निशान बने हुए थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे काले रंग के कपड़े पर सफेद रंग की बिंदिया बनी हुई हो ।

उसकी मोटाई लगभग 4-5 इंच की रही होगी ।

वह कम से कम 15 फीट लंबा रहा होगा....

जब वह फन काढता था

तो.....

उसका फन ऐसा लगता था जैसे दोनों हाथों की हथेलियों को फैलाने से जो आकार बनता है लगभग वैसा ...

यानी.....

लगभग लगभग 10 से 12 इंच चौड़ा ।

मैंने उस प्रकार का सर्प अपने जीवन में कभी नहीं देखा था !

इतने मोटे अजगर जरूर होते हैं !!

लेकिन अजगर को फन फैलाते हुए मैंने कभी नहीं देखा है !!

और अजगर एकदम सुस्त चाल में चलते हैं !!

बिल्कुल उस कहावत को साकार करते हुए कि...
अजगर करे न चाकरी.....

यहां तक कि हाईवे पर भी अगर आपको अजगर दिख जाए तो उसको इस बात का कोई डर नहीं होता कि गाड़ी उसके ऊपर से चल जाएगी । वह अपनी उसी सुस्त चाल में धीरे-धीरे सरकता हुआ रोड क्रॉस करता है । उसके आकार को देखकर आमतौर पर गाड़ियां रुक जाती हैं इसलिए वह बच जाता है ... खैर

तो.....

वह सर्प जितना विशालकाय था, उतना ही फुर्तीला भी

उसके आकार को देखते हुए वह जितनी तेजी से निकला वह वास्तव में बेहद आश्चर्यजनक था.....

वह बेहद गुस्से में लग रहा था ...

हर तरफ फुफकारते हुए देख रहा था ।

उसने पौधे के चारों तरफ चक्कर लगाया ।

बाकी सर्प तब तक डस डस कर पस्त हो चुके थे ।

संभवतः मर चुके थे

उनके पास जाकर उसने जैसे निरीक्षण किया और हर मरे हुए सर्प को देख कर और जोर जोर से फुफकारता था

जैसे अपने दुश्मन को ललकार रहा हो

तभी बाबा के पेड़ के नीचे जो बकरा लेटा हुआ था वह मिमियाया और उठ कर खड़ा हो गया

वह भयानक सर्प किसी बंदूक की गोली जैसी तेजी से उसकी ओर लपका...

जैसे उसे दुश्मन मिल गया हो ...

डर के मारे बकरा पेड़ के चारों तरफ घूमने लगा ...

लेकिन इस घूमने में उसकी रस्सी और कस गयी और वह तने से चिपक कर भयभीत अवस्था में खड़ा रह गया.....

इधर सर्प पूरी तेजी से उसकी ओर लपका और उसने बकरे के ऊपर भयानक वार किया

उसने कम से कम 20 से 25 बार उस बकरे के ऊपर फन मारा होगा और उसके बाद निढाल होकर वहीं गिर गया

संभवतः मर गया !

उसकी हरकत देखकर हमारी हालत खराब हो गई थी !
उसके निढ़ाल हो कर गिर जाने के बाद भी हम लोग पेड़
के ऊपर ही बैठे रहे !

और....

उसे देखते रहे !

उसके शरीर में किसी प्रकार की हरकत नहीं हो रही थी !
उधर कुदाल और बेलचे के पास पड़े हुए चारों सांप भी
बेजान पड़े थे !

लगभग 1 घंटे तक हम लोग उसी प्रकार डरे सहमे से बैठे
रहे

उसके बाद बाबा नीचे उतरे !

जब वह नीचे उतरे !

तो हम लोग भी नीचे उतरे ।

बकरा मर चुका था

उस भयानक सर्प ने उसे इस प्रकार से काटा था कि
उसके शरीर में कई जगह गड्ढे से पड़ गए थे

और....

उन में से खून रिस रहा था ...

काला ! काला !! खून....

बाबा ने बताया - यह अत्यंत विषैला सर्प है । इसके जहर की एक बूंद आठ-दस लोगों को मारने के लिए काफी है ।

यह जब निकलता है तो वह किसी न किसी को मारकर ही छोड़ता है ।

अगर कोई दौड़कर बचने की सोचे तब भी वह संभव नहीं होता

क्योंकि यह लगभग एक दो मील तक उसे दौड़ाता है और तब तक उसे नहीं छोड़ता जब तक उसे डस ना ले

सर्प की भयानकता को देखकर...

और उसके बारे में सुनकर मन में भय का संचार होने लगा था ।

उसे वहीं छोड़कर हम लोग पौधे की तरफ बढ़े

जो चार सर्प !

बेलचे और कुदाली पर प्रहार कर रहे थे !!

उनका प्रहार इतना तेज था कि लकड़ी और लोहे पर उनके निशान बन गए थे

उनमे पीले पीले रंग की जहर की धारा बहती हुई
दिखाई दे रही थी ...

यह सोचकर मैं मन ही मन कांप गया कि उन बेलचों की
जगह अगर हम होते तो क्या होता.....

खैर....

हमें तेलिया कंद मिल चुका था !

कंद को जैसे ही बाहर निकाला गया इसमें से तेल की
धार बहने लगी ।

गणेश बाबा अपने साथ एक बड़ी सी प्लास्टिक की
मोटी थैली भी लेकर आए थे । उस कंद को उसके अंदर
डाल दिया गया और हम लोग वापस लौट आए

तंत्र और आयुर्वेद में इस कंद का बहुत ज्यादा महत्व है ।
जिसके विषय में गणेश बाबा ने काफी देर तक
समझाया ।

उस दिन दोपहर भर विभिन्न औषधियों के साथ उस कंद
के तेल को और उसके पौधे के कुछ भाग को खरल में
डालकर बाबा पीसते रहे ...

रात के लगभग 12 बजे तक वे लगभग सौ ग्राम पारे को कंद के तेल और कुछ अजीब अजीब प्रकार के द्रव में डालकर हल्की आंच में पकाते रहें ।

बाबा ने बताया - पारे को रस भी कहा जाता है । पारे से संबंधित विद्या को पारद विद्या या रस विद्या कहा जाता है । पारे से विभिन्न प्रकार की तांत्रिक सामग्रियां बनाई जा सकती हैं , जैसे पारे का शिवलिंग आदि वहीं विभिन्न प्रकार की गुटिकाएं भी इसी से बनाई जाती हैं जो अलग-अलग साधना में काम आती है । वास्तव में कई प्रकार की अद्भुत औषधियां भी पारे से बनती है ।

पहले जो आयुर्वेद के वैद्य हुआ करते थे उनको तंत्र विद्या का भी ज्ञान रहता था । जब पारद से बने हुए औषधियों को मंत्रों से जागृत करके प्रयुक्त किया जाता है तो उसका ज्यादा फल मिलता है । अब उस प्रकार के वैद्य नहीं के बराबर ही बचे हैं । लेकिन पारद से बनी हुई औषधियां अभी भी आयुर्वेदिक उपचार में प्रयोग की जाती है । जिनके परिणाम भी काफी अच्छे मिलते हैं । पारा जहरीला होने के कारण उसे सही ढंग से संस्कारित करने पर ही वह मनुष्य के उपयोग के लायक

बनता है । अन्यथा उसका दुष्प्रभाव शरीर पर पड़ सकता है ।

देह सिद्धि गुटिका बनाने में भी पारे का उपयोग होता है । यह काफी समय साध्य है । जो पारा में इस समय उपयोग कर रहा हूं ,वह सामान्य पारा नहीं है । यह आठ संस्कार किया हुआ पारा है ।

यूं समझ लो कि इसमें कम से कम 3 महीने का समय लगा है ॥

तब जाकर इसके 8 संस्कार पूरे हुए हैं ...

इसके अलावा उन्होंने पारद विज्ञान के देवता रस अंकुश भैरव और रसेश्वरी देवी के बारे में भी विस्तार से बताया । जिस पर चर्चा और कभी.....

ठीक अर्धरात्रि के समय उन्होंने खरल के अंदर पड़े हुए पदार्थ को भी उस चूल्हे के ऊपर रखे हुए लोहे के बर्तन में डाल दिया ।

उसके बाद उन्होंने हमें साथ लिया और झोपड़ी से बाहर निकल जाए

निकलने से पहले उन्होंने आंच को बढ़ाने के लिए कुछ लकड़ियां और डाल दी थी

हम बाहर खड़े रहे 10-15 मिनट के बाद अंदर से छोटे-छोटे पटाखे छूटने जैसी आवाजें आने लगी ...
और पीले रंग का धुआँ झोपड़ी में फैलने लगा ...
फिर पटाखों की आवाज बंद हो गई ।

लगभग आधे घंटे के बाद हम लोग वापस झोपड़ी में घुसे ।

तब तक आग बुझ चुकी थी और उस बर्तन में एक सुनहरे रंग का गाढ़ा द्रव पड़ा हुआ था

बाबा ने उसे पानी से भर दिया

और वह गोली का आकार लेने लगा

रात भर वह गोली उस पानी में डूबी रही ...

सुबह उस गोली को बाबा ने बाहर निकाल दिया ।

वह एकदम सुनहरे रंग की गोली थी !

ऐसा लग रहा था !

जैसे सोने की बनी हो !!

और !

साधक को इस प्रकार से सोचने की छूट नहीं होती ।
जब गुरु उससे कोई साधना करवाना चाहता है तो उसे
किसी सैनिक की तरह हर आदेश को मानना होता है ।
चाहे वह आदेश कैसा भी और कितना भी अजीब क्यों
ना हो ...
तो.....
मैं उस पत्थर में धूप में चित्त लेटा हुआ था

बाबा के हाथ में वह सुनहरी गोली थी !
जिसे हाथ में लेकर सूर्य की तरफ उठाकर वे कुछ मंत्र
जाप कर रहे थे ।

लगभग 15-20 मिनट उन्होंने मंत्र जाप किया होगा ।
उसके बाद उन्होंने उस गोली को मेरी नाभि के गड्ढे में
डाल दिया ।
उन्होंने कहा - कल दोपहर को 12 बजे मैं आऊंगा
तब तक तुम्हें इसी अवस्था में लेटे लेटे मंत्र जाप करना
है । मंत्र मैं तुम्हें बता चुका हूं जिसका जाप तुमने पहले
किया था । उसी मंत्र को अब तुम्हें लगातार 24 घंटे तक
करना है ।

अपने शरीर को कम से कम हिलाने की कोशिश
करना

जितना हो सके निश्चल पड़े रहना

मन को एकाग्र करके नाभि में ध्यान करते हुए मंत्र जाप
करते रहना ...

उनके इतना कहने के साथ मैंने गुरुदेव को ध्यान किया
और फिर मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया । मेरा मंत्र जाप
चलता रहा

जिस स्थान पर वह गोली रखी हुई थी नाभि में ! वहां पर
हल्की हल्की जलन सी महसूस होती रही !

मंत्र जाप का सिलसिला चलता रहा ।

लगभग शाम के 6 बज रहे होंगे ॥

क्योंकि अंधेरा छाने लगा था ...

तभी मुझे अपने पास फुफकार की आवाज सुनाई दी ...
ऐसा लगा जैसे कोई सर्प है !

वह एक बड़ा सर्प था जो रेंगता हुआ मेरी तरफ आ रहा
था

मैं एकदम स्थिर अवस्था में पड़ा हुआ था जैसे कोई मृत
शरीर हो

अपने शरीर को कम से कम हिलाने की कोशिश
करना

जितना हो सके निश्चल पड़े रहना

मन को एकाग्र करके नाभि में ध्यान करते हुए मंत्र जाप
करते रहना ...

उनके इतना कहने के साथ मैंने गुरुदेव को ध्यान किया
और फिर मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया । मेरा मंत्र जाप
चलता रहा

जिस स्थान पर वह गोली रखी हुई थी नाभि में ! वहां पर
हल्की हल्की जलन सी महसूस होती रही !

मंत्र जाप का सिलसिला चलता रहा ।

लगभग शाम के 6 बज रहे होंगे ॥

क्योंकि अंधेरा छाने लगा था ...

तभी मुझे अपने पास फुफकार की आवाज सुनाई दी ...

ऐसा लगा जैसे कोई सर्प है !

वह एक बड़ा सर्प था जो रेंगता हुआ मेरी तरफ आ रहा
था

मैं एकदम स्थिर अवस्था में पड़ा हुआ था जैसे कोई मृत
शरीर हो

वह धीरे-धीरे मेरी तरफ आया और मेरे ऊपर से रेंगता हुआ छाती के ऊपर से बाएं से दाएं निकल कर चला गया

रात भर इसी प्रकार कुछ ना कुछ चलता रहा.... कभी किसी कीड़े ने काट दिया...

तो कभी ऐसा लगा जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो मच्छर तो पूरी रात अपनी बीन सुनाते रहे....

इस प्रकार से रात गुजर गई और सुबह की रोशनी बिखरने लगी

मेरा मंत्र जाप चालू था

जैसे जैसे सूर्य की किरणे बिखरने लगी

मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरी नाभि में रखी हुई गोली पिघल रही है

उसका गीलापन मैं महसूस कर सकता था ...

नाभि में मुझे बर्फ जैसी ठंडक का एहसास हो रहा था ...

धीरे-धीरे वह गोली संभवतः नाभि से मेरे शरीर में प्रवेश कर रही थी.....

मेरी आंखें बंद थी !

अब मुझे हिमालय पर्वत दिखाई दे रहा था.....

सफेद सफेद चोटियों से भरा हुआ....

हिमालय का विशाल पर्वत....

हर तरफ बर्फ ही बर्फ बिखरी हुई थी

इस हिमालय पर्वत के ऊपर एक शिला पर विराजमान
थे

मेरे परम श्रद्धेय गुरुदेव

उनके चेहरे पर मंद मंद मुस्कान बिखरी हुई थी

और...

उनके करुणा भरे नेत्र मुझे देख रहे थे ...

जिसमे से आशीर्वाद और वात्सल्य झलक रहा था ...

उनके हाथ आशीर्वाद की अभय मुद्रा मे उठे हुए थे...

उनका बिम्ब एक बार दिख जाए तो उत्साह हजार गुना
बढ़ जाता है

क्योंकि गुरु से परे साधना जगत मे कुछ भी नहीं है

न गुरोरधिकम !

न गुरोरधिकम !!

न गुरोरधिकम !!!

गुरुदेव के दिव्य दर्शन से मन अभिभूत हो गया था ।

उसके बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं भाव शून्यता की स्थिति में चला गया हूं ...

और फिर मुझे कुछ भी याद नहीं रहा ...

न पत्थर !

न धूप !

न गोली !

न बिच्छू के डंक की चुभन !

और ना ही और कुछ ...

रेगिस्तान में तपती हुई धूप में चलते हुए किसी व्यक्ति को अचानक बारिश की बूंदों का एहसास हो जाए तो वह कैसा महसूस करता होगा ?

बस कुछ कुछ वैसा ही अहसास था

मैं उसी तृप्ति के एहसास में डूबा हुआ लेटा हुआ था !
तभी

गणेश बाबा की आवाज सुनाई दी - अघोराणंद ! बेटा
अघोराणंद

मैंने उठने का प्रयास किया लेकिन काफी देर से लेटे होने
की वजह से उठने में थोड़ी सी तकलीफ हुई ...
मैं उठने की कोशिश कर रहा था जब बाबा ने कहा -
लेटे रहो

मुझे अपना शरीर बहुत भारी लग रहा था ।
बहुत ताकत लगानी पड़ रही थी ।
बाबा के कहते ही मैं वापस पसर गया ...

उठने के दौरान ही मैंने अपनी नाभि की तरफ भी नजर
डाली थी ॥

वह सुनहरी गुटिका गायब थी !!!

उस का हल्का सुनहरापन मेरी नाभि के ऊपर ठीक वैसे
ही बिखरा पड़ा था, जैसे रंगोली बनाते समय उसके
ऊपर सुनहरी चिप्स डाली जाती है । जो रोशनी पड़ते
ही सुनहरे रंग में चमकने लगती है ।

कुछ-कुछ वैसे ही

कुछ टुकड़े.....

नाभि के इर्द गिर्द चिपके हुए लग रहे थे ।

बाकी पूरी गोली गायब थी....

बाबा ने अपने हाथ में पकड़े हुए झोले के अंदर से कुछ लेप जैसा निकाला और उसे मेरी नाभि पर लगाकर रख दिया

जैसा कि मैंने आपको बताया था गोली के पिघलने के साथ मुझे नाभि के इर्द-गिर्द ठंडे पन का एहसास चालू हुआ था ! जो धीरे-धीरे पूरे शरीर में छा गया था और दोपहर की धूप में भी मुझे गर्मी का एहसास नहीं हो रहा था

लेप को लगाकर गणेश बाबा ने छोड़ दिया ।

बोले - अभी तुम शाम तक ऐसे ही लेटे रहो । तुमने साधना बहुत अच्छे ढंग से पूर्ण की है । वह देह सिद्धि गुटिका तुम्हारे शरीर में समाहित हो चुकी है । अब तुम्हारी नाभि केंद्र को मैंने औषधियों से लेप कर कर दिया है । सूरज की किरणों के साथ यह औषधियां धीरे धीरे तुम्हारे शरीर में उतरती जाएंगी । उसके बाद तुम्हारे शरीर के रोम छिद्रों से सुगंधित द्रव निकलेगा ।

लगभग आधा या एक घंटे का समय बीता होगा, जब मुझे गर्मी लगने लगी । गर्मी धीरे-धीरे बढ़ती चली गई । ऐसा लग रहा है जैसे पूरा शरीर तप रहा हो । पसीना छूटने लगा.....

ऐसी स्थिति लगभग आधा पौन घंटे तक रही होगी । पूरा शरीर पसीने से नहाने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे शरीर का पूरा पानी पसीना बनकर बाहर निकल गया हो ॥

इस एहसास से आप लोग भी परिचित होंगे.....

जब मई-जून की तपती गर्मी पड़ती है !
बाहर 40 से ज्यादा का टेंपरेचर होता है !
किसी वजह से अगर बाहर के लिए निकलना पड़े और रास्ते में कहीं पीने के लिए कुछ नहीं मिले ...
तो जो हालत होती है.....
ठीक वही हालत उस समय मेरी हो रही थी

लेकिन !

कुछ आधा घंटा और बीता होगा !
ठंडी ठंडी हवाएं चलने लगी

धूप की तपन कम होने लगी और बादल का एक टुकड़ा
सूरज भगवान के सामने फिल्टर बनकर खड़ा हो गया ,
जिसकी वजह से कुछ छांव सी हो गई और गर्मी में थोड़ी
सी राहत मिली

अचानक !

सुगंध का एक झोंका सा आया ।

मुझे समझ में नहीं आया

पहाड़ की नंगी चोटी पर

जहां पत्थरों के अलावा कुछ नहीं था

वहां यह खुशबू कहां से आई ...

खुशबू बेहद मादक और मनमोहक थी

मुझे खुशबू बहुत जानी पहचानी सी लगी....

तभी.....

पायल की खनक आने लगी !

पायल की आवाज धीरे धीरे मेरी ओर बढ़ रही थी ।

मैं अपने शरीर को हिलाने की स्थिति में नहीं था । मुझे

अपना शरीर बेहद भारी लग रहा था ।

गर्मी घट जाने के बावजूद मुझमे ना तो उठने की हिम्मत
हो रही थी !

ना ही हाथ पैर हिलाने की ताकत लग रही थी....

पायल की आवाज धीरे धीरे मेरे पास !

मेरे सर के बेहद पास तक ! आ गई

उसका सुंदर मुख मंडल दिखाई दिया ।

अरे !

यह तो पुष्पदेहा^[ii] है ।

मेरे मन में एक बिजली सी कौंधी

पुष्पदेहा के विषय में जानकारी के लिए आप मेरी पूर्व
रचना अघोरा नंद की अप्सरा पढ़ सकते हैं

हाँ !!

वह पुष्पदेहा^[1] ही थी !

हाथ में पानी का कलश लिए हुए !

सांवली रंगत की स्वामिनी !!

हाँ उसका रंग सांवला था

बाल घुंघरालू थे

जो उसके कंधों तक बिखरे हुए थे

उसने गुलाबी रंग के वस्त्र पहने हुए थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे खजुराहो की मूर्तियों से कोई
सप्राण सामने आ खड़ी हुई हो...

पुष्पदेहा अप्सरा !!!

जो सदैव आवश्यकता पड़ने पर मेरी सहायता के लिए
स्वयं तत्पर हो जाया करती थी ।

ठीक किसी प्रेमिका की तरह.....

चट्टान पर मेरे सिरहाने बैठकर उसने धीरे से मेरे सर को
सहारा देकर उठाया और अपनी गोद में रख लिया

उसके बाद हाथ में पकड़े हुए कलश से उसने मुझे जल
पिलाया ...

जल कहना उचित नहीं होगा

वह कुछ कुछ शरबत जैसा था

बहुत सारे फूलों की खुशबू से मिला जुला...

मीठा मीठा सा.....

उसे पीते ही मजा आ गया.....

ऐसा लगा जैसे अमृत मिल गया हो !!!

थोड़ी देर में शरीर की तपन कम होने लगी !

वह मेरे सर पर होले होले हाथ फेर रही थी

उस शरबत का असर था

या उसके सर पर हाथ फेरने का.....

यह तो मैं नहीं जानता !

मगर थोड़ी देर में मुझे नींद आ गई

लगभग 24 घंटे से ज्यादा हो चुके थे.....

जागते-जागते !!

इसलिए उस शरबत और सर पर हाथ फेरने ने मेरी
नींद की जरूरत को जगा दिया और मैं गहरी नींद में सो
गया.....

अभी भी मुझे अपना शरीर भारी भारी ही लग रहा
था

किसी भी हिस्से को हिलाना बेहद कठिन था

मैं कितनी देर तक सोया यह मुझे भी नहीं पता !

अचानक एक चुभन ने मेरी नींद खोल दी ।

ठीक मेरी नाक के ऊपर !

एक मधुमक्खी बैठी हुई थी ...

उसी के डंक ने नींद खोल दी थी ।

आप लोग जानते ही हैं अगर मच्छर या किसी कीड़े के काटने का एहसास होता है तो हमारा हाथ अपने आप उस जगह पर जा पड़ता है ! इसे मच्छर काटने के दौरान आप लोग महसूस कर सकते हैं ! यह आधी नींद में भी अपने आप हो जाता है

लेकिन ...

मैं चाहकर भी अपने हाथ को अपने नाक तक नहीं ला पा रहा था । यूँ कह लीजिए कि उसे मैं हिला भी नहीं पा रहा था । थोड़ी देर में वह चुभन मुझे अपने पूरे शरीर में महसूस होने लगी !

मेरा पूरा शरीर अब मधुमक्खियों से भर चुका था ! सब शरीर के अलग-अलग हिस्सों में बैठकर डंक मार रहे थे....

जैसे मैं कोई फूल हूँ !

जिसका रस सारे लोग मिलकर खींच रहे थे ।

लगभग 10-15 मिनट तक उस चुभन को महसूस करता रहा !

तब तक मैं सर से पांव तक मधुमक्खियों से भर चुका था !

मेरे पूरे शरीर पर मधुमक्खियां ही मधुमक्खियां बैठी हुई थी !

दर्द जब बर्दाश्त के बाहर हो गया

तब मैं फिर से शायद बेहोश हो गया

जब दुबारा होश आया

तो !

शाम का समय हो चुका था

सूरज भगवान अस्ताचल की ओर जाने की तैयारी में अपनी नारंगी आभा बिखेरते हुए दूर आसमान के छोर में खड़े हुए थे.....

जैसे जाने से पहले देख लेना चाहते हैं कि मुझे होश आया या नहीं....

मैंने उठने की कोशिश की

आश्चर्य !

मेरे शरीर के अंगों को मैं हिला सकता था ।

मैं हिल डुल सकता था !

मैंने उठने की कोशिश की.....

थोड़ी मेहनत के बाद मैं उठ कर बैठ गया

हाथ जोड़कर मैंने सूर्य भगवान को प्रणाम किया !
सनातन धर्म मे सूर्य देवता को प्रत्यक्ष देवता माना जाता है, क्योंकि वह हमें दिखाई देते हैं ।

विज्ञान के अनुसार वह एक गैसीय पिंड है !
जिसमें हाइड्रोजन से हीलियम गैस बनती है ।
इस प्रक्रिया में असीमित ऊर्जा का उत्पादन होता है !
वही ऊर्जा सूर्य के अंदर से प्रकाश के रूप में उत्सर्जित होती है और बिखर जाती है ।

सनातन धर्म इसके विरोध में नहीं खड़ा है और ना ही उसके द्वारा कही गई बातें इसके विरुद्ध हैं । सनातन धर्म हर शक्ति को एक देवता या देवी के रूप में देखता है । इसलिए शक्ति या ऊर्जा का स्रोत सूर्य भी एक मूल देवता है । जो पृथ्वी पर जीवन का मूल कारक है । उसके अंदर से निकलने वाली रश्मिया जब पृथ्वी पर आती है तो वह पृथ्वी पर जीवन का प्रादुर्भाव करती है ।

विज्ञान इसे फोटोसिंथेसिस कहता है । यानी हरी पत्तियां सूर्य भगवान के प्रकाश की उपस्थिति में भोजन का निर्माण करती है । इसके लिए उसे दूसरे प्रत्यक्ष देवता यानी जल की भी जरूरत होती है । यह सारा

कुछ तभी संभव है जब कि वह हरी पत्तियां किसी जीवित पौधे में विद्यमान हो ।

जीवन का क्रम यहीं से प्रारंभ होता है । पत्तियों से बीज और अन्न तक का सफर जब तय होता है तब हमें हमारे मूल भोजन चावल, गेहूं आदि मिलते हैं । जिससे पृथ्वी पर जीवन आगे की ओर बढ़ता है ।

हमारे जीवन को चलाने वाली उस शक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए हम सूर्य देवता को प्रतिदिन अर्घ्य देते हैं ।

हमारे जीवन के लिए भी सूर्य भगवान बेहद महत्वपूर्ण है । हमारे शरीर का मेटाबॉलिज्म या यूँ कह लीजिए शरीर की जो सामान्य प्रक्रियाएं हैं उनको निरंतर जारी रखने के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण कारक है विटामिन डी । विटामिन डी सूर्य की किरणों के माध्यम से ही प्राकृतिक रूप से निशुल्क प्राप्त होता है । इसके अभाव में शरीर की आंतरिक व्यवस्था में कई प्रकार की गड़बड़ियां आ सकती है ।

वर्तमान समय में अधिकांश लोग घर के अंदर या बंद फ्लैट में रहते हैं ! सूर्य के प्रकाश से दूर !!

थोड़ी सी धूप बर्दाश्त नहीं करते हैं !!!

इसके चलते अधिकांश लोगों में विटामिन डी की कमी पाई जाती है ।

इस वजह से उनको कई प्रकार की परेशानियां भी होती है ।

कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य यह है कि नित्य प्रति सूर्योदय के समय यदि आप सूर्य भगवान को अर्घ्य देंगे

उनके तरफ देखते हुए

सुबह 8 बजे से पहले की धूप में 10-15 मिनट बैठेंगे तो आपको अपने अंदर एक नए प्रकार की ऊर्जा का आभास होगा ।

यह अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि सूर्य भगवान अपनी उर्जा बिखेरते रहते हैं

केवल आवश्यकता यह है कि हम उसको स्वीकार करें.....

वर्तमान समय में अधिकांश लोग घर के अंदर या बंद फ्लैट में रहते हैं ! सूर्य के प्रकाश से दूर !!

थोड़ी सी धूप बर्दाश्त नहीं करते हैं !!!

इसके चलते अधिकांश लोगों में विटामिन डी की कमी पाई जाती है ।

इस वजह से उनको कई प्रकार की परेशानियां भी होती है ।

कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य यह है कि नित्य प्रति सूर्योदय के समय यदि आप सूर्य भगवान को अर्घ्य देंगे

उनके तरफ देखते हुए

सुबह 8 बजे से पहले की धूप में 10-15 मिनट बैठेंगे तो आपको अपने अंदर एक नए प्रकार की ऊर्जा का आभास होगा ।

यह अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि सूर्य भगवान अपनी उर्जा बिखेरते रहते हैं

केवल आवश्यकता यह है कि हम उसको स्वीकार करें.....

इस ऊर्जा को और बढ़ाने के लिए आप गायत्री मंत्र या सूर्य मंत्र का उच्चारण कर सकते हैं ।

गायत्री मंत्र है :-

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

सूर्य मंत्र है:-

॥ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः ॥

खैर

हम वापस अपनी कहानी की ओर लौटते हैं

मैंने सूर्य देवता को प्रणाम किया । उनके द्वारा निशुल्क प्रदान किए जाने वाले प्रकाश और ऊष्मा के लिए हृदय से उनका आभार व्यक्त किया

उसके बाद मैं उस चट्टान से नीचे उतरा.....

मेरा पूरा शरीर फूल गया था

मधुमक्खियों ने मेरे शरीर के हर हिस्से में डंक मारा था !

मैं किसी गुब्बारे या बलून की तरह फूला हुआ था !

हाथ पांव नाक सब फूले हुए थे

चट्टान से उतरकर मैंने थोड़ी देर इधर-उधर चलने की कोशिश की ...

मैंने सोचा कि अब क्या किया जाए ????

यही सोचते हुए मैं वापस चट्टान पर बैठ गया

तभी पुष्पदेहा फिर से वापस लौटी ...

इस बार उसके हाथ में एक पात्र था जो एक पत्ती से ढका हुआ था ।

उसने मुझे उस चट्टान पर दोबारा से लेटा दिया ।

पात्र के अंदर हल्दी के जैसा पीले रंग का कोई लेप था ।

उसने धीरे-धीरे मेरे पूरे शरीर पर उस लेप को लगा दिया ।

जहां जहां वह लेप लग रहा था

वहां वहां की चुभन शांत होती जा रही थी.....

उसने सबसे अंत में मेरे सर के ऊपर जहां ब्रह्मरंध्र होता है वहां पर उस लेप को लगाया

शरीर में वेदना का अनुभव अभी हो रहा था , लेकिन पहले की तुलना में काफी कम हो गया था ।

तभी !

पुष्पदेहा के मुख से उसकी सुरीली आवाज में गान निकल पड़ा ... उसके साथ साथ बज पड़े दिव्य वाद्य यंत्र !

जिन्हे बजाता हुआ कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था ! लेकिन !

विविध प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनियाँ बराबर सुनाई दे रही थी.....

ऐसा लग रहा था.....

जैसे चार पांच लोग उसके गीत के साथ संगत कर रहे हैं ।

कभी-कभी एकांत के पल में वह मुझे उस दिव्य संगीत का अनुभव कराती थी

अप्सरा मूल रूप से देवलोक की निवासिनी मानी जाती है और उनका गीत-संगीत दैवीय होता है । वह ऐसा संगीत होता है जो मन मस्तिष्क को शांति के अथाह सागर में भिगो देता है

उस शांति के अनुभूति के साथ मैं फिर सो गया

नींद मे अचानक मुझे जटाशंकर दिखाई दिया

इरम का घर मुझे स्पष्ट दिख रहा था

मैं और माधुरी वहाँ से निकलते दिख रहे थे

यानि मैं भूतकाल के दृश्य देख रहा था ।

मेरी दिलचस्पी अपनी बजाय जटाशंकर में थी और

जैसे ही मैंने जटाशंकर को याद किया मुझे जटाशंकर
दिखाई देने लगा ।

वह इरम की झोपड़ी थी ...

वहाँ बिल्ला बना हुआ जटाशंकर इरम के पास ही जमीन
पर लेटा हुआ था ।

अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

मैंने देखा दरवाजे पर इरम की बहन रिया एक बुजुर्ग
महिला के साथ खड़ी हुई थी

इरम ने दरवाजा खोला

उन दोनों के बीच में कुछ बातें हुई और इरम के चेहरे पर
तनाव की लकीरें दिखाई देने लगी ।

इरम ने रिया को कुछ कहा और उस महिला के साथ बाहर खड़ी गाड़ी में बैठकर कहीं चली गयी ।

रिया अंदर कमरे में आ गयी ।

उसने बिल्ला बने हुए जटाशंकर को देखा

उसकी आँखों में ठीक वैसी ही चमक उभर आई जैसी शिकार को देखकर शिकारी के चेहरे में आती है । उसने उसे गोद में उठाया और बाहर से कुंडा लगाकर अपने घर आ गयी

मेरे मन में विचार आया - बेटा जटाशंकर ! अब तू तो गया काम से

रिया उसे लेकर अपने घर आ गई थी ...

जटाशंकर बिल्ले को जमीन पर छोड़कर वह रसोई में चली गई । थोड़ी देर बाद एक बर्तन में दूध लाकर बिल्ला बने जटाशंकर के सामने रख दिया ।

कुछ देर जटाशंकर झिझका !

फिर दूध पीने लगा

दूध पीकर वह फिर से जमीन पर पसर गया और सो गया

रिया अंदर के कमरे में जाकर सो गयी
शाम तक इरम के जादू का असर खतम हो गया ...
बिल्ला वापस जटाशंकर में बदल गया ...
वह अभी भी सो रहा था

कुछ देर बाद उसकी नींद खुली और वह हड़बड़ा कर
उठ बैठा । उसने चारों तरफ देखा और उसके चेहरे पर
अचरज के भाव दिखने लगे ।

वहां पर सब कुछ नया दिखाई दे रहा था ।
ना तो वहां पर इरम थी और ना ही मैं और माधुरी.....
वह हैरान-पेशान सा चारों तरफ देख रहा था

कुछ देर बाद वह उठकर अंदर के कमरे की तरफ गया
। वहाँ का दृश्य किसी भी पुरुष को विचलित करने के
लिए काफी था

वहाँ रिया पूर्ण नग्न अवस्था में बिस्तर पर करवट लेकर
लेटी हुई थी

और दरवाजे की ओर देख रही थी

उसकी आँखों में वासना के लाल डोरे चमक रहे थे ...

उन आँखों में ही नहीं उसके पूरे शरीर से आमंत्रण का
भाव झलक रहा था

जटाशंकर आंखें फाड़ फाड़ कर कुछ देर देखता रहा !

फिर जैसे होश में आया !!!

उसने अपने सर को झटका और कमरे से बाहर निकलने की कोशिश की !

वह अपने पांव पीछे की तरफ लेना चाहता था...

लेकिन

ऐसा लग रहा था जैसे पांव पीछे नहीं हट रहे हैं । उसके चेहरे पर प्रयास के भाव दिख रहे थे

लेकिन वह पाँव को पीछे नहीं कर पा रहा था ।

काफी देर तक प्रयास करने के बाद जब वह असफल

रहा तो उसने पांव को सामने रखने की कोशिश की

और बड़ी आसानी से उसका पाँव सामने की तरफ बढ़

गया ...

उसे समझ में आ गया था कि वह अब बाहर नहीं जा

पाएगा !

उसे अंदर ही जाना है !!

तभी !!!

उसकी आंखें रिया की आंखों से टकराई ...

और मामला उसके हाथ से निकाल गया ।

वह उसके सम्मोहन पाश में बंधा हुआ धीरे धीरे बिस्तर की ओर बढ़ने लगा

उसके बाद रात भर वह कमरा काम युद्ध का साक्षी बना रहा.....

भोर फटने वाली थी जब रिया उठ गई

जटाशंकर रात की थकान से बेसुध सोया हुआ था ...

उसने ठीक वैसे ही हाथ हिलाया , जैसे ड्रम हिलाती थी !

उसके हाथ हिलाते ही जटा शंकर वापस बिल्ले में परिवर्तित हो गया ...

उसके बाद वह भी सो गई

यह सब देख मुझे जटाशंकर पर तरस आया और थोड़ा दुख भी हुआ फिर सब मानस से हट गया और मेरी नींद खुली

तो सूरज भगवान उग रहे थे

यानी लगभग 12 घंटे के आसपास मैं सोता रहा ...

मैंने उठने की कोशिश की तो मैं बड़ी आसानी से उठ पा रहा था ...

उसके बाद मैं चट्टान से नीचे उतरा ।

अब मुझे अपना शरीर फिर से हल्का फुल्का लग रहा था

लगभग आधे घंटे के बाद गणेश बाबा प्रकट हुए ...
उन्होंने मुझे देखा और मैंने उठ कर उनके चरण स्पर्श किए

उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा - चलो अब चलते हैं ।

लगभग 11 बजे के आसपास वापस गणेश बाबा की कुटिया में पहुंच चुके थे

बाबा जी ने बताया- बेटा अब तुम्हें तीन दिन के लिए हम एक विशेष तेल में डूबा कर रखेंगे । यह तेल तेलिया कंद और पंद्रह औषधियों के मिश्रण से बना हुआ है । तीन दिन में इस तेल के सारे औषधीय गुण तुम्हारे शरीर में प्रवेश हो जाएंगे । उसके बाद किसी भी प्रकार के वातावरण में किसी प्रकार की दिक्कत के बिना आसानी से रह पाओगे

मैंने सोचा कि तीन दिन तक मैं भूखा प्यासा कैसे रहूंगा ?
दो दिन से मैं वैसे ही भूखा था.....

केवल पुष्पदेहा द्वारा पिलाया गया वह अद्भुत शरबत ही
मैंने पिया था ।

मेरे मन में उठ रहे हैं भावों को बाबा समझ गए ।

वह बोले - जो द्रव तुमने पिया था ... वह अप्सरा लोक
का पेय था । उसे पीने के बाद तुम्हारे शरीर को हफ्ते भर
कुछ भी खाने पीने की जरूरत नहीं है

तुम वैसे ही जिंदा रह पाओगे ।

देह सिद्धि साधना के पहले दो चरण तुम पूरे कर चुके हो
।

बहुत कम साधकों को यह तीसरा चरण कराया जाता है
।

इस चरण के लिए यह जरूरी है कि वह अप्सरा सिद्ध
हो !

जो तुमने पिया है वह पेय उसने पी लिया हो ।

तभी यह तीन दिनों तक चलने वाली आखिरी प्रक्रिया
वह आसानी से पूरा कर पाता है ...

मुझे खुशी भी हुई और उत्साह भी

प्रक्रिया प्रारंभ हुई

उन्होंने पलाश के पेड़ का लगभग 6 फुट लंबा तना मंगा कर रखा हुआ था ।

पलाश का पेड़ वह होता है जिसमें होली के समय लाल लाल रंग के फूल खिलते हैं

उसे अंदर से खोखला करके नाव जैसा बना दिया गया था ।

उसके अंदर मुझे लेटा दिया गया और उसके बाद उसे गहरे काले रंग के तेल से भर दिया गया ।

मेरे सिर का हिस्सा तेल से बाहर था बाकी पूरा हिस्सा तेल के अंदर था ।

पूरे 3 दिन और 3 रात मुझे उसी में रखा गया । बिल्कुल भूखा प्यासा रहा मैं उस दौरान

लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि मुझे भूख प्यास का एहसास भी नहीं हुआ ।

ना ही मल मूत्र विसर्जन की इच्छा

वास्तव में तंत्र साधनाओं का और आयुर्वेदिक औषधियों का भी संसार बेहद विचित्र और अद्भुत है ।

वह तना पूरा का पूरा तेल से भरा हुआ था और तेल में फिसलन होती है ।

इस फिसलन से मेरा सर कहीं तेल के अंदर ना चला जाए इसकी सुरक्षा के लिए एक खाचा जैसा मेरे गले में फंसाया गया

जो मुझे या यूं कहिए कि मेरे सिर को तेल से ऊपर रखता था ...

तेल के अंदर क्या था ?

मुझे नहीं मालूम !

लेकिन.....

देखने से ऐसा लगता था जैसे बहुत सारी चीजें उसमें मिली हुई है । किसी विशेष तरीके से बनाया हुआ तेल लगता था !

उस तेल के अंदर लेटते ही मुझे गहरी थकान सी महसूस होने लगी

लगभग एक घंटा बीतते बीतते मैं किसी नशेड़ी आदमी की स्थिति में आ गया था.....

उन तीन दिनों में मेरी स्थिति वैसी ही रही

बेहोश था.....

सो रहा था

या क्या था ?

मैं नहीं कह सकता , लेकिन वह 3 दिन कैसे गुजरे मुझे बिल्कुल एहसास भी नहीं हुआ ...

वह मेरे लिए एक बिल्कुल नए किस्म का अनुभव था ...

पेड़ के तने को खोखला कर के उसके अंदर तेल डालकर उसमें इंसान को डुबोकर रखना ।

बाद मे गणेश बाबा ने बताया कि यह भी आयुर्वेद की एक विधा है । जिसका इस्तेमाल केरल में बहुत ज्यादा होता है ।

सुदूर दक्षिण के राज्य केरल में आयुर्वेदिक चिकित्सा का जितना विकास और विस्तार हुआ है

वह अद्भुत है !

वहां बड़े-बड़े आयुर्वेदिक संस्थान है !! जो आधुनिक परिस्थितियों के बीच भी अपनी प्रामाणिकता को साबित करते हुए आयुर्वेद को जीवन दे रहे हैं ।

प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन भी इस आयुर्वेदिक चिकित्सा का लाभ उठा चुके हैं । स्नायु तंत्र की गड़बड़ी

तथा लकवा जैसी बीमारियों में यह काफी लाभप्रद भी माना जाता है ।

वहां भी मरीजों को इस प्रकार से तेल के बर्तनों में उनके मर्ज के अनुसार 2 से 4 घंटे तक डुबा कर रखा जाता है

और अधिकांश रोगियों को उससे लाभ भी मिलता है

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था एक तांत्रिक को आयुर्वेद का ज्ञान होना चाहिए । गणेश बाबा को आयुर्वेदिक औषधियों का भी अच्छा ज्ञान था ।

पूरे तीन दिन के बाद मुझे उस में से बाहर निकाला गया ।

मेरी स्थिति खड़ा होने की भी नहीं थी

मैं बुरी तरह से लड़खड़ा रहा था.....

बिल्कुल नवजात शिशु के जैसी स्थिति में

उसे पकड़कर खड़ा भी कर दे तो

उसके पाँव साथ नहीं देते मुड़ जाते हैं

मैं भी वैसा ही महसूस कर रहा था ।

मुझे एक तरफ से गणेश बाबा ने और दूसरी तरफ से उनके चेले ने पकड़ा हुआ था ।

दोनों ने मिलकर मुझे झोपड़ी से बाहर निकाला और खुले में लकड़ी से बने हुए तख्त के ऊपर लिटा दिया

तख्त के नीचे कंडे बिछे हुए थे ।

उनके बीच में संभवतः औषधियां रही होंगी ।

उन्हे जला दिया गया ।

उसमें से हल्का-हल्का धुआँ उठता रहा

जो तख्त के बीच की दरारों से मेरी तरफ आता रहा ।

वह तख्त सामान्य तख्त जैसा नहीं था । उसमे लगभग दो दो इंच की पट्टियां लगी हुई थी और हर पट्टी के बाद लगभग एक इंच का गैप था ।

उसी गैप में से होता हुआ धुआँ मेरे शरीर पर लग रहा था

उस में अजीब सी गंध थी ।

लगभग एक घंटे मुझे वैसी ही स्थिति में रखा गया होगा । उसके बाद गणेश बाबा के दो चेले कपड़े का लट्ठा लेकर आए । मुझे ऐसा लगा जैसे पुरानी सूती साड़ी का बंडल जैसा कुछ था ।

उन्होंने उस कपड़े को मेरे ऊपर लपेट दिया । अब मैं किसी ममी की तरह दिखाई दे रहा था

लपेटने के बाद !

उन्होंने मुझे तख्त समेत उठाकर पेड़ के नीचे लिटा दिया ।

वह एक बरगद का पेड़ था ।

उस दिन शाम तक मैं उसी पेड़ के नीचे वैसा ही पड़ा रहा

शाम को मुझे खोला गया तो मेरे चमड़ी का रंग गहरे हरे रंग का हो गया था.....

बिल्कुल किसी मेंढक की तरह

लेकिन अब मैं खड़ा हो सकता था शरीर में थोड़ी ताकत वापस आ गई थी ।

माधुरी ने खिचड़ी बनाई थी, जो हम सब ने मिलकर खाई और उसके बाद कुछ ज्ञान चर्चा हुई और सब सो गए ...

मैं गहरी नींद में था

मुझे जटाशंकर दिखाई दिया !

जो दृश्य मैंने देखा

वह विश्वास करने के लायक नहीं था ।

लगभग दो ढाई फीट ऊंचा एक बैल था !

जिसके ऊपर रिया बैठी थी !

और उसके पीछे जटाशंकर बैठा हुआ था

दोनों हवा में उड़ रहे थे.....

किसी पतंग की तरह.....

लगभग एक दो मिनट तक यह दृश्य मेरी आंखों के सामने रहा होगा !

उसके बाद !!!

दोनों मुझसे दूर होते होते गायब हो गए

रात भर मुझे इसी प्रकार के अजीब अजीब स्वप्न आते रहे !

जिसमें जटाशंकर की लीलाएं दिखती रहीं ।

सुबह लगभग 8 बजे मेरी नींद खुली ... तब गणेश बाबा के घर पर कोई भी नहीं था ।

संभवतः सब लोग अपने-अपने काम में चले गए और मुझे वही आराम करने के लिए छोड़ दिया होगा ।

अब मैं अपने आपको काफी स्वस्थ महसूस कर रहा था

।

करीब करीब एक हफ्ते का समय लगा होगा उसके बाद मैं पूरा सामान्य हो पाया ।

धीरे धीरे मेरे चमड़े का रंग भी सामान्य हो गया और वापस मेरे शरीर में ताकत भी आ गई ।

वह हफ्ता गुजरने के बाद एक दिन सुबह गणेश बाबा और हम सब ने मिलकर गुरु पूजन और गुरु हवन संपन्न किया और उसके बाद गणेश बाबा ने हमें विदा किया ।

मैं और माधुरी वापस उसकी जिप्सी में बैठकर इरम के गांव की ओर चल पड़े

मैंने माधुरी को अपने सपने के बारे में बताया ! जिसमें जटाशंकर दिखाई दिया था । उसे सुनकर माधुरी ने कुछ भी नहीं कहा ... केवल उसके चेहरे पर एक रहस्यमय मुस्कान उभरी और गायब हो गई ।

इसका मतलब यह था कि वह कुछ भी नहीं बताने वाली थी.....

इससे जटाशंकर से मिलने की इच्छा और प्रबल हो गई ! यह जानने की प्रबल इच्छा, कि पिछले पंद्रह दिन में उसके साथ क्या-क्या हुआ ????

आधे घंटे में हम लोग वापस इरम के गांव पहुंच चुके थे । उसके घर में ताला लगा हुआ था ।

माधुरी ने बाजू वाले घर में पूछा ! उसने बताया - इरम की बुआ आ कर उसे ले गई है । उसे वापस लौटने में समय लगेगा

माधुरी ने कहा - जटाशंकर को रिया ले गई है । मुझे लगता है रिया आसानी से मानने वाली नहीं है ।

जटाशंकर को इरम के पास से ले जाना आसान था लेकिन रिया दूसरे किस्म की है

यह सुन कर मैं परेशान हो गया ।

जटाशंकर मेरे साथ आया था और उसे लिए बिना मैं वापस नहीं जा सकता था ।

माधुरी जैसी उच्च स्तर की साधिका जब इस बात की तस्दीक करें कि रिया से जटाशंकर को वापस लाना मुश्किल है तो मेरा परेशान होना स्वाभाविक था ।

मेरे चेहरे पर तनाव साफ साफ दिखाई देने लगा था ।

माधुरी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा - चिंता करने से कुछ नहीं होगा । चलो चल कर देखते हैं । कुछ ना कुछ मार्ग अवश्य निकलेगा ...

उसकी बात सुनकर मुझे थोड़ा अच्छा लगा, फिर हम दोनों साथ में रिया के घर की ओर बढ़ चले ।

रिया का घर गांव के दूसरे छोर में था । उसके बाद खेत चालू हो जाते थे । हम पूछते पूछते उसके घर तक पहुंचे । उसके घर में भी बाहर से ताला लगा हुआ था ।

अब क्या करें ?

हम दोनों सोच में पड़ गए ।

तभी पड़ोस के घर से एक महिला बाहर निकली । उसने हम दोनों को संशय भरी निगाहों से देखा और पूछा - तुम यहाँ क्यों खड़े हो ?

माधुरी ने नेपाली मे उसे बताया - रिया से मिलने आए हैं । लेकिन उसके घर में ताला लगा है ।

नेपाली भाषा सुनकर शायद उसका संशय थोड़ा सा दूर हुआ ।

उसने गहरी निगाहों से हम दोनों को देखा और अपनी उंगली का इशारा किया । दूर खेत के बीच में एक

शेड जैसी चीज नजर आ रही थी । जो लगभग आधा किलोमीटर दूर रही होगी ।

माधुरी ने मेरा हाथ पकड़ा और उस ओर चल पड़े । मेरी समझ में कोई बात आई नहीं थी इसलिए मैंने पूछा - हम कहां जा रहे हैं ?

माधुरी बोली - वह रिया का खेत है । वह वहां मिल सकती है । ऐसा उस महिला ने बताया है ।

हम दोनों खेत के पास पहुंचे ।

खेत के पास एक कुआं बना हुआ था ।

उसमें रहट लगा हुआ था ...

रहट हमारे कुएं से पानी निकालने का एक बड़ा प्राचीन तरीका है । इसमें बहुत सारे डब्बे एक बेल्ट नुमा संरचना में फंसा कर किसी कुएं में लगाई जाती है । उसे इस तरह से घुमाया जाता है कि डब्बे एक तरफ से खाली होकर उल्टे पानी के अंदर जाते हैं और जब ऊपर आते हैं तो भरकर सीधे हो जाते हैं ।

कुएं के बाहर वे भरे हुए डब्बे ऊपर आते हैं । डब्बे नीचे जाने के पहले गोलाकार घूमते हैं तो नीचे बने हुए टंकी में अपना पानी छोड़ देते हैं । ऐसा लगातार चलता

रहता है । एक के बाद एक डब्बा इस पोजीशन में आता है और उसका पानी टंकी में जाता रहता है । उस टंकी से नालीया जुड़ी होती हैं जिससे पानी बहता हुआ खेत के अलग अलग हिस्सों तक पहुंचता है ।

इस रहट को चलाने के लिए बैल का इस्तेमाल किया जाता है । सामने एक बैल रहट चला रहा था और उसके पीछे बने हुए स्टैंड में रिया बैठी हुई थी और बीच-बीच में डंडे से उसे मारती जाती थी ताकि वह बैल चलता रहे ।

आप समझ गए होंगे कि वह बैल कौन था ?
ठीक वैसे ही मैं भी समझ गया था और उसकी हालत पर मुझे तरस आ रहा था ।

एक करोड़पति !

जिसकी एक आवाज पर चार नौकर आकर खड़े हो जाते !

जिस के खेतों में दस दस हॉर्स पावर के पानी के पंप पानी खींच कर फेंकते रहते हैं

वह धन्ना सेठ.....

बैल बना हुआ !!

डंडे खाता हुआ !!!

कुएं के इर्द-गिर्द पानी निकालता घूम रहा था

इस पूरे नाटक की सूत्रधार थी

वह रहस्यमय युवती रिया !!!

मुझे जटाशंकर की दशा पर दुख भी हुआ और हंसी भी आई ।

लेकिन उसे निकाल कर ले जाना तो था.....

जब हम पास पहुंचे तो बैल बना हुआ जटाशंकर शायद हमें पहचान गया और जोर-जोर से जमीन पर अपने खुर मारने लगा । उसे ऐसा करता देख रिया ने उसे हाथ में पकड़े डंडे से कसकर 8-10 मार लगाई !

लेकिन वह शांत नहीं हुआ.....

यह देख कर लिया गुस्से से तमतमा गई !

वह रहट के जिस स्टैंड पर बैठी थी, वहां से आसमान में उठी और उड़ती हुई हमारे सामने आ खड़ी हुई । यह सब करने में उसे कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा । ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई चिड़िया हो । उसी

सहजता से वह आसमान में ऊपर उठकर हमारे सामने
आकर जमीन पर खड़ी हो गई ।

उसकी आंखें क्रोध से चमक रही थी ।

उसने माधुरी से कहा - तू यहाँ क्यों आई है ? यहां से
चली जा ।

माधुरी ने जटाशंकर की तरफ इशारा किया - उसे ले
जाना है ।

उसे वापस लौटाने की बात सुनते ही रिया गुस्से से
पागल हो गई और जोर-जोर से जमीन पर पैर पटकने
लगी

उधर बैल बना हुआ जटाशंकर अभी भी जमीन पर पैर
मार रहा था । मैंने उसे आवाज देकर शांत रहने के लिए
कहा ।

मैं बोला - जटाशंकर ! तू चिंता मत कर ! हम आ गए
हैं ! तुझे लेकर ही जाएंगे ।

इतना सुनते ही बैल बने हुए जटाशंकर ने अपना सर
हिलाया !

जैसे समझ गया हो ।

रिया की हरकतों से मैं समझ गया था कि वह आसानी से जटाशंकर को देने वाली नहीं है । माधुरी और रिया के बीच में गर्मागर्म बहस चल रही थी ।

रिया माधुरी को धमका रही थी ...

उसे नष्ट कर देने की धमकी दे रही थी

जहां रिया गुस्से में दिखाई दे रही थी वही माधुरी के चेहरे पर शिकन तक नहीं थी । वह बेहद सरल और सहज भाव में खड़ी हुई थी और रिया के सवालों का जवाब दे रही थी ।

रिया तमतमा उठी थी !

उसने कहा - मैं रिया हूं । जो मेरे हाथ में है , उसे मेरी मर्जी के बिना कोई हाथ भी नहीं लगा सकता ।

लेकर जाना तो बहुत दूर की बात है

इस प्रकार की बातें चलती रहीं

माधुरी ने उसे कई प्रकार से समझाने की कोशिश की लेकिन जब बात बनती हुई नजर नहीं आई ...तो आखिर में माधुरी ने कहा - मैं इसे यहां से लेकर ही जाऊंगी ।

इतना सुनते ही रिया ने माधुरी को चैलेंज कर दिया - अगर तुम मुझे हरा दो ! तो ! इसे ले जा सकती हो ।

माधुरी ने मेरी तरफ देखा ।

मैं कुछ कहने की स्थिति में नहीं था !

क्योंकि

ना तो मुझे माधुरी के ज्ञान की गहराई के विषय में पूरा पूरा पता था

ना ही रिया के तंत्र विद्या की ऊंचाई के विषय में पूरा पूरा ज्ञान था ।

इतना अवश्य जानता था कि दोनों महिलाएं तंत्र साधना के क्षेत्र में अच्छे स्तर पर हैं

जटाशंकर को वापस ले जाना है - इस बात पर मुझे कोई संदेश या संकोच नहीं था ।

उसके लिए अगर मुझे रिया के ऊपर तंत्र प्रयोग करना भी पड़ता तो मैं उसके लिए तैयार था ।

यहां पर मामला रिया और माधुरी के बीच का था
इसलिए मैंने बीच में कुछ भी नहीं कहा ...

माधुरी ने आंख बंद करके कुछ क्षण सोचा.....
उसके बाद

रिया के चैलेंज को स्वीकार कर लिया

अब मेरे सामने दो महिला तांत्रिकों का द्वंद युद्ध होने वाला था ।

आप लोगों ने देखा होगा कि जब किसी समस्या का इलाज नहीं हो पाता है तो आखिर में उसका इलाज मारपीट, युद्ध, जैसे शक्ति प्रदर्शन के माध्यम से ही निकलता है ।

उदाहरण के लिए - जब कोरोना के लिए लाकडाउन चालू हुआ तो कोई भी अपनी इच्छा से घर में रहने के लिए सहमत नहीं था । इसलिए पुलिस ने अपना शक्ति प्रदर्शन वाला फॉर्मूला चालू किया । उसके बाद से परिस्थितियां नियंत्रण में आ गई और लाकडाउन सही अर्थों में लागू हो गया ।

दो देशों के बीच होने वाले युद्ध कहिए या कानून और व्यवस्था की स्थिति

आखिर में यही कहावत लागू होती है कि

!! जिसकी लाठी !!.....!! उसकी भैंस !!

यह सुनने में बुद्धिजीवी या अत्यंत सात्विक लोगों को थोड़ा असहज लग सकता है, लेकिन वास्तविकता यही है कि अंततः जीत शक्ति की ही होती है

यह एक नग्न सत्य है

आप इसे स्वीकारें

या न स्वीकारें..... यह आपका विवेक है !

लेकिन यही नग्न सत्य है

सनातन धर्म यथार्थवादी धर्म है ।

वह भी इस सत्य को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है ।

इसलिए हमारे सभी प्रमुख देवी देवता शस्त्र धारी है.....

महादेव को देख लीजिये

माँ दुर्गा को देख लीजिये.....

भगवान राम को देख लीजिये

हनुमान जी गदाधारी हैं

यहाँ तक कि लीलाधर कृष्ण भगवान भी सुदर्शन चक्र जैसे अमोघ शस्त्र को धारण और प्रयोग करते हैं

वह तो न जाने कहाँ से हमने

" अहिंसा परमो धर्म "

जैसे नपुंसकतापूर्ण वाक्य को उस राष्ट्र की मूल
विचारधारा बना दिया , जिसको नाम देने वाला भरत
वह बालक था , जो बचपन में शेर के साथ खेला करता
था

इस विषय पर हमें सोचना जरूर चाहिए !

खैर

वह एक अलग विषय है

हम आगे बढ़ते हैं.....

तो

अब दो तांत्रिकों के बीच में शक्ति परीक्षण होने वाला
था

जैसा कि आप लोग जानते ही हैं कि वह गांव महिला
तांत्रिकों का गांव था ...

अब मान लीजिए कोई पहलवानों का गाँव हो ...

और

गांव के किसी प्रमुख पहलवान को किसी बाहरी
पहलवान ने चैलेंज कर दिया हो

तो.....

गांव का पहलवान कोशिश यही करेगा कि मुकाबला
सारे गांव के सामने हो

खासतौर से तब !

जब उसे पूरा विश्वास हो कि जीत उसी की होने वाली
है

रिया की स्थिति कुछ वैसी ही थी ।

क्रोध के आवेश में उससे माधुरी की ताकत मापने में
गलती हो चुकी थी ।

या

यह भी संभव है कि माधुरी के माया के आवरण को भेद
कर वह उसकी वास्तविकता समझ नहीं पाई थी.....

इस विषय पर मैंने पहले भी कहा था कि माधुरी उन
साधकों में से थी जिनकी ज्ञान और विद्या की गहराई
समझ पाना बहुत मुश्किल होता है । वह इतने सहज
सरल दिखाई देते हैं किसी को भी गलतफहमी हो
सकती है कि इसे कुछ भी नहीं आता

या फिर आता भी है

तो थोड़ा बहुत आता होगा

रिया भी उसे मामूली साधिका समझकर शक्ति प्रदर्शन और परीक्षण के लिए तैयार हो गई थी ।

रिया ने अपने हाथ को हवा में लहराया और एक तुरही जैसा वाद्य निकालकर बजाया।

वह संभवतः वह इस बात का संकेत था कि तांत्रिकों के बीच में शक्ति परीक्षण होने वाला है ।

उसके बजने के पाँच दस मिनट मे ही गांव की सारी महिलाएं खेत के पास एकत्रित हो गई ।

खेत में बने हुए शेड के सामने आंगन जैसा थोड़ा सा खुला एरिया था ।

सभी लोग वहां एकत्रित हो चुके थे और माधुरी और रिया एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े थे ।

वह नजारा कुछ कुछ ऐसा था जैसे डब्ल्यू डब्ल्यू ई चैंपियनशिप में दिखाई देता है ।

बीच में रिंग बना होता है

जिसमें दो पहलवान एक दूसरे के सामने खड़े होते हैं

उसके चारों तरफ दर्शकों की दीर्घा बनी होती है...
जिसमें ढेर सारे दर्शक मजा लेने के लिए....
और....

यह जानने के लिए कि कौन जीता ????

वहां इकट्ठे हो जाते हैं

कुछ-कुछ वैसी ही स्थिति वहां बन चुकी थी । उनमें से
एक बुजुर्ग महिला ने रिया को कुछ समझाने का प्रयास
किया ।

रिया ने उसे डपट दिया ...

उसके बाद किसी ने उसे समझाने की कोशिश नहीं की
।

आपने पुरुषों के समूह के बीच में अकेली महिला को
देखा होगा !

उस पर की जा रही छींटकशी को भी देखा होगा ।

लेकिन इसका उल्टा भी होता है

अगर कभी ऐसा हो जाए की महिलाओं के झुंड में कोई
पुरुष फस जाए !

तो महिलाएं भी उसकी रैगिंग लेने में कोई कमी नहीं
करती है ...

लगभग 50 महिलाओं के बीच उस समय में मैं अकेला
पुरुष था ।

हाँ !

एक पुरुष और था !

जटाशंकर !!

लेकिन वह तो बैल बना हुआ था ।

वे सारी की सारी मुझे देख कर हंस रही थी !

और ना जाने क्या-क्या जोक्स बना रही होंगी ।

जिनको मैं समझ नहीं पा रहा था ।

लेकिन उनकी हरकतों और मुद्राओं से यह स्पष्ट था कि
वह मेरा ही मजाक बना रही थी

उधर दोनों वीरांगनाएं यानि माधुरी और रिया आमने
सामने तन कर खड़ी हो चुकी थी

आर पार की लड़ाई के लिए तैयार

जटाशंकर की इच्छा का सम्मान करते हुए यहां लाने का
मेरा निर्णय गलत था.....

ऐसा मुझे लगने लगा !

यहां तो परिस्थितियां बहुत गंभीर हो चुकी थी ।

दोनों की भाव भंगिमा देखकर ऐसा लग रहा था कि इस पूरे प्रकरण के बाद कुछ ना कुछ अघटित घटने वाला है

रिया बोली - तुझे पहला अवसर देती हूं । तू वार कर । मेरा पहला वार भी तू नहीं झेल पाएगी.....

इतना कहते-कहते क्रोध और अहंकार से रिया की आंखें तमतमा गई ।

वहां मौजूद भीड़ ने तालियां बजाकर उसका उत्साहवर्धन किया

जिसे देख कर उसका जोश और बढ़ गया !

उसने हाथ के इशारे से माधुरी को वार करने के लिए कहा ...

मैं मन ही मन खुश हुआ !

किसी भी युद्ध में अगर आपके पास अच्छी प्रहार क्षमता हो तो पहले प्रहार का अवसर हमेशा सामने वाले के ऊपर भारी पड़ता है ।

जब तक वह संभलता है तब तक आपके पास दूसरे प्रहार का अवसर बन जाता है

मैं माधुरी के प्रहार की प्रतीक्षा कर रहा था ...

लेकिन मैं गलत था

माधुरी ने शांत लहजे में कहा - तुम किसी प्रकार की गलतफहमी में मत रहो ! अगर मैंने पहले प्रहार किया तो तुम्हें लगेगा कि मैंने अवसर नहीं दिया ।

गांव के सारे लोगों को भी अच्छा नहीं लगेगा की उनका प्रतिनिधि तांत्रिक बिना लड़े ही हार गया इसलिए तुम पहले प्रहार करो !

इस बात को सुनकर तमतमाई हुई रिया का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया !

उसने माधुरी से इस प्रकार के कटाक्ष की उम्मीद नहीं की थी !!

माधुरी की बात सुन भीड़ भी आश्चर्यचकित थी

लेकिन उन्होंने तालियां बजाकर इस बात का स्वागत किया ।

रिया ने जमीन से एक चुटकी धूल उठाई !

उसे अपनी हथेली पर रखा और उच्च स्वर में कुछ मंत्रों का उच्चारण किया !

गुस्से से लाल आंखों के साथ

जब वह क्रोध मुद्रा में

मंत्रों का उच्चारण कर रही थी

तो साक्षात महाकाली का स्वरूप लग रही थी ...

अगर दोनों की वेशभूषा को देखें तो उनमें कोई जोड़ ही नहीं था ।

रिया काले रंग का गाउन जैसा एक लबादा पहने हुए थी । उसके गले में कम से कम पांच अलग-अलग किस्म की मालाएं पड़ी हुई थी । जिसमें अजीब अजीब से मनके भी फंसे हुए थे । उसके दसों उंगलियों में 10 अंगूठियां थी , जिसमें अलग-अलग प्रकार के रत्न जड़े हुए थे ।

यानी.....

कुल मिलाकर.....

उसे देखते ही रहस्य और भय दोनों अपने आप पैदा हो जाता था.....

दूसरी ओर माधुरी थी !

हल्के आसमानी रंग की साड़ी उसके शरीर से करीने से लिपटी हुई थी !

बालों को गूँथकर जुड़ा बनाया हुआ था !

कानों में गोल झुमके लटक रहे थे !

एक हाथ मे सोने का कंगन था

दूसरे हाथ मे केसियो की एक डिजिटल घड़ी थी ।

कुल मिलाकर किसी मध्यम वर्ग के परिवार की पढ़ी लिखी महिला जैसी दिखाई दे रही थी ।

तांत्रिकों वाले कोई लक्षण न तो उसके चेहरे पर दिख रहे थे और ना ही उसके पहनावे में

रिया ने जैसे ही अपने हथेली पर धूल रखकर मंत्र जाप प्रारंभ किया

कपालिनी की आवाज मेरे कानों में गूँजी - धूल बाण चला रही है

यह तंत्र का एक अजीब सा प्रयोग है । जिसमें धूल के ऊपर मंत्र को अभिमंत्रित करके उस धूल को जिस व्यक्ति के ऊपर छिड़क दिया जाता है, या जिसकी और उड़ा दिया जाता है, वह संबंधित मंत्र के प्रभाव में आ जाता है

यह बहुत उग्र किस्म की षटकर्म की साधनाओं में नहीं
गिना जाता

ऐसा मैं सोचता था

लेकिन जब रिया उसे प्रयोग कर रही है तो अवश्य वह
कोई प्रभावशाली शक्ति का प्रयोग कर रही होगी - मेरे
दिमाग में अब यह विचार आया ।

और....

तभी

कपालिनी की आवाज मेरे कानों में गूंजी - मारण प्रयोग
कर रही है

धूल बाण से मारण प्रयोग !

मैं पहली बार सुन रहा था !

तंत्र और तांत्रिकों का संसार रहस्यमय और विराट है ...

जिसमें कुछ भी संभव है

मेरे मन में पाशुपतास्त्र मंत्र के जाप का विचार
आया

जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया

माधुरी की आंखें मेरी आंखों से टकराई !

उसने मुस्कुराते हुए चेहरे से मेरी ओर आंखों का इशारा किया - मैं संभाल लूंगी

बात मेरी समझ में आ गई ।
मैं शांत हो गया

रिया का मंत्र जाप कुछ तीन चार मिनट चला होगा ।
उसके बाद उसने अपनी हथेली को मुंह के सामने किया
और धूल पर एक फूंक मारी

आप भी समझ सकते हैं कि जब धूल पर फूंक मारी
जाएगी तो धूल के कण हवा में उड़ेंगे.....

मैं भी वैसी ही किसी घटना की प्रतीक्षा कर रहा था
लेकिन.....

वह तो रिया थी

पशुपतिनाथ की बोक्सी

जो हाथ के इशारे से इंसान को जानवर बना सकती
थी

मेरी आंखें फटी की फटी रह गई
जब मैंने देखा !

कि !

धूल के कण उसकी हथेली से उड़ते ही !

मोटी मोटी कीलों में तब्दील हो गए....

और तेजी से माधुरी की ओर किसी मिसाइल की तरह बढ़ने लगे.....

मैं यह सोचकर काँप गया कि अगर यह सारी कीलें माधुरी के शरीर में लग जाएंगी

तो उसका क्या होगा ?

उसका तो सारा शरीर ही छलनी हो जाएगा

माधुरी अपने स्थान पर शांत मुद्रा में खड़ी थी !

वह !

अचानक !

बिजली की तेजी से अपनी जगह से हिली । उसने अपने दोनों हाथों को अपने सामने एक विशेष मुद्रा में हिलाया ।

जैसे...

कुम्हार किसी वस्तु को आकार देता है !

या....

मिस्त्री दीवाल के ऊपर प्लास्टर लगाता है

मुझे कुछ-कुछ वैसा ही महसूस हुआ

तब तक सारी कीलें माधुरी के पास तक आ चुकी थी ।
उसने हाथ से जो इशारा किया था उसकी वजह से वहां
पर संभवतः कोई अदृश्य दीवार खड़ी हो गई थी
सारी की सारी कीलें उस अदृश्य दीवार से टकराकर
जमीन पर गिर पड़ी थी !

ऐसा लग रहा था ...

जैसे

कोई मोटी लोहे की दीवार हो !

जिससे टकराकर !

वे कीलें जमीन पर गिर पड़ी हो

माधुरी भी उछलकर पीछे की तरफ गिर गयी

जैसे किसी ने उसे धक्का देकर उछाल दिया ...

अगले ही क्षण वह जमीन से उठकर वापस अपने स्थान
पर आकर खड़ी हो गयी ...

जमीन पर गिरने के कुछ ही सेकंड में वे सारी कीलें वहां
से लुप्त हो गईं ।

रिया आश्चर्यचकित होकर इस घटना को देख रही थी ...

उसे शायद बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि सामान्य सी दिख रही माधुरी उसके इस प्रहार को झेल जाएगी

उपस्थित दर्शक दीर्घा की बोक्सियों ने माधुरी की क्षमता को देखकर तालियां बजाई ।

उन्हें तालियां बजाते देखकर रिया का दिमाग और खराब हो गया !

वह जोर से चीखी !

उसकी चीख सुनकर सभी ने तालियां बजाना बंद कर दिया !!

वहां पिन ड्रॉप साइलेंस हो गया !!!

ऐसा लग ही नहीं रहा था कि 50 महिलाएं वहां पर खड़ी है.....

वह स्थिति यह बताने के लिए पर्याप्त थी कि उनके बीच में रिया की इमेज क्या रही होगी ?

संभवत वह उन सब में सर्वश्रेष्ठ थी ...

उनको इस बात का एहसास भी कराती रही होगी

इसलिए उसकी हार पर उन लोगों के चेहरे पर भी प्रसन्नता के भाव दिखाई दे रहे थे.....

मैं मन ही मन सोच रहा था कि यह क्या बेवकूफी है

अब तो माधुरी को वार कर देना चाहिए था ।

पता नहीं अब रिया अपने तरकश से कौन से बाण बाहर निकालेगी ????

रिया ने अपने लबादे की जेब में हाथ डाला और काला बजरबटू जैसा कुछ बाहर निकाला । उसके बाद दूसरी जेब में हाथ डाला और एक रुद्राक्ष का दाना बाहर निकाला । उन दोनों को उसने अपने सामने हवा में उछाल दिया

आश्चर्य ...

उसके सामने दोनों हवा में लटक गए

मंत्र जाप प्रारंभ हुआ

उसके साथ-साथ उन दोनों चीजों के चारों तरफ प्रकाश का आवरण दिखने लगा

ठीक वैसा ही जैसा रामानंद सागर जी के रामायण सीरियल में तीरों के निकलने के बाद उनकी नोक के आजू-बाजू में दिखाई देता था

कपालिनी कान में फुसफुसाई - श्मशान भैरव का प्रयोग कर रही है

अब मुझे क्रोध आने लगा था !

मुझे लगा कि यह महिला कर क्या रही है ? इतने सामान्य से प्रकरण में श्मशान भैरव जैसी संहारक शक्ति का प्रयोग ?

लेकिन !

माधुरी के चेहरे पर शिकन तक नहीं दिखाई दे रही थी !

वह उसी प्रकार सामान्य मुद्रा में खड़ी हुई थी !

उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान बिखरी हुई थी

जितनी आसानी से मैं इसे लिख रहा हूं, उतना ही कठिन होता है इसे व्यवहार में करना

जब आप अत्यंत क्रोध की अवस्था में हो तो कभी इसे आजमा कर देखिए

अगर गृहस्थ हैं तो पति के साथ लड़ाई के दौरान क्रोधित हो तो आजमा कर देखिए

और अगर पत्नी के साथ लड़ाई हो रही हो तो एक बार आजमा कर देखिए.....

यह है बड़ा मुश्किल !!!

लेकिन सामने वाले का पूरा मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है

ठीक यही रिया के साथ भी हो रहा था ।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह औरत मुस्कुरा क्यों रही है ?

इसके चेहरे पर भय के भाव क्यों नहीं है ?

इसके चेहरे पर क्रोध के भाव क्यों नहीं है ?

यह मुझे अवसर क्यों दे रही है ?

इस सबके चलते वह बुरी तरह विचलित हो चुकी थी ।

अब वह एक ऐसे प्रयोग को अंजाम देने जा रही थी

जो बेहद असाध्य परिस्थितियों में ही किया जाना

चाहिए

खैर.....

वे दोनों गुटिकाएँ प्रकाशित हो रही थी ...

रिया की आंखों में खून तैर रहा था

खून वाकई तैर रहा था !

आंखें बुरी तरह से लाल हो चुकी थी !

ऐसा लग रहा था !

जैसे !

शरीर का सारा खून आंखों की ओर दौड़ पड़ा हो

मंत्र जाप करते करते उसकी आंखों की कोर से खून की
बूंदें निकलने लगी

उसने अपनी जेब से चाकू निकाला

अपने बाएं हाथ की अनामिका यानि रिंग फिंगर

अंगुली को चीरा और उसमें से एक एक बूंद खून दोनों

गुटिकाओं के ऊपर चढ़ा दिया

जैसे ही खून की बूंदें उन गुटिकाओं पर गिरी

दोनों गुटिकाएं गोल गोल चक्कर काटती हुई बड़ी तेजी

के साथ माधुरी की तरफ लपकी

तब तक माधुरी

शमशान भैरवी का आह्वान कर चुकी थी

उसका बिंब सामने प्रत्यक्ष हो चुका था !

दोनों गुटिकाएं उस बिंब के सामने पहुंचते ही लुप्त हो

गई ,

ठीक वैसे ही !

जैसे !

गर्म तवे पर पडते ही

पानी की बूंदे लुप्त हो जाती है ।

उनके लुप्त होते ही शमशान भैरवी का बिंब भी लुप्त हो गया ...

मुझे यह इसलिए दिखाई दे रहा था क्योंकि मैंने भी शमशान भैरवी की साधना की हुई थी !

अन्य परिस्थितियों में संबंधित देवी शक्तियां दिखाई नहीं देती हैं ।

केवल भौतिक क्रियाएं ही दिखाई देती हैं

इस प्रयास के निष्फल होते ही रिया के चेहरे पर विवशता के भाव दिखाई देने लगे थे !

उसे समझ में आ गया था कि जो सामने खड़ा है !

वह उससे ज्यादा सीखा पढ़ा है

असाध्य और दुरुह माने जाने वाले प्रयोगों को जितनी सहजता से उसने निष्फल कर दिया था !

वह उसकी साधनात्मक ऊंचाई को बताने के लिए पर्याप्त था ।

जैसे !

गर्म तवे पर पडते ही

पानी की बूंदे लुप्त हो जाती है ।

उनके लुप्त होते ही शमशान भैरवी का बिंब भी लुप्त हो गया ...

मुझे यह इसलिए दिखाई दे रहा था क्योंकि मैंने भी शमशान भैरवी की साधना की हुई थी !

अन्य परिस्थितियों में संबंधित देवी शक्तियां दिखाई नहीं देती हैं ।

केवल भौतिक क्रियाएं ही दिखाई देती हैं

इस प्रयास के निष्फल होते ही रिया के चेहरे पर विवशता के भाव दिखाई देने लगे थे !

उसे समझ में आ गया था कि जो सामने खड़ा है !

वह उससे ज्यादा सीखा पढ़ा है

असाध्य और दुरुह माने जाने वाले प्रयोगों को जितनी सहजता से उसने निष्फल कर दिया था !

वह उसकी साधनात्मक ऊंचाई को बताने के लिए पर्याप्त था ।

लेकिन.....

अभी पिक्चर बाकी थी....

माधुरी ने कहा- मैंने तुमसे कोई ऐसी चीज नहीं मांगी थी जो तुम्हारी खुद की हो । मेरी मांग जायज थी ।

तुमने जिस प्रकार से तंत्र विद्या का दुरुपयोग किया है , उसके लिए तुम्हें दंडित किया जाना अनिवार्य है ।

ताकि तुम समझ सको कि साधना और सिद्धियां अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए और दूसरों को प्रताड़ित करने के लिए नहीं होती

रिया के चेहरे पर डर साफ दिखाई दे रहा था ।

मैंने सोचा कि अब माधुरी कोई विशेष तांत्रिक प्रक्रिया संपन्न करेगी

और उसके बाद प्रहार होगा

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ।

माधुरी की देह अचानक रोशनी से नहा उठी । उसका आभामंडल जगमगा उठा ।

मैं उसका लाल आभामंडल देख सकता था.....

ऐसा लग रहा था जैसे कोई साक्षात देवी प्रकट हो गई हो

माधुरी ने अपना दाया हाथ हवा में उठाया ...

ऐसा लगा जैसे शून्य से कोई चीज प्राप्त की और उसे रिया की तरफ उछाल दिया ।

रिया धड़ाम से जमीन पर गिर गई ।

उसके हाथ-पैर फड़फड़ाने लगे ।

उसकी ऐसी हालत देखकर वहां खड़ी सारी बोक़्सियां क्रोधित हो गई ।

सारी की सारी अचानक आक्रामक हो गई ।

ऐसा लगा जैसे वे सब मिलकर माधुरी पर एक साथ तंत्र प्रयोग करने के लिए तैयार हो गयी हों

उन्होंने मंत्र जाप करते हुए माधुरी की ओर बढ़ना चालू कर दिया ।

ऐसा लग रहा था

जैसे अभिमन्यु चक्रव्युह में फंस गया हो

उधर माधुरी के चेहरे पर फिर से वही रहस्यमय मुस्कान उभरी ।

जैसे सुरक्षा चक्र बनता है ।

मेरी समझ में आ गया कि माधुरी ने अब उन सबको सबक सिखाने का मन बना लिया है ...

आप यह जान लें कि जैसे सुरक्षा चक्र में कोई बाहरी शक्तियां प्रवेश नहीं कर सकती , वैसे ही सुरक्षा चक्र के घेरे से कोई बाहर भी नहीं निकल सकता है । जब तक कि वह सुरक्षा चक्र बनाने वाले से साधनात्मक रूप से ज्यादा शक्तिशाली ना हो या फिर उसकी इजाजत हो

बहुत सारी बोक्सियों ने आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन सारी की सारी उस सुरक्षा चक्र से टकराकर वापस आ गई ।

घेरे के पास पहुंचते ही उनको जोर की मार पड़ती और वे वापस आंगन में गिर पड़ती ...

पूरे एक घंटे तक वे बोक्सियाँ या मुर्गियाँ प्रयास करती रहीं

लेकिन निष्फल रहीं

हर बार मार पड़ती और वे वापस गिर जातीं ।

अब सारी मुर्गियाँ सिमट कर एक कोने में खड़ी थीं माधुरी ने अब जटाशंकर की ओर देखा और अपने हाथों का इशारा किया ।

बैल बना हुआ जटाशंकर !

अब एक भेड़िये में बदल चुका था

उसकी आँखों में देख माधुरी ने कुछ संकेत किया , उसके बाद उसने मुर्गियों को आधे घंटे तक दौड़ा दौड़ा कर बेदम कर दिया.....

और आखिर में मुर्गी बनी रिया को लेकर माधुरी के पास आ गया ।

किसी ने सच ही कहा है :-

कभी नाव पानी में और कभी पानी नाव में

जो रिया जटाशंकर को बैल बनाकर जोत रही थी वही अब निरीह मुर्गी बनी जटाशंकर के जबड़े में दबी पड़ी थी ...

माधुरी ने फिर से अपने हाथों का इशारा किया ।

सारी मुर्गियाँ , रिया और साथ ही जटाशंकर भी वापस अपने मूल स्वरूप में आ गया

अब सारी मुर्गियाँ सिमट कर एक कोने में खड़ी थीं माधुरी ने अब जटाशंकर की ओर देखा और अपने हाथों का इशारा किया ।

बैल बना हुआ जटाशंकर !

अब एक भेड़िये में बदल चुका था

उसकी आँखों में देख माधुरी ने कुछ संकेत किया , उसके बाद उसने मुर्गियों को आधे घंटे तक दौड़ा दौड़ा कर बेदम कर दिया.....

और आखिर में मुर्गी बनी रिया को लेकर माधुरी के पास आ गया ।

किसी ने सच ही कहा है :-

कभी नाव पानी में और कभी पानी नाव में

जो रिया जटाशंकर को बैल बनाकर जोत रही थी वही अब निरीह मुर्गी बनी जटाशंकर के जबड़े में दबी पड़ी थी ...

माधुरी ने फिर से अपने हाथों का इशारा किया ।

सारी मुर्गियाँ , रिया और साथ ही जटाशंकर भी वापस अपने मूल स्वरूप में आ गया

रिया सर झुका कर जमीन पर बैठी हुई थी

माधुरी ने उसे उठाकर खड़ा किया ।

उसकी पीठ पर हाथ फेरा और कहा - तुम बहुत उच्च कोटि की साधिका हो ! लेकिन आत्म नियंत्रण जरूरी है ।

रिया किसी पराजित योद्धा की तरह सर झुकाये खड़ी थी

उधर जटाशंकर मेरी तरफ दौड़ा !

मैंने उसे गले लगा लिया !

वह बिलख बिलख कर रोने लगा

उसने आगे बढ़कर माधुरी के चरण छू लिए ।

वह माधुरी के साधनात्मक बल से पूरी तरह प्रभावित हो चुका था ।

वह जानता था कि मैं साधक हूँ ! मगर मैंने कभी भी

उसके सामने किसी प्रकार की साधना या साधना

संबंधित बातों का जिक्र नहीं किया था । उसने भी कभी

दिलचस्पी नहीं दिखाई और मैंने भी कभी उसे सिखाने

की कोशिश नहीं की ।

लंगोटिया दोस्त हमेशा लंगोटिया ही रहना चाहते हैं चाहे आप कुछ भी बन जाए । अगर आपके पास ऐसा कोई दोस्त हो जो बचपन से आपका दोस्त हो तो उसका मजा ही कुछ और है ।
खैर....

रिया ने भी माधुरी के चरण स्पर्श किए ...
उसकी देखा देखी वहां खड़े सभी लोगों ने माधुरी को चरण स्पर्श करके अपना सम्मान व्यक्त किया । उसके बाद हम तीनों वापस काठमांडू की ओर निकल पड़े
हां !
जाने से पहले हम लोग इरम के घर से अपना सामान उठाना नहीं भूले ।
इरम तब भी नहीं लौटी थी ।
शायद उसका काम पूरा नहीं हुआ था ।
रास्ते में जटाशंकर ने माधुरी से उसकी साधना के विषय में बहुत सारी बातें जाननी चाही लेकिन उसे जवाब में सिर्फ उसकी रहस्यमय मुस्कुराहट ही मिली ।
मैं जानता था कि वह पत्थर से सर टकरा रहा है । लेकिन उसके प्रयास में मैं बाधा नहीं बनना चाहता था ।

अंत में उसने कहा - मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ,
और साधना सीखना चाहता हूँ ।

मैंने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा ?

जटाशंकर और साधना ?

साधनाओं का क्षेत्र प्रकृति के हस्तक्षेप का क्षेत्र है ।

प्रकृति अर्थात् महाशक्ति - महामाया और वह अपने
साधक चुन लेती है ...

किसे कब और कहां चुनेगी ?

इसे कोई भी नहीं जान सकता । अगर ऐसा नहीं होता
तो आईआईटी पास करने वाला बालक इस्कॉन में
प्रवचन नहीं दे रहा होता

शिष्य बनाने की बात सुनकर माधुरी ने गाड़ी साइड
करके रोक दी ।

गुरु गंभीर स्वर में उसने कहा - जटाशंकर साधनाओं का
संसार बहुत मोहक है ।

तुमने केवल सिद्धियों का लावण्य देखा है ।

प्रयोगों की प्रखरता देखी है ।

उसके पीछे की तपस्या !

उसके पीछे का त्याग !

उस क्षण में मैं माधुरी के व्यक्तित्व में उस गुरुत्व को महसूस कर सकता था

उसकी बड़ी बड़ी बातें सुनकर जटाशंकर हक्का-बक्का उसे देखता हुआ बैठा था ।

माधुरी ने कहा - तुम्हारे पास तो अघोरा नंद है । उससे सीखो । मेरा कोई पक्का ठिकाना नहीं है । शुरू में तुम्हें ऐसा कोई चाहिए जो तुम्हारी कदम कदम पर मदद कर सके । आगे फिर जरूरत होगी तो तुम मेरे पास आना ...

जटाशंकर ने मेरी तरफ ऐसे देखा ...

जैसे किसी एलियन को देख रहा हो ।

दरअसल उसे माधुरी की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था कि मुझे भी कुछ आता है

खैर ... फिर हम आगे बढ़े !

अब वापस भारत आना था । हम लोग सीधे बस स्टैंड पहुंचे । वहां रात की बस में जगह मिली । हमने बुकिंग की और फिर होटल में आ गए ।

माधुरी हमें होटल में छोड़कर न जाने कहां चली गई ।

उड़ते पंछी और रमते जोगी का कोई ठिकाना नहीं होता ।

जटाशंकर के लिए मैंने उसकी जरूरत की चीजों की व्यवस्था की ...

नहा धोकर वह तैयार हुआ और उसके बाद जैसा कि आप लोग भी जानना चाहते होंगे मैंने उसके अनुभव जानने की कोशिश की

कायदे से तो उसे आराम करने देना चाहिए था ...

लेकिन मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाया ।

वैसे जटाशंकर भी अपनी कहानी सुनाने के लिए कम उत्सुक नहीं था ।

उसने अपनी कहानी शुरू की

जटाशंकर बोला - मुझे इरम ने बिल्ला बना दिया

था ! तुम लोग उसके बाद निकल कर चले गए थे ।

मैं पेट भर जाने के बाद आराम से पसरा हुआ था ।

अचानक दरवाजे पर खटखटाहट हुई । मैं वहीं पड़ा रहा

और जब दरवाजा खुला तो एक बुजुर्ग महिला और रिया

वहां खड़े थे । बुजुर्ग महिला संभव है कि इरम की कोई

रिश्तेदार थी । उन दोनों के बीच बातचीत हुई और उसके बाद इरम बाहर चली गई ।

मैं आराम से लेटा हुआ था । थोड़ी देर बाद रिया अंदर आई और फिर अंदर वाले कमरे में चली गयी । फिर मैं भी सो गया ।

शाम को जब मेरी नींद खुली तब मैं अपने इंसानी रूप में आ चुका था ।

मैंने इधर उधर देखा लेकिन कोई भी दिखाई नहीं दिया ।

उसके बाद उठकर मैं अंदर के कमरे की तरफ गया ।

वहाँ का दृश्य सबसे मादक कल्पना से भी परे था

एक अत्यंत रूपवान , मादक यौवन की स्वामिनी युवती पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में बिस्तर पर आमंत्रण देती हुई लेटी थी

मैं वहीं खड़ा अवाक उसको देखता रह गया ...

जब थोड़ी देर बाद मैं थोड़ा संयत हुआ तो वहाँ से बाहर निकलने के लिए प्रयास किया

मुझे लगा मैं गलत समय पर अंदर आ गया ।

लेकिन मैं बाहर नहीं निकल पाया !

मेरे पांव जैसे जमीन पर चिपक गए थे !

मैंने बहुत कोशिश की !

मैं पीछे नहीं हट पा रहा था

मैंने पैर आगे बढ़ाया वह बड़ी आसानी से आगे बढ़ गया

।

जैसे ही मेरा पैर आगे बढ़ा मेरी आंखें रिया की आंखों से टकराई !

उसके बाद मैं अपने आप उसकी तरफ बढ़ता चला गया !

मुझे पता भी नहीं चला कि कब मैं उसके आगोश में चला गया.....

उसके बाद रात भर जो कुछ चला वह वास्तव में अद्भुत था !

एक स्त्री से पुरुष को जो सुख मिल सकता है उसकी पराकाष्ठा थी रिया । मैंने अपने जीवन में कभी भी वैसा अनुभव नहीं किया था !

मैं सोच भी नहीं सकता था कि काम इतना लंबा और इतना सुखद भी हो सकता है !

एक तरह से मैं उसका मुरीद हो गया !

उसका गुलाम हो गया !!

सुबह उसने वापस मुझे बिल्ला बना दिया ।

मुझे कोई अफसोस नहीं हुआ !

क्योंकि मैं उम्मीद कर रहा था कि अगली रात भी वैसी ही होगी !

वैसा ही हुआ भी

आने वाली तीन चार रातों तक रात भर यही सब चलता

और दिन भर मैं आराम से सोता

जिंदगी बड़े मजे में कट रही थी !

सच कहूँ तो इस बीच में तुम्हारा ख्याल भी मेरे मन में नहीं आया ।

एक रात अचानक मेरे मन में तुम्हारा ख्याल आया !

मैंने उससे पूछा - अघोराणंद कहाँ होगा ?

उसने कहा - तुम देखना चाहते हो ?

मैंने कहा - जरूर !

तभी !

उसके हाथ हिलाते ही एक छोटा सा बैल वहां पर प्रकट हो गया ।

वह उसके ऊपर चढ़कर बैठ गई और मुझे भी पीछे बैठने के लिए कहा । उसके बाद घने जंगलों के ऊपर से उड़ता हुआ वह बैल मुझे तुम्हारी झोपड़ी तक ले गया । वहां पर मैंने तुम्हें देखा । तुम आराम से सो रहे थे ।

मैंने मन ही मन सोचा - तभी उस दिन मुझे यह दोनों बैल पर दिखाई दिए थे

जटशंकर आगे बोला - उसके बाद हम वापस लौट आए

आते समय रिया ने मुझे अपना एक और चमत्कार दिखाया ।

वह मुझे अपने साथ कामाख्या मंदिर तक ले गई । वहां मेला लगा हुआ था ।

लगभग चार-पांच किलोमीटर लंबी लाइन थी ।

मंदिर के प्रांगण में पीछे की तरफ बने हुए एक कमरे के अंदर हम प्रकट हुए । वहां एक दरवाजा बना हुआ था

। उस दरवाजे से होते हुए जब हम लोग आगे बढ़े तो सीधे मंदिर के गर्भ गृह के बगल में निकले ।

वहां एक पुजारी खड़ा था !

जो रिया को पहचानता था ।

वह हमें अपने साथ दर्शन के लिए ले गया । वहां हमें उस दिव्य शक्ति पीठ में महामाया के पिंड के दर्शन हुए जो जल में डूबा हुआ था ।

बाहर निकलने के बाद उस पुजारी ने लाल रंग के वस्त्र का एक टुकड़ा भी दिया ।

मैंने रिया को पूछा - यह क्या है ?

उसने बताया - यह माता जी के रजवस्त्र हैं । यदि इसका एक धागा भी किसी के पास रहे तो उसके ऊपर तंत्र प्रयोग काम नहीं करता है ।

मैंने उसे प्रश्नवाहक निगाहों से देखा । उसने मुझे विस्तार से बताया ।

वह बोली - भगवान शिव ने जब महामाया सती के योगाग्नि में जलने की बात सुनी तो वह क्रोधित और विचलित हो गए ।

दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर दिया

उसके बाद उन्होंने सती की मृत देह को अपने कंधे पर उठा लिया था । अत्यंत क्रोधित अवस्था में वे उस देह को कंधे पर लेकर भटकने लगे । इससे ब्रह्मांड में संतुलन बिगड़ने का खतरा पैदा हो गया ।

भगवान शिव के उस भयंकर रुद्र रूप का सामना करने की क्षमता किसी में नहीं थी । इसलिए सभी ने भगवान विष्णु से इस कार्य के लिए प्रार्थना की । उस दौरान भगवान विष्णु ने उन्हें शांत करने के लिए उस दिव्य देह के सुदर्शन चक्र से 51 टुकड़े कर दिए । वह टुकड़े जहां जहां पर गिरे । वहां पर एक शक्तिपीठ की स्थापना की गई ।

इसमें कामाख्या का शक्तिपीठ सबसे प्रमुख है क्योंकि यहां पर देवी सती का गुप्त भाग गिरा था । जीवन का मूल वही है क्योंकि जीवन वहीं से निकलता है । इसलिए कामाख्या शक्तिपीठ को तंत्र साधनाओं का भी मूल माना जाता है ।

यहाँ जून के महीने में देवी को तीन दिन के लिए रजस्वला मानकर मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं ।

इस दौरान इस क्षेत्र में रहने वाले लोग भी खाने पीने के लिए संयम और नियम का पालन करते हैं । एक प्रकार से पूरा कामाख्या क्षेत्र उस समय उपवास जैसी स्थिति में रहता है ।

उस समय योनि पिंड से रज का प्रवाह होता है और उसे कपड़े से ढक दिया जाता है । जब रजस्वला काल समाप्त हो जाता है तब उस कपड़े को भक्तों को दे दिया जाता है !

वही वस्त्र है यह !

सौभाग्य से प्राप्त होता है यह !

बड़े-बड़े नेताओं से लेकर उद्योगपति तक इसे प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं !

यह सौभाग्य का प्रतीक है ।

उसके बाद वह मुझे एक गुप्त मंदिर में भी ले गई । वहां उसने एक काले कबूतर की बलि दी और उसके बाद हम वापस लौट आए.....

वहाँ से आने के बाद भी हमारा रात का वही क्रम जारी रहा ।

मुझे ऐसा आभास हो रहा था कि मैं स्वर्ग लोक में आ गया हूँ

फिर एक दिन सुबह उसने मुझे बैल बना दिया

मुझे कोई आपत्ति नहीं थी

क्योंकि रात वाला क्रम जारी था

लेकिन अभी पिछले तीन दिन से इसने मुझे इस रहट में जोत रखा है । दिन भर मुझे पानी निकालना पड़ता है ।

रात होते ही उसकी सेवा में लगना पड़ता है ।

मैंने कहा - तो इंकार कर देते !

जटाशंकर गुप्ते से बोला - मेरे इंकार का तो प्रश्न ही नहीं उठता था । उसके संकेत करते ही मेरा शरीर पूरी तरह से तैयार हो जाता । उसके बाद मैं मजबूर हो जाता था और पूरी रात वैसी ही गुजरती थी । सुबह होते-होते ऐसा लगता जैसे शरीर का पूरा रक्त ही निचुड़ गया हो ...

रहट में दिन भर चलना होता है । न चलो तो डंडे की मार ! मुझे तो ऐसा लग रहा था कि उसी रहट में मेरी मौत हो जाएगी

तभी तुम लोग दिखाई दिए ! और मेरी जान में जान आई ।

गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी



इस धरा पर 21 अप्रेल 1935 को अवतरित हुए गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी तंत्र तथा आयुर्वेद के ख्याति प्राप्त विद्वान थे । जिनका देहांत 3 जुलाई 1998 को हो गया ।

उन्होंने विभिन्न विषयों पर लगभग डेढ़ सौ से ज्यादा किताबें लिखी हैं । यह विषय ज्योतिष और हस्तरेखा शास्त्र से लेकर तंत्र और पारद विद्या तक विस्तृत है । प्रख्यात फिल्म रजनीगंधा की पटकथा भी उन्होंने ही लिखी थी ।

जब वे किसी विषय पर बोलते थे तो उस पर लगातार घंटों बोल लेते थे । ऐसा लगता था ...

जैसे उनके कंठ में साक्षात भगवती सरस्वती विराजमान हो ।

मंत्रों का और साधनाओं का उनके पास अकूत भंडार था ।

जब वे तांत्रिक प्रयोग कराते थे तो 30-32 पेज के मंत्र जिनको बोलने में लगभग आधा से एक घंटे का समय लगता है वह बिना कोई कागज देखें बोल लेते थे ।
चारों वेद उनको कंठस्थ थे

उनके कई प्रयोगों के ऑडियो और वीडियो कैसेट आज भी उपलब्ध हैं ।

जिन्हें सुनकर आप लाभ उठा सकते हैं । इसके लिए आप चाहे तो मेरे आदरणीय गुरु भाई श्री विरल पटेल को उनके इस नंबर { 9429400214 } पर व्हाट्सएप करके या मिस काल करके , उनके व्हाट्सएप ग्रुप में शामिल हो सकते हैं और नित्य अलग-अलग मंत्र और प्रयोगों के ऑडियो और वीडियो अपने व्हाट्सएप पर प्राप्त कर सकते हैं

भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर भूतपूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा तक उनके कई प्रतिष्ठित समर्थक रहे हैं ।

विश्व का सर्वप्रथम तांत्रिक उपन्यास "शमशान भैरवी" उन्होंने ही लिखा था ।

वे मेरे परम श्रद्धेय गुरुदेव हैं । सन 1992 में मुझे उनसे दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला और मैं साधना के क्षेत्र में थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त कर पाया ।

मुझसे मेरे कई पाठकों ने मेरी प्रेरणा के विषय में पूछा है ।

इस विषय में मैं बताना चाहूँगा कि मैंने कई प्रकार के तंत्र ग्रंथों का अध्ययन किया है ! कई कथाएँ भी पढ़ी हैं ! लेकिन गुरुदेव के द्वारा लिखे उपन्यास "शमशान भैरवी" ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया ...

और आप ऐसा भी कह सकते हैं कि वही मेरी प्रेरणा है.....

सबसे अंत में मैं यह जरूर कहना चाहूँगा कि जिस विषय पर मैं लिख रहा हूँ वह जटिल असाध्य और दुरुह है..... पूज्य पाद गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी के आशीर्वाद और महामाया की कृपा से ही मैं इन शब्द पुष्पों को सहेज पा रहा हूँ

यूं कह लीजिए कि मैं केवल एक निमित्त हूं.....

मूल चिंतन, ज्ञान और प्रवाह सब कुछ उन्हीं का है.....

जो भी आपको इसमे सत्यम शिवम सुंदरम लगे ! वह

उनकी कृपा है

और जो भी न्यूनता लगे ! वह मेरी है

गुरु चरण रज

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
 2. अघोरानंद की अप्सरा ।
 3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
 4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
 5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
 6. अघोरानंद और छाया की माया ।
 7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
 8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
 9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
 10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
 11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
 12. परेतिन की शादी ।
-

[i] पुष्पदेहा के विषय में जानकारी के लिए आप मेरी पूर्व रचना “अघोराणंद की अप्सरा” पढ़ सकते हैं

[i] तेलिया कंद एक रहस्यमय तांत्रिक पौधा है । इसके विषय में जानकारी मुझे गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी के द्वारा लिखी गई किताब "तंत्र - गोपनीय रहस्यमय सिद्धियां " [जो कि हिंद पॉकेट बुक्स से वर्ष 1987 में प्रकाशित की गई थी] से प्राप्त हुई थी । इस कथानक में उसका वर्णन मैंने उसी ग्रंथ के आधार पर किया है । कथानक की रोचकता को बढ़ाने के लिए उसमें कुछ काल्पनिक घटनाएं भी जोड़ी है ।

[ii] पुष्पदेहा के विषय में जानकारी के लिए आप मेरी पूर्व रचना अघोराणंद की अप्सरा पढ़ सकते हैं